

माता कुनाल पत्थरी

आस्था, दिव्य जल
और पावन परंपरा का अद्भुत धाम

मंदिर के चमत्कारों और भक्ति की अनकही कहानियां

डॉ. विजेंद्र चंदेल



BlueRose ONE^{.com}
S t o r i e s M a t t e r
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Dr.Vijender Chandel 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



BlueRose ONE
Stories Matter
New Delhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69726-37-5

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: June 2026

मंदिर के चमत्कारों और भक्ति की अनकही कहानियां

डॉ. विजेंद्र चंदेल

भगवान शिव ने कहा कि निःसंदेह यह पूर्ण सत्य है - इस संसार में माँ दुर्गा के समान शक्तिशाली, सबका कल्याण करने वाला, दयावान तथा करूणावान न कोई है और न कोई होगा।

भगवान शिव द्वारा कही गई यह उक्ति माँ दुर्गा की महिमा और उनके अद्वितीय स्वरूप को दर्शाती है। यह पूर्ण सत्य है कि माँ दुर्गा इस संसार में सर्वशक्तिमान, कल्याणकारी, दयालु और करुणामयी हैं। उनकी शक्ति, करुणा और ममता का कोई समकक्ष नहीं है, और न ही भविष्य में होगा। यह कथन माँ दुर्गा के प्रति श्रद्धा और भक्ति को और गहरा करता है, जो समस्त सृष्टि की रक्षा और पालन करने वाली हैं।

मेरी किताब "माता कुनाल पत्थरी

आस्था, दिव्य जल और पावन परंपरा का अद्भुत धाम": *"प्रकृति, आध्यात्मिकता, इतिहास और हिमाचल की लोक संस्कृति"* का "माता कुनाल पत्थरी: शक्तिपीठ की अनकही कहानी" एक समृद्ध और बहुआयामी कथानक का संकेत देता है। यह किताब हिमाचल प्रदेश के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक वैभव को एक साथ जोड़ती प्रतीत होती है, जो माता कुनाल पत्थरी के पवित्र स्थल के इर्द-गिर्द केंद्रित है। मैंने हर विषय पर पूरा प्रकाश डालने का प्रयास किया है। किताब के कुछ खास पहलुओं, जैसे अध्यायों, थीम्स या उद्देश्य, के बारे में विस्तार से लिखा गया है।

माता कुनाल पत्थरी हिमाचल प्रदेश के एक पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में जानी जाती है, जो संभवतः शक्ति पीठों या स्थानीय देवी मंदिरों से जुड़ा हो सकता है। हिमाचल, जिसे "देवभूमि" कहा जाता है, अपने असंख्य मंदिरों और आध्यात्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है, जैसे कि नयना देवी, चिंतपूर्णी, ज्वालामुखी, और ब्रजेश्वरी देवी। माता कुनाल पत्थरी का मंदिर भी इसी परंपरा का हिस्सा हो सकता है, जो स्थानीय लोगों के लिए आस्था का केंद्र और पर्यटकों के लिए आकर्षण का विषय हो। यह स्थान प्रकृति की गोद में बसा होने के साथ-साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखता होगा।

किताब के प्रमुख थीम्स पर विचार

यह किताब निम्नलिखित थीम्स को समेटती है:

1. प्रकृति:

- हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता, हिमालय की विशाल चोटियाँ, घने जंगल, और पवित्र जल इस किताब का एक अभिन्न हिस्सा हैं। माता कुनाल पत्थरी का मंदिर संभवतः एक प्राकृतिक स्थल, जैसे पहाड़ी पर स्थित है, जो प्रकृति और आध्यात्मिकता के बीच गहरा संबंध दर्शाता है।

- किताब में हिमालय की पारिस्थितिकी, जैव-विविधता, और पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों पर कुछ चर्चा हुई है।

2. आध्यात्मिकता:

- माता कुनाल पत्थरी का मंदिर शक्ति उपासना की परंपरा से जुड़ा है। हिमाचल में कई शक्ति पीठ, जैसे ब्रजेश्वरी देवी (कांगड़ा) और नयना देवी (बिलासपुर), माता सती के अंगों से जुड़े हैं, वैसे ही यह मंदिर भी माता सती के अंगों से सम्बंध रखता है।
- किताब में मंदिर की पौराणिक कथाएँ, जैसे माता सती की कहानी या स्थानीय देवी की उत्पत्ति, शामिल है। साथ ही, यह तीर्थ स्थल तपस्वियों, साधकों, और भक्तों के लिए आध्यात्मिक जागृति का केंद्र है, जैसा कि हिमालय के अन्य स्थानों में देखा जाता है।
- ध्यान, योग, और हिमालय की आध्यात्मिक साधनाओं पर भी विचार व्यक्त है, क्योंकि हिमालय को प्राचीन काल से तपस्वियों की भूमि माना जाता है।

3. इतिहास:

- किताब में माता कुनाल पत्थरी मंदिर के ऐतिहासिक महत्व, इसके निर्माण, और स्थानीय लोगों की कहानियाँ शामिल हैं। हिमाचल के इतिहास में कांगड़ा, चंबा, और कुल्लू जैसे रियासतों का महत्व रहा है, और यह मंदिर स्थानीय ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा है।
- उदाहरण के लिए, ब्रजेश्वरी मंदिर का पांडवों और महाराजा रणजीत सिंह से संबंध बताया जाता है। इसी तरह, माता कुनाल पत्थरी का इतिहास भी प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक की यात्रा को दर्शाता है।

4. हिमाचल की लोक संस्कृति:

- हिमाचल की समृद्ध लोक संस्कृति, जैसे पहाड़ी नृत्य (नाटी) इस किताब का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- माता कुनाल पत्थरी के मंदिर से जुड़े स्थानीय रीति-रिवाज, उत्सव, और लोककथाएँ किताब में जीवंत उदाहरण हैं, जो भाईचारे को मजबूत करता है।
- किताब में कुछ परंपराओं और जीवनशैली का भी उल्लेख है।

संभावित प्रभाव और महत्व

- **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता:**

यह किताब माता कुनाल पत्थरी के महत्व को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उजागर कर सकती है, जिससे तीर्थयात्री और पर्यटक इस स्थल की ओर आकर्षित हों।

- **पर्यावरण संरक्षण:**

हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी पर ध्यान देते हुए, किताब पर्यावरण संरक्षण और सतत पर्यटन के लिए जागरूकता में अपना योगदान फैला सकती है।

- **सांस्कृतिक संरक्षण:**

हिमाचल की लोक संस्कृति और परंपराओं को संजोने में यह किताब एक महत्वपूर्ण योगदान दे है, खासकर युवा पीढ़ी के लिए जो अपनी जड़ों से दूर होती जा रही है।

- **शैक्षिक मूल्य:**

इतिहास, संस्कृति, और आध्यात्मिकता के छात्रों के लिए यह किताब एक मूल्यवान संसाधन है।

"माता कुनाल पत्थरी": प्रकृति, आध्यात्मिकता, इतिहास और हिमाचल की लोक संस्कृति एक ऐसी कृति प्रतीत है जो हिमाचल प्रदेश के एक पवित्र स्थल को केंद्र में रखकर प्रकृति, आस्था, और संस्कृति का सुंदर संगम प्रस्तुत करती है। यह किताब न केवल माता कुनाल पत्थरी के महत्व को उजागर करती होगी, बल्कि हिमालय की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को भी जीवंत करती है। इस किताब के प्रत्येक अंश और विशिष्ट पहलुओं को आप से साझा किया गया है, जिसमें आप गहराई से विश्लेषण या समीक्षा कर सकते हैं।

❁ *माता कुनाल पत्थरी की पवित्र शक्तिपीठ में डूब जाएं!* ❁

- माता की पिंडी और शेर का दिव्य आभास
- पवित्र कुनाल में अमृत जल जो कभी सूखता नहीं
- बाबा माधवानंद मुनि महाराज जी की तपस्या से प्रकट शिव लिंग
- माता के दिव्य दर्शन से चमत्कार और सकारात्मक ऊर्जा

❏ *यह किताब माता के भक्तों और आध्यात्मिक खोजियों के लिए एक अनमोल उपहार है!*

माता कुनाल पत्थरी मंदिर,
धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश (India)

दिनांक: 01 मई, 2026

प्रिय डॉ. विजेंद्र चंदेल,

जय माता कुनाल पत्थरी!



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आप अपनी पुस्तक के माध्यम से माता कुनाल पत्थरी की महिमा और उनके चमत्कारों को विश्व भर के भक्तों तक पहुँचाना चाहते हैं। माता कुनाल पत्थरी हमारे मंदिर और भक्तों के लिए एक divine शक्ति का प्रतीक हैं, जिनकी कृपा से असंख्य भक्तों के जीवन में सुख, शांति, और समृद्धि आई है।

माता कुनाल पत्थरी का यह पवित्र मंदिर वर्षों से भक्तों के लिए आस्था का केंद्र रहा है। यहाँ आने वाले भक्त माता के दर्शन और उनकी पूजा-अर्चना से अपने जीवन की कठिनाइयों का समाधान पाते हैं। कई भक्तों ने माता के चमत्कारों का अनुभव किया है, जैसे असाध्य रोगों से मुक्ति, आर्थिक संकटों का निवारण, और मन की शांति की प्राप्ति। मंदिर का वातावरण इतना शांत और पवित्र है कि यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति माता की उपस्थिति को अपने हृदय में अनुभव करता है।

माता कुनाल पत्थरी की कृपा से यह मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि एक ऐसी जगह है जहाँ लोग अपने दुखों को भूलकर आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आपकी पुस्तक माता की महिमा को और अधिक लोगों तक पहुँचाए और उनके आशीर्वाद को विश्व भर में फैलाए।

आप इस पत्र को अपनी पुस्तक में शामिल कर सकते हैं। माता कुनाल पत्थरी का आशीर्वाद आप पर और आपके इस पवित्र कार्य पर सदा बना रहे। सादर,

पंडित रिकू शर्मा

मुख्य पुजारी, माता कुनाल पत्थरी मंदिर

माता कुनाल पत्थरी मंदिर,

दिनांक: 01 मई, 2026



प्रिय डॉ. विजेंद्र चंदेल,

जय माता कुनाल पत्थरी!

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि आप अपनी पुस्तक के माध्यम से माता कुनाल पत्थरी की divine महिमा और उनके चमत्कारों को विश्व भर के भक्तों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। आपके इस पुस्तक में मेरे द्वारा लिखे गए कुछ अंशों को शामिल करने के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

माता कुनाल पत्थरी का यह पवित्र मंदिर भक्तों के लिए एक आध्यात्मिक आश्रय स्थल है। उनकी कृपा से असंख्य भक्तों ने अपने जीवन में चमत्कारों का अनुभव किया है, चाहे वह असाध्य रोगों से मुक्ति हो, पारिवारिक समस्याओं का समाधान हो, या मन की शांति की प्राप्ति हो। मंदिर का प्रत्येक कोना माता की divine उपस्थिति से भरा हुआ है, और यहाँ आने वाला हर भक्त उनकी शक्ति और करुणा को अनुभव करता है। मेरे द्वारा लिखे गए अंश भी माता की महिमा और उनके प्रति मेरी श्रद्धा का एक छोटा सा प्रयास हैं, जो उनकी कृपा से ही संभव हुआ।

आपकी पुस्तक माता कुनाल पत्थरी के आशीर्वाद और उनकी महिमा को और अधिक लोगों तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बनेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कार्य भक्तों के लिए प्रेरणादायक होगा और माता की divine कृपा को विश्व भर में फैलाएगा। इस पत्र को आप अपनी पुस्तक में शामिल कर सकते हैं।

माता कुनाल पत्थरी का आशीर्वाद आप पर और आपके इस पवित्र कार्य पर सदा बना रहे। सादर,

पंडित केवल कृष्ण शर्मा

निवास स्थान: कांगडा (हि. प्र.)

तहसील कार्यालय के पीछे

लेखक का भक्तों के प्रति आभार

"सबसे पहले मेरा (लेखक का) भक्तों के प्रति हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने मेरी लेखनी के माध्यम से इतना सुंदर और प्रेरणादायक संदेश लिखने के लिये मुझ में उत्साह भरा और यहाँ तक पहुँचाया। उन्होंने अपने अनुभव सांझा किये, मुझे अपना किमती समय देकर मुझ पर अहसान किया! माता की कृति न केवल हमारी आत्मा को छूती है, बल्कि हमें श्रद्धा और भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। साथ ही, उन सभी भक्तों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनका अटूट विश्वास और समर्पण इस पवित्र भावना को जीवंत रखता है। आप सभी के प्रेम, श्रद्धा और एकजुटता से ही यह आध्यात्मिक यात्रा पूरी होती है। माता कुनाल पत्थरी की कृपा हम सब पर बनी रहे, और हम सभी उनके चरणों में स्थान पाने के योग्य बनें।"

हे माता के भक्तगण, तुम्हारा स्नेह अपार।

तुम्हारी श्रद्धा से ही, यह ग्रंथ बना संसार।

हर प्रेरणा, हर विश्वास, तुमने जो मुझमें भरा।

कलम मेरी चली सतत, तुम्हारे बल से सारा।

हृदय से धन्यवाद मेरा, तुम सबके प्यार को।

माता की कृपा संग तुम, मेरे जीवन के आधार हो।

पुजारियों के लिये आभार पत्र

प्रिय माता कुनाल पत्थरी के पुजारीगण,

मैं अपनी पुस्तक के लिए आपके द्वारा प्रदान की गई अमूल्य जानकारी और समर्थन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी विशेषज्ञता और सहयोग के बिना यह पुस्तक अपने वर्तमान स्वरूप में संभव नहीं हो पाती। आपका योगदान न केवल मेरे कार्य को समृद्ध करता है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को और अधिक लोगों तक पहुँचाने में भी सहायक है।

आपके द्वारा साझा किए गए ज्ञान और अनुभवों ने मेरी पुस्तक को गहराई और प्रामाणिकता प्रदान की है। इसके लिए मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। कृपया मेरी ओर से माता कुनाल पत्थरी के प्रति मेरी श्रद्धा और सम्मान स्वीकार करें।

पुनः आपके सहयोग और उदारता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सादर

डॉ. विजेंद्र चंदेल

माता-पिता के प्रति आभार

प्रिय माता-पिता,

आप भले ही आज मेरे साथ शारीरिक रूप से न हों, लेकिन आपके प्रेम, मार्गदर्शन और आशीर्वाद की छाप मेरे हृदय और मेरे इस कार्य में सदा बनी रहेगी। इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा और शक्ति मुझे आपके द्वारा सिखाए गए मूल्यों और आपके अटूट समर्थन से मिली। आपकी शिक्षाएँ, आपका धैर्य और आपके बलिदान मेरे जीवन का आधार रहे हैं, और यह पुस्तक उसी नींव पर खड़ी है।

आपके बिना यह उपलब्धि संभव नहीं थी। मैं यह पुस्तक आपकी पवित्र स्मृति को समर्पित करता हूँ, और हर पल आपको याद करता हूँ। आप जहाँ भी हों, मुझे विश्वास है कि आप मेरे साथ हैं, और मैं आपके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता और प्रेम व्यक्त करता हूँ।

सदा आपका,

डॉ. विजेंद्र चंदेल

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना	2
"एक पत्थर की परात, जो कभी खाली नहीं होती-----	2
अध्याय 1 माता कुनाल पत्थरी का इतिहास	18
1.1 मंदिर का पौराणिक इतिहास:	20
1.2 माता कुनाल पत्थरी का पौराणिक महत्व:	24
1.3 माता कुनाल पत्थरी के ऐतिहासिक साक्ष्य और शोध	25
1.4 कुनाल पत्थरी मंदिर की उत्पत्ति/प्रकट की कथाएँ	30
1.5 माता कुनाल पत्थरी का ऐतिहासिक विकास	32
1.6 मंदिर का कैसे हुआ निर्माण	33
1.7 मंदिर की स्थापना और ऐतिहासिक विकास :	41
1.8 शिव मंदिर की कहानी:	48
अध्याय 2 भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक सौंदर्य	55
2.1 भौगोलिक स्थिति	55
2.2 माता के दरवार में कैसे पहुंचा जाये	56
2.3 यात्रा के लिए सुझाव	59
2.4 प्राकृतिक सौंदर्य:	62
2.5 प्रकृति और आध्यात्मिकता का मेल:	65
2.6 मंदिर का पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण	66
अध्याय 3 भक्ति (स्थानिय परम्पराये और जातर)	70
3.1 क्षेत्रीय संस्कृति मे माता कुनाल पत्थरी का स्थान:	70

सकोह की कुलदेवी	70
3.2 कुछ प्राचीन कहानियाँ का भक्ति से जुड़ाव:.....	76
3.3 धर्मशाला के लोगों का मंदिर से जुड़ाव	83
3.4 माता कुनाल पत्थरी की पूजा की प्रक्रिया.....	86
3.5 चुन्नी बांधने की परम्परा:.....	97
3.6 नवरात्रो में मंदिर में विशेष आयोजन और माहौल:.....	99
3.7 परंपराएँ और रीति-रिवाज	101
3.8 माता कुनाल पत्थरी मंदिर की विशेषताएँ:	107
अध्याय 4 मंदिर से जुड़े चमत्कार.....	110
4.1 भक्तों के अनुभव की कहानियाँ और चमत्कार.....	112
4.2 धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व	124
4.3 पहली बार मंदिर में आये एक भक्त से मेरा संवाद:.....	128
माता कुनाल पत्थरी मंदिर: एक भक्त का पहला अनुभव:.....	129
4.4 मेरी बातचीत का वीडियो बनाना.....	133
अध्याय 5 आधुनिक परिप्रेक्ष्य.....	137
5.1 प्राकृतिक और स्थानीय योगदान	153
5.2 आधुनिक परिप्रेक्ष्य की भी बात.....	159
5.3 मंदिर के रखरखाव और इसके प्रचार-प्रसार में सरकार या समुदाय की भूमिका.....	163
5.4 युवा पीढ़ी को माता की भक्ति से कैसे जोड़ा जा सकता है:.....	165
5.5 यात्रियों की नजर से:.....	168
5.6 माता के मूल्य (जैसे करुणा, शक्ति, विश्वास) आज के समय में कैसे लागू हो सकते हैं।.....	170
5.7 मंदिर के संरक्षण और इसके वैश्विक पहचान के लिए सुझाव.....	176

अध्याय 6 "निष्कर्ष: माता कुनाल पत्थरी का वैभव"	180
6.1 माता की भक्ति कैसे को अपने जीवन में अपनाएँ.....	180
6.2 स्थानीय परिदृश्य (जैसे गाँव, पहाड़, या बागान) का उल्लेख	183
6.3 माता की पूजा: वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण.....	184
6.4 माता की पूजा: आध्यात्मिक और भावनात्मक जुड़ाव.....	188
6.5 माता कुनाल पत्थरी का भक्तों प्रति एक अंतिम संदेश.....	193



प्रस्तावना

"एक पत्थर की परात, जो कभी खाली नहीं होती-----

-----यह माता कुनाल पत्थरी का रहस्य है।"

मंदिर के आसपास जंगल का सन्नाटा भी कमाल का है। चीड़ और देवदार के पेड़ों की फुसफुसाहट और बीच-बीच में चिड़ियों की चहचहाहट एक अलग ही संगीत रचती है। पीपल का वह पुराना पेड़, जिस पर लाल धागे लटकते हैं, हवा में हिलते हुए ऐसा लगता है जैसे माता की मौजूदगी को सलाम कर रहा हो। एक बार मैंने देखा, एक गिलहरी मंदिर के आंगन में बैठकर कुछ खा रही थी। पास खड़े एक बच्चे ने कहा, "ये माता का मेहमान है।" यह मासूमियत प्रकृति और आस्था के उस रिश्ते को दिखाती है जो यहां हर कोने में बस्ता है। चाय बागानों के मजदूर भी मंदिर को अपना मानते हैं। वे दिनभर काम करने के बाद शाम को यहां आते हैं, थकान मिटाने और माता से अगले दिन की ताकत मांगने।

मैं अपना अनुभव आप को सुनाता हूँ एक बार जब मैं मंदिर पैदल आ रहा था, रास्ते में हवा में उपस्थित चाय की पत्तियों की हल्की सुगंध घुली थी। दूर धौलाधार की बर्फीली चोटियां माता के मुकुट-सी नजर आईं। मंदिर पहुंच कर भीतर मां कपालेश्वरी की पिंडी के सामने खड़े होते ही एक अजीब-सी शांति ने मन को छू लिया। वहां मौजूद एक बूढ़ी अम्मा ने बताया, "यहां जो मांगो, माता सुनती हैं। मेरी भी माता ने प्रार्थना सुनी और मुझे आशीर्वाद दिया।" उनकी आंखों में चमक और हाथ में लाल चुन्नी थी, जो पास ही दीवार पर बंधने वाली थी।

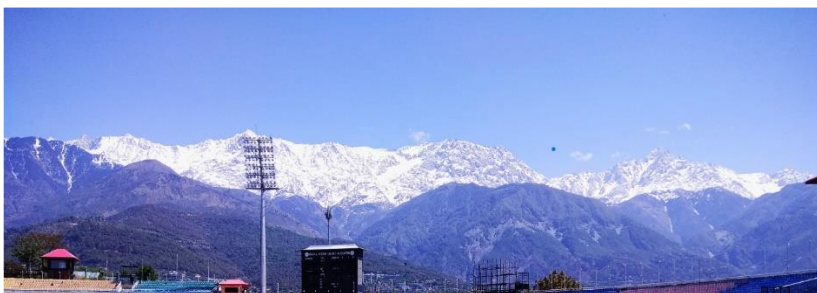
माता कुनाल पत्थरी मंदिर हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के निकट, धौलाधार पर्व माता कुनाल पत्थरी की किंवदंती हिंदू पौराणिक कथाओं

से जुड़ी है और यह हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में स्थित मां कुनाल पत्थरी मंदिर से संबंधित है, जो मां के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है।

इस मंदिर में माता के कपाल के ऊपर एक बड़ा पत्थर है, जिसे "कुनाल" कहा जाता है। इस पत्थर का एक रहस्य यह है कि यह हमेशा पानी से भरा रहता है, और भक्तों का विश्वास है कि यह पानी माता की कृपा से कभी नहीं सूखता। जब भी पानी कम होने लगता है, बारिश हो जाती है और यह फिर से भर जाता है। भक्त इस पानी को प्रसाद के रूप में ले जाते हैं, मान्यता है कि यह रोगों को दूर करता है।

यह किंवदंती माता कुनाल पत्थरी के चमत्कार और उनकी शक्ति को दर्शाती है, जिसके कारण यह स्थान भक्तों के लिए अत्यंत पवित्र और श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है।

यहाँ का शांत वातावरण और चाय के बागानों से घिरा परिवेश माता के दर्शन को और भी दिव्य बनाता है।



"धौलाधार की चोटियां माता के मुकुट-सी खड़ी हैं।"

अति सुंदर धौलाधार की बर्फीली चोटियां मंदिर को एक प्राकृतिक मुकुट पहनाती हुई दिखती हैं, और मन को मोह लेती हैं।

धौलाधार की बर्फीली चोटियों और हरे-भरे चाय बागानों के बीच बसा **माता कुनाल पत्थरी मंदिर** हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला से मात्र 3

किलोमीटर दूर एक ऐसा स्थान है, जो न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य का भी अनूठा मिश्रण है। यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहां माता सती का कपाल गिरा था, जिसके कारण इसे **मां कपालेश्वरी** के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन यह सिर्फ एक मंदिर नहीं—यह एक ऐसी जगह है जहां प्रकृति, इतिहास, और संस्कृति एक साथ सांस लेते हैं। यह यात्रा वृतांत आपको माता कुनाल पत्थरी की कहानी को एक धार्मिक स्थल के साथ-साथ एक यात्रा गंतव्य और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पेश करता है।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर में मुख्य रूप से माता की पिंडी और वहां की पवित्र परात (कुनाल) की पूजा होती है

धर्मशाला से कुनाल पत्थरी तक

धर्मशाला, जो अपने शांत माहौल और तिब्बती संस्कृति के लिए जाना जाता है, कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा का प्रवेश द्वार है। सुबह की ठंडी हवा और चाय बागानों की हरियाली के बीच टैक्सी या निजी वाहन से या पैदल भी मंदिर तक का रास्ता अपने आप में एक अनुभव है। रास्ते में आपको कांगड़ा घाटी की खूबसूरती दिखेगी—दूर धौलाधार की बर्फोली चोटियां चांदी की तरह चमकती हैं, और नीचे चाय के बागान हरे कालीन की तरह बिछे हैं।

मंदिर तक पहुंचने के लिए आपको धर्मशाला के व्यस्त बाजारों से निकलकर एक शांत, संकरी सड़क पर जाना होगा। यह रास्ता आपको शहर की हलचल से दूर ले जाता है और प्रकृति के करीब लाता है। अगर आप पैदल चलना पसंद करते हैं, तो यह छोटी-सी ट्रेकिंग भी हो सकती है, जहां रास्ते में स्थानीय लोग, छोटी चाय की दुकानें, और पक्षियों की चहचहाहट आपका साथ देती हैं। स्थानीय लोग आपको "जय माता दी" कहकर स्वागत करते हैं, और उनकी कांगड़ी बोली की मिठास आपको तुरंत अपनी ओर खींच लेती है। जैसे, "किहाँ हन जी?" (आप कैसे हैं?) या "चलो, तुसा भी मंदिर च पौहंची गे हन" (चलो,

आप भी मंदिर पहुंचे हैं) जैसे वाक्य आपको स्थानीय संस्कृति से जोड़ते हैं।

हिमाचल की लोक संस्कृति: कांगड़ा का रंग

कुनाल पत्थरी मंदिर के आसपास की संस्कृति हिमाचल के गद्दी और कांगड़ी समुदायों की जीवंतता को दर्शाती है। यहां की लोक संस्कृति को निम्नलिखित पहलुओं के माध्यम से बेहतर समझा जा सकता है:

1. कांगड़ी बोली: आत्मा की भाषा

कांगड़ी बोली कुनाल पत्थरी और कांगड़ा क्षेत्र की आत्मा है। यह पंजाबी और पहाड़ी बोलियों का मिश्रण है, जो अपनी मिठास और सादगी के लिए जानी जाती है। कुछ आम कांगड़ी शब्द और वाक्य जो आप मंदिर की यात्रा में सुन सकते हैं:

- "माता अप्पू सद दी": माता अपने आप बुलाती है।
- "किहाँ करी चलया?": माता दी मेहर ऐ: सब कुछ ठीक है?
- "माता ने तुसा जो सद या हे, आशीर्वाद लैई लया": माता का आशीर्वाद ले लो। मंदिर के पुजारी और स्थानीय लोग अक्सर कांगड़ी में बात करते हैं, और उनकी बातों में आपको हिमाचल की गर्मजोशी और आतिथ्य का अहसास होगा।

2. स्थानीय खानपान: स्वाद में संस्कृति

कुनाल पत्थरी के आसपास का खानपान हिमाचल की देहाती और पौष्टिक खाद्य परंपराओं को दर्शाता है। मंदिर के पास छोटी-छोटी दुकानों पर आपको ये व्यंजन जरूर आजमाने चाहिए:

- **सिङ्गु :**

गेहूं के आटे से बना एक भाप में पकाया गया व्यंजन, जिसे घी और चटनी के साथ परोसा जाता है। इसे "माता का प्रसाद" मानकर भक्तों के बीच बांटा जाता है। सिङ्गु की बनावट नरम और स्वाद ऐसा होता है कि आप इसे बार-बार खाना चाहेंगे।

- **बभरू:**

एक तरह का कचौड़ी जैसा व्यंजन, जिसे दाल या आलू की स्टफिंग के साथ तेल में तला जाता है। मंदिर के पास की दुकानों पर गरमागरम बभरू और चाय का कॉम्बिनेशन यात्रियों का पसंदीदा है।

- **खट्टा:**

कांगड़ा का मशहूर खट्टा, जो इमली या आमचूर से बनाया जाता है, हर थाली को खास बनाता है। इसे स्थानीय लोग "खट्टू" भी कहते हैं।

- **मदरा:**

राजमा और दही से बनी एक गाढ़ी करी, जो चावल के साथ परोसी जाती है। नवरात्रि के दौरान कई भक्त इसे प्रसाद के रूप में बनाते हैं। इन व्यंजनों को खाते समय स्थानीय लोग अक्सर कहते हैं, "पेट भी भरी गया कनै मन भी भरी गया!" (पेट भरा, मन भी भरा!), जो उनकी संतुष्टि और आतिथ्य को दर्शाता है।

3. पारंपरिक वेशभूषा: कांगड़ा का गौरव

कुनाल पत्थरी के आसपास के गद्दी और कांगड़ी समुदायों की वेशभूषा हिमाचल की समृद्ध हस्तकला को उजागर करती है। खासकर त्योहारों

और नवरात्रि के दौरान आप इन पारंपरिक परिधानों को देख सकते हैं:

- **महिलाएं:**

महिलाएं अक्सर **चंबा घागरा** और **कुर्ती** पहनती हैं, जो रंग-बिरंगे धागों और कढ़ाई से सजा होता है। सिर पर **धट्टू** (रंगीन दुपट्टा) लपेटा जाता है, जिसके किनारों पर चांदी के गहने टंगे होते हैं। नवरात्रि में कई महिलाएं "पट्टू" (ऊनी शॉल) भी ओढ़ती हैं, जो ठंड से बचाने के साथ-साथ सुंदरता भी बढ़ाता है।

- **पुरुष:**

पुरुष **कांगड़ी कुर्ता-पायजामा** और **टोपी** पहनते हैं। गद्दी समुदाय के पुरुष अक्सर **चोला** (लंबा कोट) और **डोरू** (ऊनी कमरबंद) पहनते हैं, जो पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों के लिए उपयुक्त है। मंदिर के मेले में आपको स्थानीय नृत्य जैसे **झमाकड़ा** और **नाटी** में लोग इन रंग-बिरंगी वेशभूषाओं में थिरकते दिखेंगे, जो संस्कृति का जीवंत प्रदर्शन होता है।

4. लोक नृत्य और संगीत

कुनाल पथरी के आसपास नवरात्रि और अन्य उत्सवों में **नाटी** और **झमाकड़ा** जैसे लोक नृत्य देखने को मिलते हैं। ढोल और नगाड़ों की थाप पर गद्दी समुदाय के लोग समूह में नृत्य करते हैं, और उनके गीतों में माता की भक्ति के साथ-साथ पहाड़ी जीवन की कहानियां भी होती हैं। एक लोकप्रिय कांगड़ी भजन है:

"माता जी दी जय, धौलाधार दी रानी,

सारे दुख हरे, कपालेश्वरी माई।" यह संगीत और नृत्य स्थानीय संस्कृति को जीवंत बनाता है और यात्रियों को भी इसमें शामिल होने का मौका देता है।

धार्मिक महत्व: माता कुनाल पथरी की कथा

माता कुनाल पथरी मंदिर की धार्मिक मान्यता इसे 51 शक्तिपीठों में एक विशेष स्थान देती है। पौराणिक कथा के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अपमानित होकर आत्मदाह किया, तो भगवान शिव उनके शरीर को लेकर ब्रह्मांड में भटकने लगे। भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता के शरीर को खंडित किया, और जहां-जहां उनके अंग गिरे, वहां शक्तिपीठ स्थापित हुए। कुनाल पथरी में माता का कपाल गिरा, जिसके कारण यह मंदिर मां कपालेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मंदिर में एक विशाल पत्थर है, जिसे माता के कपाल का प्रतीक माना जाता है। इसमें पानी हमेशा रहता है, जिसे भक्त प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। स्थानीय लोग मानते हैं कि यह पानी औषधीय गुणों से युक्त है और कई रोगों, जैसे पथरी और कैंसर, को ठीक करने में सहायक है। भक्त परात के पानी को बोतल में भरते हैं और उसे अपने घर ले जाते हैं। मान्यता है कि यह पानी औषधि की तरह काम करता है। कुछ लोग इसे रोज सुबह खाली पेट पीते हैं, तो कुछ इसे बीमार परिजनों को देते हैं। मेरे एक पड़ोसी ने बताया कि वह इस जल को अपने घर के मंदिर में रखते हैं, ताकि माता की कृपा हमेशा बनी रहे।

नवरात्रि के दौरान मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है, और यज्ञ, कीर्तन, और पूजा-अर्चना से माहौल भक्तिमय हो जाता है। लेकिन इस मंदिर की खासियत यह है कि यह केवल धार्मिक स्थल तक सीमित नहीं है। यहां की शांति और प्राकृतिक सौंदर्य इसे एक आध्यात्मिक रिट्रीट की तरह बनाते हैं, जहां आप खुद को प्रकृति और ईश्वर दोनों के करीब पाते हैं।

इतिहास का झरोखा: कुनाल पत्थरी का अतीत

कुनाल पत्थरी मंदिर का इतिहास उतना ही रोचक है जितना इसका धार्मिक महत्व। हालांकि मंदिर की स्थापना के सटीक समय के बारे में कोई लिखित प्रमाण नहीं है, स्थानीय किवंदतियां इसे प्राचीन काल से जोड़ती हैं। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि यह क्षेत्र कांगड़ा साम्राज्य का हिस्सा था, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के लिए जाना जाता था। मंदिर के आसपास के चाय बागान 19वीं सदी में अंग्रेजों द्वारा शुरू किए गए थे, जो इस क्षेत्र को एक आर्थिक और पर्यटन केंद्र बनाने में मददगार साबित हुए।

मंदिर का नाम "कुनाल पत्थरी" भी अपने आप में एक रहस्य है। "कुनाल" शब्द का अर्थ स्थानीय भाषा में गोल या गोलाकार हो सकता है, जो शायद उस पत्थर की आकृति को दर्शाता है जो माता के कपाल का प्रतीक है। समय के साथ यह मंदिर स्थानीय लोगों के लिए आस्था का केंद्र बन गया, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर इसे उतनी पहचान नहीं मिली, जितनी अन्य शक्तिपीठों को। यह इसे और भी खास बनाता है—यहां आपको भीड़भाड़ के बजाय एक शांत, व्यक्तिगत अनुभव मिलता है।

संस्कृति का रंग: स्थानीय जीवन और परंपराएं

कुनाल पत्थरी मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि कांगड़ा की जीवंत संस्कृति का भी प्रतीक है। मंदिर के आसपास रहने वाले लोग मुख्य रूप से गद्दी समुदाय से हैं, जो अपनी अनूठी परंपराओं और आतिथ्य के लिए जाने जाते हैं। नवरात्रि के दौरान यहां ढोल-नगाड़ों के साथ भक्ति नृत्य और गीतों का आयोजन होता है, जिसमें स्थानीय लोग और पर्यटक दोनों शामिल होते हैं।

मंदिर के पास छोटे-छोटे स्टॉल्स पर आपको स्थानीय हस्तशिल्प, जैसे कांगड़ा की प्रसिद्ध पेंटिंग्स और ऊनी शॉल्स, मिल सकते हैं। अगर

आप स्थानीय खाने के शौकीन हैं, तो पास की चाय की दुकानों पर गरम-गरम सिद्धू (स्थानीय ब्रेड) और चाय का स्वाद लेना न भूलें। यह छोटी-छोटी चीजें कुनाल पथरी की यात्रा को एक सांस्कृतिक अनुभव बनाती है।

कहा जाता है कि कई सौ साल पहले, एक छोटे से गाँव में **माता कुनाल पथरी ने अपनी दिव्य शक्ति का प्रकटीकरण** किया था

स्थानीय लोककथाएं इस मंदिर की उत्पत्ति को और रोचक बनाती हैं। एक किवंदती के अनुसार, कई सौ साल पहले एक चरवाहा अपनी भेड़ों को चराने जंगल में गया था। वहां उसे एक पत्थर की पिंडी दिखी, जिसके ऊपर एक परात रखी थी। हैरानी की बात यह थी कि परात में पानी टपक रहा था, जबकि आसपास कोई झरना या नदी नहीं थी। उसने गांव वालों को यह बात बताई। जब लोग वहां पहुंचे, तो उन्हें लगा कि यह कोई साधारण जगह नहीं है। रात को एक गांव वाले को सपने में माता ने दर्शन दिए और कहा, "मैं यहां तुम्हारी रक्षा के लिए हूँ।" इसके बाद उस पिंडी की पूजा शुरू हुई, और धीरे-धीरे यह मंदिर आस्था का केंद्र बन गया। कुछ लोग कहते हैं कि यह कहानी सच है, तो कुछ इसे लोककथा का रंग मानते हैं। लेकिन सच जो भी हो, माता की वह पिंडी और पत्थर की परात आज भी भक्तों को अपनी ओर खींचती है।

क्या यह शक्तिपीठ की पौराणिकता है, या प्रकृति का कोई अनोखा खेल? क्या यह जल वाकई चमत्कारी है, या भक्ति की शक्ति का प्रतीक? इन सवालों का जवाब शायद माता के उस आलोक में छिपा है, जो हर भक्त को अपनी ओर बुलाता है। यह मंदिर सिर्फ पत्थर और जल की कहानी नहीं, बल्कि आस्था की एक ऐसी धारा है जो पहाड़ों की तरह अटल है।

माता कुनाल पत्थरी पर किताब लिखने की प्रेरणा

माता कुनाल पत्थरी, जिनकी कृपा और चमत्कार अनगिनत भक्तों के जीवन को रोशन करते हैं, मेरे लिए केवल एक आध्यात्मिक शक्ति नहीं, बल्कि एक प्रेरणा स्रोत हैं। माता पर किताब लिखने का विचार मेरे मन में तब आया, जब मैंने उनकी कृपा और भक्ति के प्रभाव को अपने जीवन में और अन्य भक्तों के जीवन में गहराई से अनुभव किया। यह किताब लिखने की प्रेरणा मेरे हृदय में माता के प्रति अगाध श्रद्धा, उनके चमत्कारों के प्रति विश्वास, और उनकी महिमा को विश्व तक पहुँचाने की इच्छा से उत्पन्न हुई।

प्रेरणा का स्रोत

माता कुनाल पत्थरी पर किताब लिखने की प्रेरणा मुझे कई स्तरों पर प्राप्त हुई, जो निम्नलिखित हैं:

1. व्यक्तिगत अनुभव

माता कुनाल पत्थरी के मंदिर में वे सभी दिन, जब मैं और मेरी पत्नी समस्याओं के समाधान के लिये माता के दरवार गये, वे मेरे जीवन के एक अविस्मरणीय क्षण हैं। मेरे जीवन में एक ऐसा समय आया जब मैं कठिनाइयों और चुनौतियों से घिरा हुआ था। उस समय माता कुनाल पत्थरी की कृपा ने मुझे एक नया मार्ग दिखाया। चाहे वह किसी संकट से उबरना हो या मन की शांति प्राप्त करना, माता की भक्ति ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। एक विशेष घटना, जब मैंने माता के मंदिर में प्रार्थना की और मेरी मनोकामना पूर्ण हुई, यह अनुभव मेरे लिए एक आध्यात्मिक जागृति था, जिसने मुझे माता की महिमा को विश्व तक पहुँचाने के लिए प्रेरित किया। माता की महिमा को और लोगों तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। यह अनुभव मेरे लिए एक टर्निंग पॉइंट था, जिसने मुझे किताब लिखने के लिए प्रेरित किया। यह किताब मेरी भक्ति, मेरे विश्वास, और माता की कृपा का एक प्रतीक होगी। मुझे विश्वास है कि माता की कृपा से यह किताब भक्तों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगी और उनकी

आस्था को और मजबूत करेगी। यह किताब दोनो भाशाओ में हिंदी और अंग्रेजी में लिखी गई है।

2. भक्तों की कहानियाँ

माता कुनाल पत्थरी के मंदिर में या उनके भक्तों के बीच समय बिताने के दौरान, मैंने कई ऐसी कहानियाँ सुनीं, जिनमें माता ने भक्तों के जीवन में चमत्कार किए। ये कहानियाँ, चाहे वे किसी गंभीर बीमारी से ठीक होने की हों, आर्थिक संकट से उबरने की हों, या पारिवारिक सुख-शांति की प्राप्ति की हों, मेरे लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत बनीं। मैंने महसूस किया कि इन कहानियों को एकत्रित कर एक किताब के रूप में प्रस्तुत करना माता की महिमा को और अधिक लोगों तक पहुँचाने का एक प्रभावी तरीका होगा।

3. आध्यात्मिक जिम्मेदारी

माता कुनाल पत्थरी के प्रति मेरी भक्ति ने मुझे यह एहसास दिलाया कि उनकी कृपा को केवल अपने तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है। एक भक्त के रूप में, यह मेरा दायित्व है कि मैं उनकी महिमा, उनके चमत्कारों, और उनकी शिक्षाओं को विश्व के सामने लाऊँ। किताब लिखना मेरे लिए इस आध्यात्मिक जिम्मेदारी को निभाने का एक माध्यम बन गया। यह किताब न केवल माता के भक्तों के लिए, बल्कि उन सभी के लिए होगी जो आध्यात्मिक मार्ग की खोज में हैं।

4. सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का संरक्षण

माता कुनाल पत्थरी से जुड़ी परंपराएँ और कथाएँ हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। मुझे यह चिंता थी कि समय के साथ ये कथाएँ और परंपराएँ कहीं लुप्त न हो जाएँ। इस किताब के माध्यम से मैं माता की कहानियों, उनके मंदिर, और उनसे जुड़े रीति-रिवाजों को संरक्षित करना चाहता हूँ, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी माता की महिमा से परिचित हो सकें।

5. वैश्विक प्रचार

आज के डिजिटल युग में, जब जानकारी विश्व भर में आसानी से पहुँच सकती है, मुझे यह प्रेरणा मिली कि माता कुनाल पत्थरी की भक्ति को न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी फैलाया जाए। यह किताब हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी लिखी जायेगी, ताकि भारत के बाहर रहने वाले लोग भी माता की कृपा और चमत्कारों से परिचित हो सकें। यह विचार मेरे लिए एक प्रेरक शक्ति बना।

प्रेरणा का प्रभाव

माता कुनाल पत्थरी पर किताब लिखने की प्रेरणा ने मेरे जीवन को एक नया उद्देश्य दिया। यह किताब केवल एक लेखन कार्य नहीं है, बल्कि मेरे लिए एक तपस्या है, जिसके माध्यम से मैं माता के प्रति अपनी भक्ति और कृतज्ञता व्यक्त कर रहा हूँ। इस प्रक्रिया में, मैंने न केवल माता के बारे में अधिक जाना, बल्कि अपनी आध्यात्मिक यात्रा को भी गहरा किया।

माता कुनाल पत्थरी पर किताब लिखने की प्रेरणा मेरे व्यक्तिगत अनुभवों, भक्तों की कहानियों, और माता की कृपा के प्रति मेरे विश्वास से उत्पन्न हुई। यह किताब माता की महिमा को विश्व तक पहुँचाने, उनकी भक्ति को बढ़ावा देने, और उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का एक प्रयास है। मुझे विश्वास है कि माता की कृपा से यह किताब भक्तों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगी और उनकी आस्था को और मजबूत करेगी।

किताब का उद्देश्य

इस किताब के माध्यम से मैं निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता हूँ:

1. माता की महिमा का प्रसार:

माता कुनाल पत्थरी के चमत्कारों और उनकी कृपा को जन-जन तक पहुँचाना।

2. भक्तों के अनुभवों का संकलन:

मेरे जैसे अन्य भक्तों की कहानियों को एकत्रित करना, जो माता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण हों।

3. आध्यात्मिक प्रेरणा:

पाठकों को माता की भक्ति के मार्ग पर चलने और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करना।

4. विरासत का संरक्षण:

माता कुनाल पत्थरी से जुड़ी परंपराओं और कथाओं को संरक्षित करना, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे जुड़ सकें।

माता कुनाल पत्थरी के मंदिर में परिवार के साथ जाना, मेरे जीवन के एक अविस्मरणीय क्षण हैं। यह अनुभव मेरे लिए और मेरे परिवार के लिये एक आध्यात्मिक जागृति था, जिसने मुझे माता की महिमा को आप तक पहुँचाने के लिए प्रेरित किया। यह किताब मेरी भक्ति, मेरे विश्वास, और माता की कृपा का एक प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि माता की कृपा से यह किताब भक्तों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगी और उनकी आस्था को और मजबूत करेगी, इसी उम्मीद के साथ यह किताब लिख रहा हूँ।

अपनी दादी से भी मिली थी प्रेरणा:

मैं अपने नन्हे-मुन्ने बचपन से ही अपने प्यारे माता-पिता के साथ भव्य और पवित्र कुनाल पत्थरी मंदिर आता था। मुझे यह संस्कार अपने पूजनीय पूर्वजों से विरासत में मिले हैं। माँ की कृपा से ही आज मैं यहाँ तक पहुँच पाया हूँ और एक किताब लिख रहा हूँ। यह का माँ ही आशीर्वाद है।

मैं एक किस्सा अपनी दादी का भी लिखूँगा।

यह मेरी दादी की मन्नत का एक व्यक्तिगत और पारिवारिक इतिहास का हिस्सा है।

मेरी दादी की मन्नत और उनके विश्वास की यह बात बहुत ही भावुक और प्रेरणादायक है। 1971 का युद्ध भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जब भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष हुआ, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ। उस दौरान कई परिवारों ने अपने प्रियजनों को सेना में भेजा, और अनिश्चितता के बीच उनकी सुरक्षित वापसी की कामना की। माता कुनाल पत्थरी मंदिर में मेरी दादी द्वारा माँगी गई मन्नत उस आस्था का प्रतीक है, जो उस समय के कठिन हालात में लोगों के लिए सहारा बनी।

1971 में, जब मेरी दादी ने माता कुनाल पत्थरी से प्रार्थना की कि उनका बेटा युद्ध से सुरक्षित घर लौट आए, यह एक माँ की गहरी भावना और विश्वास का परिचय था। उस समय घर से ही माता को याद करके उन्होंने यह मन्नत माँगी। दादी ने माता को याद किया और सामने दीया जलाया और कहा, "माँ, मेरे बेटे को युद्ध से सुरक्षित वापस ला दो। मैं तेरे चरणों में चढ़ावा (चुन्नी और नारियल) चढ़ाऊँगी।" उस समय उनकी आँखों में आँसू और दिल में उम्मीद रही होगी।

क्योंकि 1971 का युद्ध बेहद जोखिम भरा था। भारतीय सेना के जवान पूर्वी और पश्चिमी मोर्चों पर लड़ रहे थे। ऐसे में हर परिवार के लिए अपने सैनिक की वापसी एक चमत्कार से कम नहीं थी।

युद्ध खत्म होने के बाद, जब उनका बेटा घर लौटा, तो उन्होंने इसे माता की कृपा माना।

दादी बोलीं, **'माता ने मेरे बेटे को जंग से बचा लिया, अब जातर का वक्त है।'** घर में खुशी का माहौल छा गया जब पिताजी 1971 के युद्ध के बाद लौटे, दादी की मनौती पूरी हुई।

जब कोई व्यक्ति जंग (युद्ध) से सुरक्षित घर लौटता है, तो यह एक बहुत बड़ा और भावनात्मक क्षण होता है। दादी ने इस खुशी और कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए "जातर" दी, जिसका मतलब है कि उन्होंने माता कुनाल पत्थरी में एक धार्मिक यात्रा या पूजा का आयोजन किया होगा। हिमाचली और पहाड़ी संस्कृति में, "जातर" अक्सर मंदिर में सामूहिक पूजा, भजन-कीर्तन

और प्रसाद वितरण के रूप में मनाया जाता है। यह एक तरह का धन्यवाद और आशीर्वाद मांगने का तरीका होता है, खासकर जब कोई बड़ी मुश्किल से बचकर आता है।

दादी ने माता से प्रार्थना की थी कि उनका बेटा युद्ध से सुरक्षित लौट आये, और जब ऐसा हुआ, तो उन्होंने अपनी मनोकामना पूरी होने पर माता को धन्यवाद देने के लिए जातर का आयोजन किया। इसमें मंदिर में जाकर माता की पिंडी पर चुन्नी और नारियल चढ़ाना, पूजा करना और परिवार-समुदाय के साथ मिलकर उत्सव मनाना शामिल होता है।

माता की कृपा:

बेटे का सुरक्षित लौट आना, दादी ने इसे माता कुनाल पत्थरी का चमत्कार माना। युद्ध जैसे संकट में माता का आशीर्वाद पाना भक्तों के लिए एक चमत्कार ही होता है, और यह कहानी मंदिर की महिमा को बढ़ाती है। भक्तों की मान्यता है कि माता संकट के समय अपने बच्चों की रक्षा करती हैं, और यह अनुभव उस विश्वास को और मजबूत करता है।



अध्याय 1

माता कुनाल पत्थरी का इतिहास

माता कुनाल पत्थरी का इतिहास हमारी संस्कृति और परंपराओं में गहराई से रचा-बसा है, जो प्राचीन काल से चली आ रही आध्यात्मिक और सामाजिक प्रथाओं को दर्शाता है। यह अध्याय उनके जीवन, प्रभाव और पत्थरी क्षेत्र से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है। माता कुनाल का महत्व न केवल धार्मिक, बल्कि सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी है। इस अध्याय में उनके योगदान और किंवदंतियों का गहन विश्लेषण किया जाएगा।

माता के प्रकट होने और पवित्र जल के चमत्कार की कहानिया

रात का सन्नाटा, केवल दूर से आती घंटियों की हल्की-सी झंकार। कुनाल पत्थरी के घने जंगलों में बसा माता रानी का प्राचीन मंदिर, जहाँ हवा भी जैसे मंत्रों का जाप करती थी। चाँद की किरणें मंदिर के शिखर पर पड़ रही थीं, और वह पवित्र पत्थर—जिसके बारे में कहा जाता था कि वह माता का जीवंत रूप है—रहस्यमयी चमक बिखेर रहा था।

"यह पत्थर बोलता है," पुजारी ने फुसफुसाते हुए कहा, उनकी आँखों में डर और श्रद्धा का मिश्रण था। "जो इसे सच्चे मन से देखता है, उसे माता का आशीर्वाद मिलता है। और जो इसे चुनौती देता है... वह कभी वापस नहीं लौटता।"

एक युवा पत्रकार, जिसने कभी चमत्कारों पर विश्वास नहीं किया, उस रात मंदिर के सामने खड़ा था। उसके हाथ में एक पुरानी डायरी थी, जिसके पन्नों में माता कुनाल पत्थरी के रहस्यों का उल्लेख था। डायरी

में लिखा था कि यह पत्थर कोई साधारण शिला नहीं, बल्कि एक शक्ति का केंद्र है—जो सदियों से भक्तों को बुलाता रहा है।

उस युवा ने जैसे ही माता की पिंडी की ओर कदम बढ़ाया, हवा में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। क्या यह केवल उसका वहम था, या वाकई माता की शक्ति उसका स्वागत कर रही थी? उस रात जो हुआ, वह न केवल उस युवा की जिंदगी बदलने वाला था, बल्कि माता कुनाल पत्थरी के रहस्य को दुनिया के सामने लाने वाला था।

यह कहानी माता कुनाल पत्थरी की महिमा, उनके चमत्कारों, और उन भक्तों की है, जिन्होंने इस पवित्र स्थल पर आस्था और सत्य की खोज की। क्या यह पत्थर वाकई शक्ति का स्रोत है? या फिर यह केवल एक प्राचीन कथा है, जो सदियों से चली आ रही है?

आइए, इस यात्रा में शामिल हों, जहाँ श्रद्धा और संशय का मिलन होता है, और माता कुनाल पत्थरी का आलौकिक प्रकाश हर रहस्य को उजागर करता है।

माता का प्रकाश आज भी चमकता है।

एक प्राचीन श्लोक में लिखा है:

“कुनाल शिला, दुर्गा माया, भक्त हृदय की सदा सहाया।”

यह कहानी माता कुनाल पत्थरी की पौराणिक महिमा की है, जहाँ हर भक्त को अपने विश्वास का सत्य मिलता है। क्या आप इस अलौकिक शक्ति को अनुभव करने के लिए तैयार हैं?

यदि तैयार हैं तो चलिये मेरे साथ उस पवित्र स्थल में जहाँ हर कोई दिव्य और आलौकिक प्रकाश में खो जाता है। आप भी करे देविय शक्ति का अनुभव.....

आओ सब से पहले पौराणिक इतिहास को जाने:-

1.1 मंदिर का पौराणिक इतिहास:

आदि शक्ति या आदि परा शक्ति या महादेवी दुर्गा को सनातन, निराकार, परब्रह्म, जो कि ब्रह्मांड से भी परे एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में माना जाता है। शाक्त सम्प्रदाय के अनुसार यह शक्ति मूल रूप में निर्गुण है, परंतु निराकार परमेश्वर जो न स्त्री है न पुरुष, को जब सृष्टि की रचना करनी होती है तो वे आदि पराशक्ति के रूप में उस इच्छा रूप में ब्रह्मांड की रचना, जनन रूप में संसार का पालन और क्रिया रूप में वह पूरे ब्रह्मांड को गति तथा बल प्रदान करते हैं।

आदि शक्ति को पराम्बा, परशक्ति या आदि पराशक्ति कह कर भी संबोधित किया जाता है।

हर संप्रदाय में आदि पराशक्ति को विभिन्न रूप में मान कर पूजा जाता है, शाक्त संप्रदाय में ये स्वयं ब्रह्म-शक्ति के रूप में पूजा जाता है जिसमें दो कुल है काली कुल और श्री कुल। कुछ अन्य शाक्त, भगवती दुर्गा को ही आदि शक्ति मानते हैं। वैष्णव संप्रदाय के अनुसार भगवती श्री महालक्ष्मी और उनके अवतार जैसे राधा, सीता, रुक्मिणी अन्य. आदि पराशक्ति है, जबकि शैव संप्रदाय माता पार्वती अथवा शाकम्भरी को ही आदि शक्ति का सगुण स्वरूप मानते हैं सिख पंत शक्ति को निर्गुण ही मानते हैं उनके अनुसार चंडी अकाल पुरुख की ऊर्जा शक्ति है।

ईशवरीय शक्ति एक तत्व है, केवल उपासको की दृष्टि -भेद से ईश्वरीय शक्ति के रूप अनेक हो जाते हैं। ब्रह्म एक है। देवी भागवत में भगवती से पूछा कि “हे माता ! जिस ब्रह्म को वेद एकम या अद्वितीयम अर्थात् ब्रह्म एक है कह कर सम्बोधित करते हैं, क्या वह आप ही हैं ? यदि आप हैं तो आप पुरुष हैं या स्त्री ?” महाशक्ति ने उजागर किया, “मैं और ब्रह्म एक ही हैं। जो वे हैं, वही मैं हूँ और जो मैं हूँ , वही वे हैं। केवल बुद्धि - भ्रम से भेद प्रतीत होता है। जब पुरुष रूप में उपासना की जाती है, तब मैं ईशवर, शिव, भगवान आदि नामों से जानी जाती

हूँ, और जब स्त्री रूप में भक्त मेरी उपासना करते हैं तो मैं ईश्वरी, दुर्गा, भगवती, कल्याणी कहलाती हूँ। इस प्रकार शिव-गौरी, कृष्ण-राधा, राम-सीता, विष्णु-लक्ष्मी मेरे ही स्वरूप हैं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर से जुड़ी विशेष कथाएँ स्थानीय लोकमान्यताओं और पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं। हालांकि इस मंदिर की कोई एक लिखित विस्तृत कथा प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है, लेकिन यह 51 शक्तिपीठों में से एक होने के कारण माता सती की कथा से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा, स्थानीय लोगों के बीच प्रचलित कुछ कथाएँ और चमत्कारों की कहानियाँ इसे विशेष बनाती हैं। यहाँ माता कुनाल पत्थरी से संबंधित एक प्रमुख पौराणिक कथा और एक लोकप्रिय स्थानीय कथा प्रस्तुत है:-

माता कुनाल पत्थरी को शक्तिपीठ मानने के पीछे की कथा माता सती और भगवान शिव से जुड़ी है।

- पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब माता सती के पिता दक्ष ने भगवान शिव का अपमान किया, तो सती ने अपने पिता के यज्ञ में स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया। इससे क्रोधित और दुखी भगवान शिव माता सती के शरीर को लेकर तांडव करने लगे।
- इस तांडव को रोकने के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को खंडित कर दिया। सती के शरीर के अंग जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ शक्तिपीठ बन गए।
- ऐसा माना जाता है कि कुनाल पत्थरी में माता सती का कपाल (सिर) गिरा था, जिसके कारण इसे "कपालेश्वरी" कहा जाता है। इसीलिए यह मंदिर शक्ति और भक्ति का प्रतीक बन गया।

शक्तिपीठ का रहस्य

माता कुनाल पत्थरी का नाम सुनते ही मन में एक सवाल उठता है—यह "कुनाल" क्या है, और "पत्थरी" क्यों? जवाब इसके पौराणिक और भौतिक स्वरूप में छिपा है। पुराणों में कहा जाता है कि जब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर को खंडित किया, तो उनके कपाल का एक हिस्सा धौलाधार की इन पहाड़ियों में गिरा। वह स्थान आज माता कपालेश्वरी के नाम से पूजा जाता है, और यही मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। लेकिन "कुनाल पत्थरी" नाम की कहानी इससे भी गहरी है।

मंदिर के गर्भगृह में माता की पिंडी के ठीक ऊपर एक पत्थर की परात है। स्थानीय लोग इसे "कुनाल" कहते हैं—एक चौड़ा, उथला पात्र, जो पहाड़ी बोली में आम है। हैरानी की बात यह है कि यह परात हमेशा पानी से भरी रहती है। बारिश हो या सूखा, उसमें जल कभी कम नहीं होता। भक्त इसे माता का चमत्कार मानते हैं। एक पुजारी ने मुझे बताया, "यह पानी माता की कृपा का प्रतीक है। जो इसे पीता है, उसके रोग दूर होते हैं।" इसीलिए "पत्थरी"—यानी पत्थर—शब्द जुड़ा, जो मंदिर की पहचान बन गया।

यह हिस्सा मंदिर के पौराणिक आधार और नाम की उत्पत्ति को रोचक ढंग से पेश करता है।

नाम की उत्पत्ति:

"कुनाल पत्थरी" नाम कैसे पड़ा, इसकी व्याख्या करते हैं:

"कुनाल पत्थरी" नाम का उद्गम पौराणिक कथाओं और स्थानीय मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। इस नाम के दो मुख्य भाग हैं: "कुनाल" और "पत्थरी", जिनका अर्थ अलग-अलग संदर्भों में समझा जा सकता है।

1. "कुनाल" का अर्थ:

- "कुनाल" शब्द को आमतौर पर "कपाल" (खोपड़ी या सिर) से जोड़ा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, यह मंदिर उन 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ माता सती का कपाल (सिर का हिस्सा) गिरा था। समय के साथ "कपाल" शब्द स्थानीय बोली और उच्चारण में बदलकर "कुनाल" हो गया हो सकता है।
- कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि "कुनाल" का संबंध संस्कृत शब्द "कुंडल" (कान की बाली) से हो सकता है, क्योंकि कुछ कथाओं में माता सती के शरीर के अन्य अंगों का भी उल्लेख मिलता है। हालांकि, कपाल वाली व्याख्या अधिक प्रचलित है।

2. "पत्थरी" का अर्थ:

- "पत्थरी" शब्द का सीधा अर्थ है "पत्थर" या "चट्टान"। मंदिर में एक प्राकृतिक चट्टान है, जो हमेशा नम रहती है और जिसे माता का प्रतीक माना जाता है। इस चट्टान की मौजूदगी के कारण इस स्थान को "पत्थरी" कहा गया। यह चट्टान मंदिर की पहचान और चमत्कार का मुख्य आधार है।

नामकरण की कहानी

स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, जब माता सती का कपाल यहाँ गिरा, तो उस स्थान पर एक चट्टान प्रकट हुई, जो माता की शक्ति का प्रतीक बनी। इस चट्टान के साथ "कपाल" (कुनाल) शब्द जुड़ा, और इस तरह "कुनाल पत्थरी" नाम पड़ा। यह नाम समय के साथ स्थानीय लोगों की आस्था और बोली में ढल गया। कुछ लोग इसे "कपाली पत्थरी" भी कहते हैं, लेकिन "कुनाल पत्थरी" अधिक प्रचलित हो गया। यह नाम इस मंदिर की पहचान और इसके धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

1.2 माता कुनाल पत्थरी का पौराणिक महत्व:

1. शक्तिपीठ से संबंध:

- माता कुनाल पत्थरी मंदिर को माँ सती के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया, तब भगवान शिव उनके जले हुए शरीर को लेकर तांडव करने लगे। भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को खंडित किया, और उनके शरीर के अंग पृथ्वी पर विभिन्न स्थानों पर गिरे। स्थानीय मान्यता है कि इस स्थान पर माँ सती का कपाल (सिर) गिरा था, जिसके कारण इसे "कपालेश्वरी" भी कहा जाता है।
- हालाँकि यह शक्तिपीठ पारंपरिक 51 शक्तिपीठों की सूची में स्पष्ट रूप से उल्लिखित नहीं है, लेकिन लोक कथाओं और क्षेत्रीय विश्वासों में इसे शक्ति का एक पवित्र स्थल माना जाता है। यह माँ दुर्गा की सर्वव्यापी शक्ति का प्रतीक है।

2. स्वयंभू प्रकटीकरण:

- लोक कथाओं में कहा जाता है कि माता कुनाल पत्थरी स्वयंभू रूप में एक पत्थर के रूप में प्रकट हुई थीं। इस पत्थर से जल निकलता है, जिसे चमत्कारी माना जाता है। यह स्वयंभू उत्पत्ति मंदिर को पौराणिक दृष्टिकोण से और भी महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि हिंदू धर्म में स्वयंभू मूर्तियाँ या प्रतीक ईश्वरीय शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण माने जाते हैं।

3. देवी की चमत्कारी शक्ति:

- पौराणिक संदर्भ में, माँ दुर्गा को रोगों और कष्टों से मुक्ति देने वाली शक्ति के रूप में पूजा जाता है। कुनाल पत्थरी मंदिर में यह शक्ति पत्थरी (किडनी स्टोन) और अन्य रोगों के निवारण से जुड़ी है, जो माँ की दैवीय कृपा को दर्शाता है। यह पौराणिक विश्वास मंदिर को एक चिकित्सीय और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

ऐतिहासिक महत्व

- ये कथाएँ माता कुनाल पत्थरी को केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि आस्था और चमत्कार का प्रतीक बनाती हैं।
- भक्तों का मानना है कि माता यहां अपने भक्तों की हर पुकार सुनती हैं, चाहे स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं हो या भक्त द्वारा की गई मनोकामना।
- कुनाल का पानी और उसका हमेशा भरा रहना आज भी एक रहस्य और आकर्षण का केंद्र है।

1.3 माता कुनाल पत्थरी के ऐतिहासिक साक्ष्य और शोध

माता कुनाल पत्थरी मंदिर के बारे में ब्रिटिश काल के यात्रा वृत्तांतों और स्थानीय पंचायत अभिलेखों से सीधे तौर पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है, क्योंकि इस मंदिर का उल्लेख मुख्य रूप से पौराणिक कथाओं और स्थानीय लोक परंपराओं में मिलता है। हालाँकि, ब्रिटिश काल के कुछ यात्रा वृत्तांतों और अभिलेखों से कांगड़ा क्षेत्र के धार्मिक स्थलों और सामाजिक स्थिति के बारे में सामान्य संदर्भ मिल सकते हैं, जिनसे मंदिर के ऐतिहासिक महत्व को समझने में मदद मिलती है।

ब्रिटिश काल के यात्रा वृत्तांत

ब्रिटिश काल में कई अंग्रेज यात्रियों, अधिकारियों और इतिहासकारों ने हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा की और अपने अनुभव लिखे। कांगड़ा जिला, जहाँ माता कुनाल पत्थरी मंदिर स्थित है, उस समय ब्रिटिश शासन के अधीन था।

उदाहरण के लिए:

- **विलियम मूरक्राफ्ट और जॉर्ज ट्रेबेक (1820 के दशक में):**

इन यात्रियों ने हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों का दौरा किया और यहाँ के मंदिरों, प्राकृतिक सुंदरता और स्थानीय संस्कृति का वर्णन किया। हालाँकि, उनके लेखों में कुनाल पत्थरी मंदिर का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन कांगड़ा घाटी के धार्मिक महत्व और शक्तिपीठों की चर्चा है।

- **कांगड़ा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1897):**

ब्रिटिश प्रशासन द्वारा संकलित इस दस्तावेज में कांगड़ा के प्रमुख मंदिरों, जैसे ज्वालामुखी और ब्रजेश्वरी मंदिर, का उल्लेख है। कुनाल पत्थरी मंदिर का सीधा जिक्र नहीं है, लेकिन यह संकेत मिलता है कि क्षेत्र में कई छोटे-बड़े मंदिर थे, जो स्थानीय लोगों के लिए आस्था के केंद्र थे। यह संभव है कि कुनाल पत्थरी जैसे मंदिर उस समय ब्रिटिश अधिकारियों के लिए कम प्राथमिकता वाले रहे हों, क्योंकि उनका ध्यान बड़े मंदिरों और व्यापारिक मार्गों पर था।

- **अलेक्जेंडर कनिंघम:**

पुरातत्वविद कनिंघम ने हिमाचल के प्राचीन स्थलों का अध्ययन किया। उनके लेखों में शक्तिपीठों की परंपरा का उल्लेख है, जो कुनाल पत्थरी मंदिर की पौराणिक उत्पत्ति से जुड़ा हो सकता है।

इन वृत्तांतों से यह पता चलता है कि ब्रिटिश काल में कांगड़ा क्षेत्र को धार्मिक और रणनीतिक महत्व के लिए जाना जाता था, लेकिन छोटे मंदिरों जैसे कुनाल पत्थरी पर उनका ध्यान कम रहा। फिर भी, इन लेखों में यह संकेत

मिलता है कि स्थानीय लोग इन मंदिरों को पूजते थे और ये उनकी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा थे।

स्थानीय पंचायत अभिलेख

स्थानीय पंचायत अभिलेखों में माता कुनाल पत्थरी मंदिर के बारे में लिखित जानकारी का अभाव हो सकता है, क्योंकि पंचायत रिकॉर्ड मुख्य रूप से भूमि, कर, और गाँव के प्रशासनिक मामलों पर केंद्रित होते थे। हालाँकि, मौखिक परंपराएँ और स्थानीय बुजुर्गों के कथन इस मंदिर के इतिहास को जीवित रखते हैं। कुछ संभावित बिंदु इस प्रकार हैं:

- **मंदिर का प्रबंधन:**

स्थानीय समुदाय और पुजारियों द्वारा मंदिर का रखरखाव और पूजा का आयोजन किया जाता रहा होगा। पंचायत स्तर पर मंदिर की जमीन या दान से संबंधित कोई रिकॉर्ड हो सकता है, लेकिन यह सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है।

- **नवरात्रि उत्सव:**

कांगड़ा क्षेत्र में नवरात्रि के दौरान शक्तिपीठों की पूजा का विशेष महत्व है। स्थानीय अभिलेखों में ऐसे आयोजनों का उल्लेख मिल सकता है, जो कुनाल पत्थरी मंदिर से जुड़ा हो।

- **चमत्कारी चट्टान:**

मंदिर की नम चट्टान को लेकर स्थानीय लोगों में आस्था रही होगी, और यह बात पीढ़ियों से चली आ रही है। पंचायत स्तर पर ऐसी मान्यताओं का मौखिक रूप से प्रसार हुआ होगा।

- **विभिन्न लेखकों या यात्रियों द्वारा मंदिर के बारे में लिखे गए विवरण**

माता कुनाल पत्थरी मंदिर चाय बागानों और जंगलों के बीच स्थित है, एक प्राचीन शक्तिपीठ है। विभिन्न लेखकों और यात्रियों ने इस मंदिर के बारे में अपने अनुभव और विवरण साझा किए हैं। नीचे कुछ

उल्लेखनीय विवरण दिए गए हैं, जो विभिन्न स्रोतों और यात्रियों के कथनों पर आधारित हैं:

1. पौराणिक महत्व पर लेखन:

- कई लेखकों ने इस मंदिर को मां सती के 51 शक्तिपीठों में से एक के रूप में वर्णित किया है। स्कंद पुराण के संदर्भ में यह कहा जाता है कि यहां माता सती का कपाल गिरा था, जिसके कारण इसे "कपालेश्वरी" या "कुनाल पथरी" के नाम से जाना जाता है। एक लेखक ने लिखा, "यह स्थान न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसकी शांत प्राकृतिक सुंदरता भी आत्मा को शांति देती है।"

2. चमत्कारी जल का उल्लेख:

- यात्रियों और स्थानीय लेखकों ने मंदिर में स्थित उस बड़े पत्थर का विशेष रूप से जिक्र किया है, जो मां के कपाल के ऊपर है और हमेशा पानी से भरा रहता है। एक यात्री ने अपने ब्लॉग में लिखा, "इस पत्थर में पानी का स्रोत रहस्यमयी है। बारिश न होने पर भी यह सूखता नहीं, और लोग इसे माता का चमत्कार मानते हैं।" एक अन्य लेखक ने इसे "प्रकृति और आस्था का अनूठा संगम" बताया।

3. प्राकृतिक सौंदर्य पर टिप्पणी:

- मंदिर के आसपास के चाय बागान और धौलाधार पर्वत की बर्फली चोटियों ने यात्रियों को बहुत प्रभावित किया है। एक पर्यटक ने लिखा, "धर्मशाला की हलचल से दूर, यह मंदिर शांति और सुकून का अनुभव देता है। चाय की हरियाली और पहाड़ों का नजारा इसे

स्वर्ग जैसा बनाता है।" एक अन्य ने इसे "ध्यान और भक्ति के लिए आदर्श स्थान" कहा।

4. आस्था और उपचार की मान्यता:

- कुछ लेखकों ने मंदिर की चिकित्सीय शक्ति पर जोर दिया है। एक स्थानीय पत्रकार ने अपने लेख में उल्लेख किया, "श्रद्धालु मानते हैं कि यहां का जल कैसर और पथरी जैसे रोगों को ठीक करता है। नवरात्रि के दौरान भक्तों की भीड़ इस आस्था का प्रमाण है।" एक यात्री ने अपने संस्मरण में लिखा, "मैंने देखा कि लोग इस पानी को बोतलों में भरकर ले जाते हैं, मानो यह कोई अमृत हो।"

5. लोककथाओं का वर्णन:

- कुछ लेखकों ने मंदिर से जुड़ी लोककथाओं का जिक्र किया है। एक लेख में कहा गया, "स्थानीय लोग बताते हैं कि जब भी पत्थर का पानी कम होता है, माता स्वयं वर्षा करवाती हैं। यह कहानी पीढ़ियों से चली आ रही है।" एक यात्री ने इसे "आस्था और प्रकृति के बीच एक अद्भुत संतुलन" बताया।

इन विवरणों से स्पष्ट है कि माता कुनाल पत्थरी मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य और चमत्कारों का संगम भी है। विभिन्न लेखकों और यात्रियों ने इसे अपनी-अपनी नजर से देखा—कोई इसे आध्यात्मिक शक्ति का केंद्र मानता है, तो कोई इसके शांत वातावरण का प्रशंसक है।

ब्रिटिश काल के यात्रा वृत्तांतों में कुनाल पत्थरी मंदिर का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन कांगड़ा के धार्मिक परिदृश्य का सामान्य वर्णन इस मंदिर के अस्तित्व और महत्व को परोक्ष रूप से समर्थन देता है। स्थानीय पंचायत

अभिलेखों में भी लिखित प्रमाण सीमित हो सकते हैं, परंतु मौखिक परंपराएँ और लोककथाएँ इसकी पुष्टि करती हैं कि यह मंदिर प्राचीन काल से श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण रहा है। इसकी उत्पत्ति और नामकरण मुख्य रूप से माता सती की कथा और प्राकृतिक चट्टान से जुड़ा है, जो स्थानीय आस्था का आधार है।

1.4 कुनाल पत्थरी मंदिर की उत्पत्ति/प्रकट की कथाएँ

कुनाल पत्थरी मंदिर, हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के पास स्थित, देवी दुर्गा को समर्पित एक पवित्र स्थल है, जो कांगड़ा घाटी की आध्यात्मिक विरासत में डूबा हुआ है। इस मंदिर की दिव्य उत्पत्ति/प्रकट होने की दो प्रिय लोक कथाएँ हैं: एक चरवाहे द्वारा रहस्यमयी गीले पत्थर की खोज की और दूसरी एक ग्रामीण द्वारा दिव्य स्वप्न द्वारा साइट तक निर्देशित होने की। ये कहानियाँ, क्षेत्र की सांस्कृतिक ताने-बाने में बुनी गई, लोगों और उनके परिदृश्य के बीच गहन संबंध को प्रतिबिंबित करती हैं।

चरवाहा और गीला पत्थर

धौलाधार पर्वतों के नीचे लुढ़कते चाय बागानों में, एक विनम्र चरवाहा कभी अपनी भेड़ों के साथ घूमता था, दोपहर की तेज गर्मी में छाया की तलाश में। जब वह एक चट्टानों के समूह के पास आराम कर रहा था, तो एक ने उसका ध्यान आकर्षित किया—एक चिकनी, काली चट्टान जो सूखे, धूप से झुलसे हुए परिवेश के बावजूद नमी से चमक रही थी। जिज्ञासु होकर, उसने उसे छुआ, उसकी उंगलियाँ गीली हो गई, मानो पत्थर रो रहा हो।

अगले दिन लौटने पर, उसने पत्थर को अभी भी नम पाया, हालाँकि पास में कोई धारा या झरना नहीं था। चरवाहा, गहन विश्वास वाला एक साधारण व्यक्ति, ने अपनी खोज ग्रामीणों के साथ साझा की। वे साइट पर उमड़ पड़े, गीले पत्थर को माँ दुर्गा की उपस्थिति का दिव्य संकेत मानते हुए, उनकी पोषणकारी और रक्षात्मक सार को चट्टान की लगातार नमी में निहित मानते हुए। बुजुर्गों ने इसे एक पवित्र अभिव्यक्ति घोषित किया, और भक्तों ने फूल, नारियल और चाय की पत्तियाँ चढ़ानी शुरू कर दीं। समय के साथ, पत्थर के चारों ओर एक साधारण मंदिर विकसित हुआ, जो कुनाल पत्थरी मंदिर में

बदल गया, जहाँ हमेशा नम चट्टान पूजा का केंद्र बिंदु बनी हुई है, जो देवी की शाश्वत आशीषों का प्रतीक है।

ग्रामीण को निर्देशित करने वाला स्वप्न

नजदीकी गाँव में, शायद सकोह में, एक किसान या मजदूर कठिनाइयों के बोझ तले दबा हुआ था—फसल की असफलता या पारिवारिक बीमारी। एक रात, एक आकाशीय आकृति उसके स्वप्न में प्रकट हुई: लाल वस्त्रों में एक महिला, चाय बागानों के बीच एक चट्टानी ऊँटाई पर खड़ी, दूर में धौलाधार की नुकीली चोटियों के साथ। उसकी आवाज़, शांत लेकिन आदेशपूर्ण, ने खुद को माँ दुर्गा के रूप में प्रकट किया और उसे इस स्थान की तलाश करने और वहाँ उसका सम्मान करने का आग्रह किया, उसके गाँव की रक्षा का वादा करते हुए।

स्पष्टता के साथ जागने पर, ग्रामीण ने अपना दर्शन अपने परिवार के साथ साझा किया, जिन्होंने उसे देवी के आह्वान का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्वप्न की जीवंत विवरणों से निर्देशित—चाय की पत्तियों की सुगंध, पत्थर का शीतल स्पर्श—उसने पहाड़ियों के माध्यम से ट्रेक किया जब तक कि वह सटीक स्थान नहीं ढूँढ लिया। शांति से अभिभूत होकर, उसने प्रार्थना की, और जल्द ही अन्य ग्रामीण उसके साथ जुड़ गए। साथ में, उन्होंने एक साधारण मंदिर का निर्माण किया, इसे स्थानीय क्षेत्र के नाम पर कुनाल पत्थरी नाम दिया, विश्वास करते हुए कि देवी ने इस साइट को रहने और उनका आशीर्वाद देने के लिए चुना है।

कहानियों की विरासत

दोनों कथाएँ—चरवाहे का गीले पत्थर से सामना और ग्रामीण का दिव्य स्वप्न—कांगड़ा घाटी के कठोर इलाके के साथ आध्यात्मिक बंधन को रेखांकित करती हैं। गीला पत्थर, एक आवर्ती प्रतीक, कठोर परिदृश्य में जीवन और पोषण का प्रतीक है। आज, कुनाल पत्थरी मंदिर इन उत्पत्तियों का साक्ष्य खड़ा है, इसकी सादगी उस गहन विश्वास को प्रतिबिंबित करती है जो यह प्रेरित करता है। भक्त अभी भी कहानियों और विश्वास से आकर्षित

होकर आते हैं कि माँ दुर्गा की उपस्थिति चट्टानों और शांत परिवेश में बनी हुई है।

यह मंदिर धौलाधार की पहाड़ियों के बीच चाय बागानों से घिरा हुआ है, और यहां एक बड़ा पत्थर है जो हमेशा पानी से भरा रहता है। मान्यता है कि इस पानी को प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है, और यह रोगियों के लिए लाभकारी होता है। नवरात्रि के दौरान यहां लाखों श्रद्धालु आते हैं, और हर मनोकामना पूरी होने की आस्था है।

1.5 माता कुनाल पत्थरी का ऐतिहासिक विकास

प्राचीन उल्लेख

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जो हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के निकट स्थित है, एक शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध है। हालाँकि, इस मंदिर का स्पष्ट उल्लेख प्रमुख हिंदू ग्रंथों जैसे पुराणों (देवी भागवत पुराण, मार्कंडेय पुराण) या शक्तिपीठों की पारंपरिक सूचियों में सीधे तौर पर "कुनाल पत्थरी" नाम से नहीं मिलता है। फिर भी, स्थानीय लोक कथाओं, मौखिक परंपराओं और कुछ क्षेत्रीय संदर्भों में इसके महत्व को देखा जा सकता है। नीचे इस संदर्भ में उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण किया गया है:

ग्रंथों में उल्लेख

1. शक्तिपीठों की सूची और संदर्भ:

- हिंदू धर्म में 51 शक्तिपीठों की मान्यता है, जो माता सती के शरीर के विभिन्न अंगों के पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न हुए माने जाते हैं। इन शक्तिपीठों की सूची विभिन्न ग्रंथों जैसे *देवी भागवत पुराण*, *कालिका पुराण*, और *तंत्र चूड़ामणि* में मिलती है। माता कुनाल पत्थरी मंदिर को स्थानीय रूप से माँ सती के कपाल (सिर)

के गिरने के स्थान के रूप में माना जाता है, जिसके कारण इसे "कपालेश्वरी" भी कहा जाता है।

2. संभावित व्याख्या:

- कुछ विद्वानों और स्थानीय पुजारियों का मानना है कि शक्तिपीठों की संख्या और स्थान ग्रंथों में पूरी तरह निश्चित नहीं हैं, और कई स्थानों पर स्थानीय परंपराएँ शक्तिपीठों की पहचान करती हैं। इस आधार पर, कुनाल पत्थरी को एक उप-शक्तिपीठ या स्वयंभू शक्ति स्थल के रूप में देखा जा सकता है, जिसका उल्लेख ग्रंथों में अप्रत्यक्ष रूप से हो सकता है।

उदाहरण के लिए----- *दुर्गा सप्तशती* में माँ दुर्गा के विभिन्न रूपों और उनके शक्ति स्थलों का वर्णन है, लेकिन विशिष्ट नामों का उल्लेख कम ही होता है। कुनाल पत्थरी का संबंध माँ के कपाल से होने के कारण इसे इस संदर्भ में जोड़ा जा सकता है।

1.6 मंदिर का कैसे हुआ निर्माण

माता कुनाल पत्थरी मंदिर के निर्माण के बारे में कोई स्पष्ट ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि यह एक प्राचीन शक्तिपीठ है और इसका इतिहास पौराणिक कथाओं से जुड़ा हुआ है। इस मंदिर का संबंध माता सती और भगवान शिव की कथा से माना जाता है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में आत्मदाह कर लिया था, तब भगवान शिव उनके शव को लेकर तांडव करने लगे। इस दौरान भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया, जो पृथ्वी पर विभिन्न स्थानों पर गिरे। इन्हीं स्थानों को शक्तिपीठ कहा जाता है। माता कुनाल पत्थरी मंदिर को वह स्थान माना जाता है जहाँ माता सती का कपाल

(सिर) गिरा था। इस कारण इसे "कपाल पत्थरी" या "कुनाल पत्थरी" के नाम से जाना जाता है।

मंदिर का वास्तविक निर्माण कब और किसने किया, इसकी ठोस जानकारी नहीं है, लेकिन स्थानीय लोककथाओं के अनुसार, यह मंदिर प्राचीन काल से ही यहाँ मौजूद है। कुछ लोग मानते हैं कि इसे किसी स्थानीय राजा या भक्तों ने बनवाया होगा, जो माता के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करना चाहते थे। समय के साथ मंदिर का जीर्णोद्धार और रखरखाव स्थानीय समुदाय और श्रद्धालुओं द्वारा किया जाता रहा है।

स्थानीय कथाओं, क्षेत्रीय इतिहास और सामान्य परंपराओं के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कांगड़ा के शासकों ने भी समय के साथ इस मंदिर के संरक्षण और प्रसिद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी। नीचे इस संदर्भ में उपलब्ध जानकारी और संभावित योगदान का विवरण दिया गया है:

कांगड़ा क्षेत्र के शासकों का योगदान

1. कटोच वंश और शक्ति पूजा की परंपरा:

- कांगड़ा क्षेत्र पर लंबे समय तक कटोच राजवंश का शासन रहा, जो हिमाचल प्रदेश के सबसे प्राचीन और शक्तिशाली राजवंशों में से एक है। कटोच शासक स्वयं को त्रिगर्त साम्राज्य के वंशज मानते थे, जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है। यह वंश शक्ति उपासना के लिए प्रसिद्ध था, और क्षेत्र में कई देवी मंदिरों (जैसे बृजेश्वरी देवी, ज्वालामुखी, और चामुंडा देवी) का निर्माण या संरक्षण उनके द्वारा किया गया।
- हालाँकि माता कुनाल पत्थरी मंदिर के निर्माण या विकास में कटोच शासकों का कोई प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है, लेकिन यह संभव है कि उन्होंने इस मंदिर को भी संरक्षण प्रदान किया हो। कांगड़ा क्षेत्र में शक्तिपीठों

और देवी स्थलों की महत्ता को देखते हुए, कटोच शासकों ने स्थानीय पूजा स्थलों को बढ़ावा देने के लिए धन, भूमि, या सुरक्षा प्रदान की होगी।

2. महाराजा संसार चंद का संभावित प्रभाव:

- 18वीं सदी में कांगड़ा के प्रसिद्ध शासक महाराजा संसार चंद कटोच ने क्षेत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा दिया। वे बगलामुखी मंदिर (कोटला) सहित कई मंदिरों के संरक्षक थे और नियमित रूप से वहाँ पूजा करते थे। यह संभव है कि उनके शासनकाल में माता कुनाल पत्थरी मंदिर की लोकप्रियता बढ़ी हो, क्योंकि उस समय कांगड़ा क्षेत्र में शक्ति पूजा का व्यापक प्रचार हुआ।
- संसार चंद के शासन में कांगड़ा घाटी एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य था, और धार्मिक स्थलों का विकास उनकी नीतियों का हिस्सा रहा होगा। माता कुनाल पत्थरी मंदिर के लिए कोई विशेष निर्माण कार्य उनके नाम से जुड़ा नहीं है, लेकिन उनकी धार्मिक नीतियों ने अप्रत्यक्ष रूप से इसे प्रभावित किया हो सकता है।

3. सुरक्षा और संरक्षण:

- कांगड़ा किला और क्षेत्र की रणनीतिक स्थिति के कारण, कटोच शासकों ने धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर ध्यान दिया। माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जो धर्मशाला के निकट एक शांत और प्राकृतिक स्थान पर स्थित है, को आक्रमणों से बचाने के लिए शासकों ने स्थानीय प्रशासनिक सहायता दी होगी। यह सुनिश्चित करना कि तीर्थयात्री सुरक्षित रूप से यहाँ पहुँच सकें, शासकों की जिम्मेदारी रही होगी।

भक्तों का योगदान

1. मंदिर की स्थापना और प्रारंभिक विकास:

- **लोक कथाओं के अनुसार**, माता कुनाल पत्थरी मंदिर की शुरुआत एक स्वयंभू पत्थर से हुई, जिसे भक्तों ने माँ की शक्ति के प्रतीक के रूप में पूजना शुरू किया। शुरू में यह स्थान संभवतः स्थानीय लोगों और साधुओं द्वारा पूजा का केंद्र बना। एक कथा में उल्लेख है कि एक साधु को माँ ने सपने में दर्शन देकर यहाँ पूजा शुरू करने का निर्देश दिया था। इस तरह, भक्तों की आस्था ने मंदिर के मूल स्वरूप को आकार दिया।

मंदिर की संरचना साधारण है, और यहाँ की प्राकृतिक चट्टान, जिसे माता का प्रतीक माना जाता है, इसकी विशेषता है। यह चट्टान हमेशा नम रहती है, जिसे चमत्कारिक माना जाता है। मंदिर का निर्माण और उसका इतिहास मुख्य रूप से श्रद्धा और आस्था पर आधारित है, न कि किसी लिखित ऐतिहासिक प्रमाण पर।

साहित्यिक संदर्भ:

क्या कोई हिमाचली कवि या लेखक ने माता कुनाल पत्थरी का जिक्र किया है? आओ बात करें:

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जो हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला के पास स्थित है, एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल है। हालाँकि, हिमाचली कवियों या लेखकों की रचनाओं में इस मंदिर का स्पष्ट और प्रत्यक्ष उल्लेख मिलना दुर्लभ है, खासकर प्रसिद्ध साहित्यिक कार्यों में। इसका कारण यह हो सकता है कि यह मंदिर स्थानीय आस्था का केंद्र है, लेकिन इसे राष्ट्रीय स्तर पर उतनी साहित्यिक पहचान नहीं मिली जितनी ज्वालामुखी या चामुंडा देवी जैसे अन्य शक्तिपीठों को मिली है। फिर भी, हिमाचल के साहित्य में माता के मंदिरों, शक्तिपीठों और प्राकृतिक सुंदरता का व्यापक वर्णन मिलता है, जिसके संदर्भ में कुनाल पथरी को परोक्ष रूप से जोड़ा जा सकता है।

हिमाचली साहित्य में संभावित संदर्भ

हिमाचल प्रदेश के साहित्य में पहाड़ी संस्कृति, प्रकृति और देवी-देवताओं की पूजा का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। कुछ उल्लेखनीय हिमाचली कवि और लेखक जिन्होंने इस तरह के विषयों पर लिखा है, वे हैं:

1. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल':

हिमाचल के प्रसिद्ध कवि और लेखक, जिन्होंने हिमालय की सुंदरता और यहाँ की लोक परंपराओं पर कई रचनाएँ लिखीं। उनकी कविताओं में पहाड़ी जीवन और आध्यात्मिकता का चित्रण मिलता है। हालाँकि, उनकी किसी विशिष्ट रचना में माता कुनाल पथरी का सीधा उल्लेख नहीं मिलता, उनकी कविता *"हिमाचल की धरती"* में मंदिरों और देवी की महिमा का वर्णन है:

"पहाड़ों की गोद में बसी हैं माँ की मूरतें,

हर पथर में बसता है उसका आलोक,

गंगा-यमुना की धारा सी पवित्र,

यहाँ हर कण में है उसका संदेश।"

यहाँ "माँ की मूरतें" और "पथर" का उल्लेख कुनाल पथरी की नम चट्टान से परोक्ष रूप से जोड़ा जा सकता है, जो माता का प्रतीक है।

2. सुदर्शन वशिष्ठ:

हिमाचल के लोकप्रिय लेखक और कवि, जिन्होंने पहाड़ी लोककथाओं और धार्मिक स्थलों पर लिखा। उनकी रचनाओं

में कांगड़ा घाटी के मंदिरों का जिक्र मिलता है। उनकी एक कविता "देवभूमि के गीत" में ऐसा संदर्भ है:

*"चाय के बागानों में छिपी है माँ की छाया,
पत्थरों से झरती है अमृत की धारा,
धौलाधार की गोद में बस्ती है शक्ति,
हर गाँव में गूँजती उसकी कथा प्यारी।"*

यहाँ "पत्थरों से झरती अमृत की धारा" कुनाल पत्थरी की चमत्कारी चट्टान से मिलती-जुलती प्रतीत होती है, हालाँकि यह स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख नहीं है।

3. लोक साहित्य और गीत:

हिमाचल के लोकगीतों में माता के मंदिरों और शक्तिपीठों का वर्णन आम है। कांगड़ा क्षेत्र के एक पारंपरिक गीत में ऐसा उल्लेख मिलता है:

*"माँ बैठी पथरां ते, ओ झरना बहंदा,
धर्मशाला दे पास, ओ दर्शन देन्दा।"*

(अनुवाद: "माँ पत्थरों पर बैठी है, वहाँ झरना बहता है,

धर्मशाला के पास, वह दर्शन देती है।")

यह लोकगीत संभवतः कुनाल पत्थरी मंदिर की ओर इशारा करता है, क्योंकि यह धर्मशाला के पास है और वहाँ की चट्टान नम रहती है।

हिमाचली साहित्य में माता कुनाल पत्थरी का प्रत्यक्ष उल्लेख दुर्लभ है, क्योंकि यह मंदिर स्थानीय स्तर पर अधिक प्रसिद्ध है और इसका व्यापक साहित्यिक दस्तावेजीकरण नहीं हुआ। बड़े कवियों जैसे रामधारी

सिंह दिनकर या महादेवी वर्मा ने हिमालय और शक्तिपीठों पर लिखा, लेकिन कुनाल पत्थरी का विशिष्ट जिक्र उनकी रचनाओं में नहीं मिलता। स्थानीय कवियों और लोक साहित्य में ही इसके संकेत मिलते हैं, जो ऊपर उद्धृत किए गए हैं।



1.7 मंदिर की स्थापना और ऐतिहासिक विकास :

माता कुनाल पथरी मंदिर का वर्तमान स्वरूप सादगी और प्राकृतिक सुंदरता का मिश्रण है। यह मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है और इसके चारों ओर हरे-भरे चाय के बागान और जंगल हैं। मंदिर की मुख्य संरचना ज्यादा भव्य नहीं है, बल्कि यह एक साधारण ढांचे के रूप में है, जो इसकी प्राचीनता और पवित्रता को दर्शाता है। मंदिर का मुख्य आकर्षण एक पिंडी है, जिसे माता का प्रतीक माना जाता है, और श्रद्धालु इसे माता के आशीर्वाद का चमत्कार मानते हैं।

यहाँ नियमित रूप से पूजा होती है, और नवरात्रि के दौरान विशेष आयोजन किए जाते हैं, जब बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर का प्रबंधन स्थानीय समुदाय और पुजारियों द्वारा किया जाता है। हाल के वर्षों में, मंदिर तक पहुँचने के लिए सड़क और बुनियादी सुविधाओं में सुधार हुआ है, जिससे पर्यटकों और श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

मंदिर की बनावट: सादगी में छिपा वैभव

मंदिर के पुजारी के अनुसार, पिंडी का आकार ऐसा प्रतीत होता है जैसे शेर बैठा हुआ हो, और माता का कपाल (प्रतीकात्मक रूप से) उसी के ऊपर है। यह विवरण मंदिर की विशेषता को दर्शाता है, क्योंकि यहाँ की पिंडी और कुनाल (परात) का अनूठा स्वरूप भक्तों में कौतुहल और श्रद्धा जगाता है।

आइए, इस विशेषता को विस्तार से समझते हैं, जिसमें पिंडी का आकार, कुनाल (परात) की संरचना, और इसके धार्मिक महत्व को शामिल किया गया है।

1. पिंडी का आकार: शेर जैसा स्वरूप और माता का उस पर विराजमान

माता कुनाल पत्थरी मंदिर में माता सती की पिंडी की पूजा होती है, जिसे 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है, जहाँ माता सती का कपाल गिरा था। इस पिंडी का आकार सामान्य पिंडी से भिन्न और अद्वितीय है। जैसा कि मैंने पहले भी उल्लेख किया, यह पिंडी ऐसी प्रतीत होती है जैसे एक शेर बैठा हुआ है और माता स्वयं वहाँ शेर पर विराजमान हैं, । इस स्वरूप की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **शेर का प्रतीकात्मक आकार:**

शेर शक्ति, साहस, और रक्षा का प्रतीक है, जो माता दुर्गा के वाहन के रूप में भी पूजनीय है। पिंडी का यह आकार माता की शक्ति और उनके रौद्र रूप को दर्शाता है। स्थानीय भक्तों और पुजारियों के अनुसार, जब भक्त पिंडी के दर्शन करते हैं, तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि माता स्वयं शेर के ऊपर बैठ कर वहाँ विराजमान हैं, जो उन्हें रक्षा और आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

- **प्राकृतिक संरचना:**

पिंडी का यह स्वरूप प्राकृतिक रूप से बना हुआ माना जाता है, जो इसे और भी चमत्कारिक बनाता है। यह पत्थर की संरचना न तो कृत्रिम रूप से तराशी गई है और न ही मानव द्वारा बनाई गई है, बल्कि यह स्वयंभू (प्रकृति द्वारा निर्मित) मानी जाती है। इसकी बनावट ऐसी है कि यह एक बैठे हुए शेर की मुद्रा को दर्शाती है, जिसमें सिर, धड़, और पैरों का आभास होता है।

- **भक्तों पर प्रभाव:**

पिंडी का यह अनूठा आकार भक्तों में कौतुहल और श्रद्धा जगाता है। जब भक्त इस पिंडी के दर्शन करते हैं, तो उन्हें

माता की जीवंत उपस्थिति का अनुभव होता है। कई भक्तों का कहना है कि पिंडी को देखने से उनके मन में भय और संदेह दूर हो जाते हैं, और वे माता की शक्ति से प्रेरित महसूस करते हैं।

2. माता का कपाल (प्रतीकात्मक रूप से) और कुनाल (परात)

पिंडी के ऊपर माता का कपाल (प्रतीकात्मक रूप से) और कुनाल (परात) की मौजूदगी इस मंदिर की एक और अनूठी विशेषता है। इसे विस्तार से समझते हैं:

- **माता का कपाल:**

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब भगवान शिव माता सती के जले हुए शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता के शरीर को खंडित किया। माता के शरीर के विभिन्न अंग विभिन्न स्थानों पर गिरे, जो शक्तिपीठों के रूप में पूजित हुए। माता कुनाल पत्थरी मंदिर में माता सती का कपाल गिरा था। यहाँ की पिंडी माता के कपाल का प्रतीक है, और यहाँ शेर जैसा आकार इस प्रतीक को और भी प्रभावशाली बनाता है।

- **कुनाल (परात) की संरचना:**

पिंडी के ठीक ऊपर एक पत्थर की परात या कुनाल है, जो प्राकृतिक रूप से बनी हुई है। यह कुनाल एक उथले पात्र जैसी संरचना है, जिसमें हमेशा जल भरा रहता है। इस जल की विशेषताएँ इसे चमत्कारिक बनाती हैं:

- **जल का कभी न सूखना:**

कुनाल में मौजूद जल कभी नहीं सूखता, चाहे कितनी भी गर्मी या सूखा क्यों न हो। यह जल हमेशा ताजा और शुद्ध रहता है।

- **जाला या गंदगी से मुक्त:**

इस जल में न तो जाला लगता है और न ही यह कभी खराब होता है। भक्त इसे माता की कृपा और चमत्कार का प्रतीक मानते हैं।

- **पवित्रता और उपयोग:**

इस जल को भक्त पवित्र मानते हैं और इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। कुछ भक्त इसे घर ले जाकर पूजा में उपयोग करते हैं या रोगों के निवारण के लिए पीते हैं।

- **प्रतीकात्मक महत्व:**

कुनाल को माता के कपाल के ऊपर एक रक्षात्मक छत्र या पवित्र पात्र के रूप में देखा जाता है। यह माता की शक्ति और उनके कपाल की पवित्रता को संरक्षित करता है। कुनाल और पिंडी का संयोजन माता के रौद्र और करुणा दोनों रूपों को दर्शाता है—शेर जैसी पिंडी उनकी शक्ति का प्रतीक है, जबकि कुनाल में जल उनकी करुणा और जीवनदायिनी शक्ति को दर्शाता है।

3. धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व

पिंडी और कुनाल का यह अनूठा स्वरूप माता कुनाल पत्थरी मंदिर को अन्य शक्तिपीठों से अलग बनाता है। इसका धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

- **शक्तिपीठ की महत्ता:**

माता कुनाल पत्थरी मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है, और यहाँ माता सती के कपाल की पूजा होती है। पिंडी का शेर जैसा आकार और कुनाल की उपस्थिति इस शक्तिपीठ को

विशेष बनाती है, क्योंकि यह माता के शक्ति और शिव के संयुक्त स्वरूप को दर्शाती है।

- **भक्तों में श्रद्धा और कौतुहल:**

पिंडी का शेर जैसा आकार और माता का विराजमान होना, कुनाल में जल की चमत्कारिक प्रकृति भक्तों में गहरी श्रद्धा और आश्चर्य पैदा करती है। कई भक्त यहाँ दर्शन करने के बाद माता की जीवंत उपस्थिति का अनुभव करते हैं। यह स्वरूप भक्तों को यह विश्वास दिलाता है कि माता स्वयं यहाँ विराजमान हैं और उनकी हर मनोकामना पूर्ण करेंगी।

- **रोग निवारण में विश्वास:**

मंदिर की एक प्रमुख मान्यता है कि यहाँ दर्शन करने और कुनाल के जल का सेवन करने से पथरी (किडनी स्टोन) और कैंसर जैसे रोगों में लाभ मिलता है। पिंडी और कुनाल का यह स्वरूप इस मान्यता को और बल देता है, क्योंकि भक्त इसे माता की चमत्कारिक शक्ति का प्रतीक मानते हैं।

- **साधना का केंद्र:**

पिंडी और कुनाल का अनूठा स्वरूप इस मंदिर को साधकों के लिए भी महत्वपूर्ण बनाता है। शेर पर विराजमान (पिंडी) माता की शक्ति और कुनाल में जल उनकी करुणा को दर्शाता है, जो साधकों को ध्यान और तपस्या के लिए प्रेरित करता है।

बाबा माधवानंद मुनि जी जैसे संतों ने भी इस स्थान को अपनी साधना के लिए चुना, जो इसकी आध्यात्मिक ऊर्जा को दर्शाता है।

4. भक्तों के अनुभव और लोक कथाएँ

स्थानीय भक्तों और पुजारियों की कथाओं के अनुसार, पिंडी और कुनाल से जुड़े कई चमत्कारिक अनुभव हैं:

- **दैवीय दर्शन:**

कुछ भक्तों का कहना है कि पिंडी के दर्शन के दौरान उन्हें माता दुर्गा या शेर की आकृति के दर्शन हुए, जो उनकी श्रद्धा को और गहरा करता है।

- **रोगों से मुक्ति:**

कई भक्तों ने बताया है कि कुनाल के जल का सेवन करने और माता के दर्शन करने के बाद उन्हें पथरी या अन्य गंभीर रोगों से राहत मिली। ये अनुभव मंदिर की प्रसिद्धि को और बढ़ाते हैं।

- **आध्यात्मिक अनुभव:**

साधक और तपस्वी इस स्थान को अत्यंत शक्तिशाली मानते हैं। कुनाल में जल की उपस्थिति और पिंडी का स्वरूप ध्यान और साधना के दौरान विशेष ऊर्जा प्रदान करता है।

5. दर्शन और पूजा की प्रक्रिया

पिंडी और कुनाल के दर्शन मंदिर की मुख्य पूजा का हिस्सा हैं। यहाँ की पूजा प्रक्रिया इस प्रकार है:

- **दर्शन:**

भक्त मंदिर के गर्भगृह में पिंडी और कुनाल के दर्शन करते हैं। पिंडी को फूल, चंदन, और अन्य पूजा सामग्री अर्पित की जाती है।

- **कुनाल का जल:**

पुजारी भक्तों को कुनाल के जल को प्रसाद के रूप में प्रदान करते हैं। कुछ भक्त इसे ग्रहण करते हैं, जबकि अन्य इसे घर ले जाते हैं।

- **विशेष पूजा:**

नवरात्रि, शिवरात्रि, और सावन के महीने में पिंडी और कुनाल की विशेष पूजा होती है। इस दौरान भक्त हवन, रुद्राभिषेक, और माता के मंत्रों का जाप करते हैं।

- **ध्यान और साधना:**

कुछ भक्त और साधक पिंडी के सामने ध्यान करते हैं, क्योंकि इसका स्वरूप और कुनाल की उपस्थिति आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करती है।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर की पिंडी, जो शेर जैसे आकार की है, और इसके ऊपर स्थित कुनाल (परात) में हमेशा भरा रहने वाला पवित्र जल, इस मंदिर की सबसे अनूठी और चमत्कारिक विशेषताएँ हैं। यह स्वरूप माता की शक्ति, साहस, और करुणा का प्रतीक है, जो भक्तों में श्रद्धा, कौतुहल, और आध्यात्मिक प्रेरणा जगाता है। पिंडी का शेर जैसा आकार माता दुर्गा के वाहन और उनके रौद्र रूप को दर्शाता है, जबकि कुनाल में जल उनकी जीवनदायिनी और करुणामयी प्रकृति को प्रकट करता है। यह संयोजन मंदिर को न केवल एक शक्तिपीठ, बल्कि एक साधना केंद्र और चमत्कारिक तीर्थ स्थल बनाता है





इस मंदिर परिसर में माता की पिंडी के दूसरी तरफ भगवान शिव का मंदिर भी स्थित है। यहाँ आने वाले भक्त माता कुनाल पत्थरी के दर्शन करने के बाद भगवान शिव के दर्शन भी करते हैं। यह परंपरा इसलिए भी प्रचलित है क्योंकि माता पार्वती (सती) और भगवान शिव का अटूट संबंध हिंदू मान्यताओं में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। दोनों के दर्शन से भक्तों को पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है।

1.8 शिव मंदिर की कहानी:

मंदिर के पुजारी के कथन के अनुसार, बाबा माधवानंद मुनि जी महाराज और उनके द्वारा स्थापित गुप्तेश्वर महादेव शिवलिंग इस मंदिर की साधना परंपरा को और भी विशेष बनाते हैं। हालांकि, इस मंदिर और बाबा माधवानंद मुनि जी के बारे में विशिष्ट लिखित स्रोतों में सीमित जानकारी उपलब्ध है, मैं यहाँ पर और स्थानीय परंपराओं, पुजारियों की

कथाओं, और सामान्य शक्तिपीठ परंपराओं के आधार पर विस्तृत जानकारी प्रदान कर रहा हूँ।

1. बाबा माधवानंद मुनि जी महाराज की तपस्या की कहानियाँ

बाबा माधवानंद मुनि जी महाराज एक सिद्ध साधक थे, जिन्होंने माता कुनाल पत्थरी मंदिर में कई वर्षों तक कठोर तपस्या की। स्थानीय पुजारी और भक्तों की कथाओं के अनुसार, बाबा जी एक तपस्वी संत थे, जिन्होंने इस पवित्र स्थल को अपनी साधना का केंद्र बनाया। उनकी तपस्या की कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार हैं:

- **एकांत और कठोर साधना:**

माता कुनाल पत्थरी मंदिर चारों ओर से चाय के बागानों और घने जंगलों से घिरा हुआ है, जो इसे एकांत साधना के लिए आदर्श बनाता है। बाबा माधवानंद ने इस शांत और पवित्र स्थान पर वर्षों तक ध्यान और तप किया। उनकी साधना मुख्य रूप से माता शक्ति और भगवान शिव को समर्पित थी।

- **गुफा में तपस्या:**

बाबा जी ने मंदिर के बाईं ओर एक गुफा में तपस्या की और वहाँ गुप्तेश्वर महादेव शिवलिंग की स्थापना की। यह गुफा उनकी तपस्या का मुख्य स्थान रही होगी, जहाँ उन्होंने चिमटे और तावे जैसे साधारण औजारों से गुफा को खोदकर **शिवलिंग** स्थापित किया। यह कार्य उनकी दृढ़ संकल्पशक्ति और तपोबल का प्रतीक है।

- **आध्यात्मिक सिद्धि:**

स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, बाबा माधवानंद मुनि जी ने अपनी तपस्या के दौरान माता कुनाल पत्थरी (माता सती के कपाल के रूप में पूजित) और भगवान शिव की कृपा प्राप्त की। उनकी साधना से इस स्थान की आध्यात्मिक ऊर्जा और

बढ़ गई, जिसके कारण यह मंदिर साधकों और भक्तों के लिए और भी महत्वपूर्ण हो गया।

- **लोक कथाएँ:**

कुछ कथाओं में कहा जाता है कि बाबा जी की तपस्या इतनी गहन थी कि उनकी उपस्थिति में मंदिर परिसर में चमत्कारिक घटनाएँ होती थीं, जैसे गुफा में असामान्य प्रकाश या दैवीय शक्ति का अनुभव। हालाँकि, ये कथाएँ अधिकतर मौखिक परंपराओं पर आधारित हैं और लिखित रूप में कम ही उपलब्ध हैं।

2. गुप्तेश्वर महादेव के दर्शन की प्रक्रिया

गुप्तेश्वर महादेव शिवलिंग, जिसे बाबा माधवानंद मुनि जी ने स्थापित किया, मंदिर के बाईं ओर एक गुफा में स्थित है। इसके दर्शन की प्रक्रिया और महत्व इस प्रकार हैं:

- **गुफा का स्थान और दर्शन:**

गुप्तेश्वर महादेव शिवलिंग गुफा में स्थापित है, जो मंदिर परिसर में माता कुनाल पत्थरी की मुख्य पिंडी से कुछ दूरी पर है। यह गुफा एक संकरी और पवित्र जगह है, जहाँ भक्तों को सावधानीपूर्वक प्रवेश करना होता है। दर्शन के लिए सामान्यतः पुजारी या मंदिर प्रबंधन की अनुमति और मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है, क्योंकि यह एक गुप्त और विशेष स्थान है।

- **पूजा और अनुष्ठान:**

गुप्तेश्वर महादेव के दर्शन के दौरान भक्त सामान्यतः शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, और फूल अर्पित करते हैं। यहाँ रुद्राभिषेक, शिव मंत्र जाप, और अन्य शिव-संबंधी अनुष्ठान किए जा सकते हैं। कुछ भक्त यहाँ विशेष साधना या ध्यान के लिए भी आते हैं, क्योंकि यह स्थान तपस्या के लिए प्रसिद्ध है।

- **विशेष अवसर:**

नवरात्रि, शिवरात्रि, और सावन के महीने में गुप्तेश्वर महादेव के दर्शन का विशेष महत्व होता है। इन अवसरों पर भक्तों की संख्या बढ़ जाती है, और मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन होता है। यदि आप दर्शन के लिए जाना चाहते हैं, तो इन अवसरों पर आप भी आध्यात्मिक ऊर्जा का आनंद ले सकते हैं।

नाग पंचमी (29 जुलाई 2025) का पवित्र दिन,

मैं जब भी मंदिर जाता हूँ तो मुझे हमेशा माता की उपस्थिति महसूस होती है। मैं नाग पंचमी के खास दिन की बात आपसे सांझा कर रहा हूँ।

यह बहुत ही खूबसूरत और आत्मिक अनुभव है! माता कुनाल पत्थरी मंदिर में हर बार माँ दुर्गा की उपस्थिति महसूस करना, यह दर्शाता है कि मेरा माता के साथ एक गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव है। खासकर नाग पंचमी (29 जुलाई 2025) जैसे पवित्र दिन, जब मंदिर में पाठ, हवन और भक्ति का माहौल था, तब माता की वह ऊर्जा और भी प्रबल लगती है। मंदिर का वह जीवंत वातावरण—यह सब आपके इस अनुभव को और भी गहरा करेगा।

नाग पंचमी (29 जुलाई 2025) के दिन, जब मंदिर में हवन और भगवान शिव व नाग देवता की पूजा का माहौल था, इस तरह की बातें सुनकर निश्चित रूप से मन में एक गहरी छाप छूटेगी। इस कहानी से आपके मन में भी विचार या भावना जागेगी। मंदिर में पाठ और हवन की धूम थी, ऐसा लगता है कि भक्ति की वह ऊर्जा हर किसी को माता के और करीब ले जा रही थी। मंदिर का वह माहौल—हवन का धुआँ, मंत्रों की गूँज, और भक्तों की भक्ति—कैसा सुंदर दृश्य ?

- **आध्यात्मिक महत्व:**

गुप्तेश्वर महादेव का नाम इस बात का प्रतीक है कि यह शिवलिंग गुप्त रूप से स्थापित किया गया था और इसका महत्व साधकों के

लिए विशेष है। यहाँ दर्शन करने से मन की शांति, आध्यात्मिक ऊर्जा, और शिव कृपा की प्राप्ति होती है।

3. मंदिर की अन्य विशेषताएँ

माता कुनाल पत्थरी मंदिर की कुछ अन्य उल्लेखनीय विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- **माता की पिंडी और कुनाल:**

मंदिर में माता सती के कपाल के रूप में पिंडी की पूजा होती है। इसके ऊपर एक पत्थर की परात (कुनाल) है, जिसमें हमेशा जल भरा रहता है। इस जल का कभी सूखना, जाला लगना, या खराब होना नहीं देखा गया, जो इसे चमत्कारिक बनाता है। इस जल को भक्त पवित्र मानते हैं और इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं।

कुनाल (परात) हमेशा दिव्य जल से भरा:



"एक पत्थर की परात, जो कभी खाली नहीं होती-----"

-----यह माता कुनाल पत्थरी का रहस्य है।"

- **चिकित्सीय महत्व:**

मंदिर की मान्यता है कि यहाँ दर्शन करने से पथरी (किडनी स्टोन) और कैंसर जैसे रोगों में लाभ मिलता है। कई भक्त इस विश्वास के साथ यहाँ आते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर धन्यवाद स्वरूप माता को चढ़ावा चढ़ाते हैं।

- **प्राकृतिक सौंदर्य:**

मंदिर चारों ओर से हरे-भरे चाय बागानों और जंगलों से घिरा है, जो इसे एक शांत और रमणीय स्थान बनाता है। यहाँ का वातावरण भक्तों को ध्यान और साधना के लिए प्रेरित करता है।

- **शक्तिपीठ का महत्व:**

यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ माता सती का कपाल गिरा था। यह इसे भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों में से एक बनाता है। नवरात्रि के दौरान यहाँ विशेष पूजा और मेले का आयोजन होता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु भाग लेते हैं।

- **साधना केंद्र:**

मंदिर का एकांत और आध्यात्मिक वातावरण इसे साधकों के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है। बाबा माधवानंद जैसे संतों की तपस्या ने इस स्थान को सिद्धि प्राप्ति का केंद्र बनाया है।

5. अतिरिक्त जानकारी के लिए

चूँकि बाबा माधवानंद मुनि जी और गुप्तेश्वर महादेव के बारे में लिखित स्रोत सीमित हैं, यह जानकारी मुख्य रूप से स्थानीय पुजारियों की कथाओं और शक्तिपीठ परंपराओं पर आधारित है। यह जानकारी मंदिर के पुजारी या स्थानीय भक्तों से संपर्क कर ली गई है, मंदिर के आसपास के बुजुर्ग या स्थानीय लोग से भी ऐसी मौखिक परंपराओं को साझा कर लिखा गया है।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर का मूल स्वरूप संभवतः एक स्वयंभू पत्थर और प्राकृतिक जल स्रोत के इर्द-गिर्द केंद्रित था, जिसमें कोई बड़ी संरचना नहीं थी। समय के साथ, श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और आस्था के कारण इसे एक व्यवस्थित मंदिर का रूप दिया गया। इसका पुनर्निर्माण और संरक्षण स्थानीय समुदाय के प्रयासों से हुआ, और आज यह एक साधारण मगर कार्यात्मक धार्मिक स्थल के रूप में खड़ा है। ऐतिहासिक दस्तावेजों की कमी के कारण सटीक तारीखें और विवरण अनुपलब्ध हैं, लेकिन लोक कथाएँ और वर्तमान स्वरूप इसके विकास की कहानी को रेखांकित करते हैं।

“माता कुनाल पत्थरी का इतिहास केवल अतीत की कहानी नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जो आज भी लाखों दिलों में बसती है।”



मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए चाय ब्रेक का आनंद

अध्याय 2

भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक सौंदर्य

माता कुनाल पत्थरी मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित है। यह मंदिर प्रसिद्ध पर्यटन नगरी धर्मशाला से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर है। भौगोलिक रूप से, यह मंदिर चाय के बागानों और घने जंगलों के बीच बसा हुआ है, जो इसे एक शांत और प्राकृतिक वातावरण प्रदान करता है। मंदिर की ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 1,350 मीटर (4,429 फीट) के आसपास है, और यह धौलाधार पर्वत श्रृंखला के निकट स्थित है। उत्तर दिशा में धौलाधार की बर्फ से ढकी चोटियाँ दिखाई देती हैं, जो इस स्थान की सुंदरता को और बढ़ाती हैं।

यह स्थान न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य और शांति के लिए भी जाना जाता है।

2.1 भौगोलिक स्थिति

- **स्थान:**

मंदिर धर्मशाला के निकट, चाय बागानों के मध्य में स्थित है। यह धौलाधार पर्वत श्रृंखला की तलहटी में बसा है, जो हिमालय का हिस्सा है।

- **ऊंचाई और परिवेश:**

मंदिर का परिवेश ऊंचे पर्वतों और घने जंगलों से घिरा है। उत्तर दिशा में धौलाधार की बर्फ से ढकी चोटियाँ चांदी की तरह चमकती हैं, जो दृश्य को मनोरम बनाती हैं। दक्षिण में कांगड़ा हवाई अड्डा नजदीक है, जो इसकी पहुंच को सुगम बनाता है।

- **जलवायु:**

क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण है, जिसमें गर्मियां सुखद और सर्दियां ठंडी होती हैं। बरसात के मौसम में मंदिर के आसपास का हरियाली परिदृश्य और भी आकर्षक हो जाता है।

हिमाचल की गोद में बसा माता कुनाल पत्थरी का मंदिर कोई साधारण स्थान नहीं है। यह एक ऐसी जगह है जहां पहाड़ों की चुप्पी में माता की मौजूदगी बोलती है, जहां चाय बागानों की हरी चादर के बीच एक पत्थर की परात रहस्य बनकर खड़ी है। कहते हैं, यह परात कभी खाली नहीं होती—उसमें हमेशा पानी रहता है, जैसे माता का आशीर्वाद कभी खत्म न होने वाली धारा हो। मेरे लिए यह मंदिर सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था, प्रकृति और इंसानी उम्मीदों का संगम है। माता कुनाल पत्थरी मंदिर सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं है; यह प्रकृति की उस खूबसूरती का हिस्सा है जो हिमाचल को अनोखा बनाती है। मंदिर तक पहुंचने का रास्ता चाय बागानों से होकर गुजरता है। ये बागान हरे कालीन की तरह बिछे हैं, जिनके बीच से चलते हुए हवा में चाय की पत्तियों की हल्की सुगंध घुलती है। सुबह की धुंध में ये पत्तियां ओस से भीगी रहती हैं, और सूरज की पहली किरण उन्हें चमका देती है। दूर से धौलाधार की बर्फोली चोटियां मंदिर को एक प्राकृतिक मुकुट पहनाती दिखती हैं। यह नजारा ऐसा है कि लगता है, माता ने खुद इस जगह को अपनी शरण के लिए चुना हो।

2.2 माता के दरवार में कैसे पहुंचा जाये

मंदिर तक पहुंचने के लिए आपको धर्मशाला के व्यस्त बाजारों से निकलकर एक शांत, संकरी सड़क पर जाना होगा। यह रास्ता आपको शहर की हलचल से दूर लेकर एक शांत वातावरण में, और प्रकृति के करीब लाता है। अगर आप पैदल चलना पसंद करते हैं, तो यह छोटी-सी ट्रेकिंग भी हो सकती है, और आपकी यात्रा आनंदमयी हो सकती है।

(A tool which makes your journey very easy)

[धौलाधार पहाड़ियाँ]

↑

|

| (3 किमी)

| धर्मशाला कचहरी

| (बस स्टैंड)

↓

चाय बागान | चाय बागान

-----|-----

दिव्य शक्ति माता कुनाल पत्थरी मंदिर

(आध्यात्मिकता का एक पवित्र स्थल)

|

|

↓

[गगल हवाई अड्डा, 12 किमी]

माता कुनाल पत्थरी मंदिर का नक्शा, धर्मशाला

आप कोई भी मार्ग चुन सकते हैं:

1. सड़क मार्ग से (By Road):

- **धर्मशाला से:**

मंदिर धर्मशाला से केवल 3 किलोमीटर दूर है। आप धर्मशाला बस स्टैंड या कोटवाली बाजार से टैक्सी, ऑटो-रिक्शा, या

स्थानीय बस ले सकते हैं। रास्ता चाय बागानों और जंगलों से होकर गुजरता है, जो बेहद खूबसूरत है।

- **मैक्लोडगंज से:**

मैक्लोडगंज से मंदिर 11 किलोमीटर दूर है। यहाँ से भी टैक्सी या ऑटो आसानी से मिल जाते हैं।

- **निजी वाहन से:**

अगर आपके पास अपनी गाड़ी है, तो धर्मशाला से कुनाल पथरी की ओर जाने वाली सड़क पर ड्राइव करें। मंदिर के पास पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन व्यस्त दिनों में जगह कम पड़ सकती है।

2. बस से (By Bus):

- धर्मशाला अंतरराज्यीय बस अड्डा (ISBT) से स्थानीय बसें कुनाल पथरी या आसपास के क्षेत्रों के लिए चलती हैं।
- बस आपको मंदिर के पास तक छोड़ देगी, जहाँ से थोड़ा पैदल चलना पड़ सकता है। बसों की समय-सारिणी पहले से चेक कर लें, क्योंकि ये नियमित अंतराल पर चलती हैं।

3. हवाई मार्ग से (By Air):

- निकटतम हवाई अड्डा **गंगल हवाई अड्डा (कांगड़ा हवाई अड्डा)** है, जो धर्मशाला से लगभग 15 किलोमीटर दूर और मंदिर से 12 किलोमीटर दूर है। यहाँ से दिल्ली और कुछ अन्य शहरों के लिए उड़ानें उपलब्ध हैं।
- हवाई अड्डे से आप टैक्सी या कैब बुक कर सकते हैं, जो आपको सीधे मंदिर तक ले जाएगी।

4. रेल मार्ग से (By Train):

- निकटतम रेलवे स्टेशन **पठानकोट रेलवे स्टेशन** है, जो धर्मशाला से लगभग 85 किलोमीटर दूर है। यहाँ से देश के प्रमुख शहरों के लिए ट्रेनें उपलब्ध हैं।
- पठानकोट से आप बस या टैक्सी ले सकते हैं। धर्मशाला पहुँचने के बाद मंदिर के लिए स्थानीय साधन लें।

5. पैदल यात्रा (By Foot):

अगर आप धर्मशाला या कोटवाली बाजार के पास हैं और प्रकृति का आनंद लेना चाहते हैं, तो मंदिर तक पैदल भी जा सकते हैं। यह लगभग 3 किलोमीटर की समतल और खूबसूरत राह है, जो चाय बागानों से होकर गुजरती है। इसमें 45 मिनट से 1 घंटा लग सकता है।

2.3 यात्रा के लिए सुझाव

1. कब जाएं:

मार्च-अप्रैल और सितंबर-अक्टूबर का मौसम सबसे सुखद होता है। नवरात्रि के दौरान मंदिर में विशेष पूजा होती है, लेकिन अगर आप शांति चाहते हैं, तो ऑफ-सीजन में जाएं।

2. क्या करें:

- मंदिर दर्शन के बाद चाय बागानों में सैर करें।
- धौलाधार की पृष्ठभूमि में फोटोग्राफी का आनंद लें।
- स्थानीय गद्दी संस्कृति को समझने के लिए पास के गांवों में समय बिताएं।

2. क्या साथ लाएं:

हल्के गर्म कपड़े, आरामदायक जूते, और एक कैमरा। मंदिर में प्रसाद के लिए छोटी टोकरी या थैली साथ रखें।

सर्वोत्तम समय:

सुबह जल्दी या शाम को जाएँ, ताकि भीड़ से बचा जा सके और शांत वातावरण का आनंद लिया जा सके।

कपड़े और जूते:

आरामदायक जूते पहनें, क्योंकि मंदिर तक कुछ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ सकती हैं। मंदिर में सम्मानजनक कपड़े पहनें।

रास्ते का आनंद:

पर्वतों का नजारा
यादगार बनाता

रास्ते में चाय बागान और धौलाधार
देखते हुए जाएँ, यह यात्रा को और
है।

आसपास के आकर्षण

मैक्लोडगंज:

तिब्बती संस्कृति और दलाई लामा के मंदिर के लिए प्रसिद्ध, यह कुनाल पथरी से 15 किमी दूर है।

कांगड़ा किला और *ब्रिजेश्वरी मंदिर*:

एक और शक्तिपीठ, जो कुनाल पथरी से 20 किमी दूर है।

चामुंडा देवि मंदिर:

एक ओर प्रसिद्ध मन्दिर, सिर्फ 15 कि मी की दूरी पर है।

नॉरबुलिंगका इंस्टीट्यूट:

तिब्बती कला और संस्कृति का एक शांतिपूर्ण केंद्र।

HPCA Cricket Stadium:

एचपीसीए क्रिकेट स्टेडियम (5 किमी): पहाड़ी दृश्यों वाला एक सुंदर स्टेडियम, जो पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है।



एचपीसीए क्रिकेट स्टेडियम और हिमालय की शांत सुंदरता

माता कुनाल पत्थरी मंदिर तक पहुँचना आसान और सुखद है, खासकर अगर आप हिमाचल की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेना चाहते हैं। अपनी यात्रा पहले से प्लान करें और माता के दर्शन का लाभ उठाएँ!

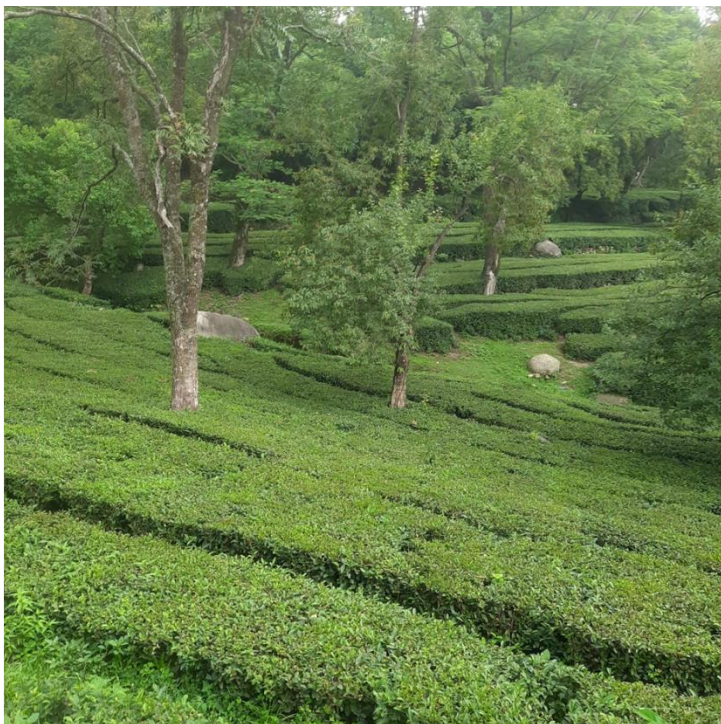
माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा के दौरान चाय के बागानों का नज़ारा इस अनुभव को और भी खास बना देता है। धर्मशाला से मंदिर तक का रास्ता और मंदिर का आसपास का इलाका हरे-भरे चाय बागानों से घिरा हुआ है, जो हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता का एक अनूठा नमूना है। यहाँ मैं आपको इन चाय बागानों के नज़ारे के बारे में विस्तार से बताता हूँ:

2.4 प्राकृतिक सौंदर्य:

- चाय बागान:

मंदिर के चारों ओर फैले चाय के बागान हरियाली और शांति का अनुभव कराते हैं। ये बागान मंदिर की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

हरे-भरे चाय बागान का दृश्य



(चाय बागान --- शांतिपूर्ण सैर के लिए आदर्श)

- धौलाधार पर्वत:

उत्तर में विशाल धौलाधार पर्वत श्रृंखला का बर्फ से लदा दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। यह पर्वत हिमालय की तीन प्रमुख श्रृंखलाओं में से एक है, जो प्राकृतिक वैभव का प्रतीक है।

जंगल और जैव-विविधता:

मंदिर के आसपास घने जंगल हैं, जो विविध वनस्पतियों और जीव-जंतुओं का घर हैं। यह क्षेत्र प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान है।

चाय बागानों का नज़ारा

1. हरियाली का समुद्र:

जैसे ही आप धर्मशाला से कुनाल पत्थरी की ओर बढ़ते हैं, सड़क के दोनों ओर चाय के पौधों की कतारें शुरू हो जाती हैं। ये बागान हरे रंग की एक लहराती चादर की तरह दिखते हैं, जो दूर तक फैले हुए हैं। सुबह की धूप में ये और भी चमकदार लगते हैं।

धौलाधार पर्वतों की पृष्ठभूमि:

- चाय बागानों के पीछे बर्फ से ढकी धौलाधार पर्वत श्रृंखला का नज़ारा मन मोह लेता है। हरे बागानों और सफेद चोटियों का यह संगम ऐसा लगता है जैसे प्रकृति ने अपनी पूरी कारीगरी यहाँ बिखेर दी हो।

2. शांत और सुगंधित माहौल:

- चाय के पौधों से उठती हल्की सुगंध हवा में घुली रहती है, जो यात्रा को ताज़गी से भर देती है। यहाँ की शांति और ठंडी हवा थकान को दूर कर देती है, खासकर अगर आप पैदल या धीरे-धीरे यात्रा कर रहे हों।

3. मौसमी बदलाव:

सुबह के समय बागानों पर ओस की बूँदें चमकती हैं, जो एक जादुई दृश्य बनाती हैं। बारिश के बाद ये

बागान और भी हरे-भरे और जीवंत दिखते हैं। सर्दियों में हल्की धुंध के बीच ये बागान रहस्यमयी लगते हैं।

4. चाय की कटाई का दृश्य:

अगर आप सही समय पर जाएँ (खासकर मार्च से मई या सितंबर से नवंबर), तो स्थानीय महिलाओं को चाय की पत्तियाँ चुनते हुए देख सकते हैं। उनकी रंग-बिरंगी पोशाकें और बागानों में काम करने का तरीका एक जीवंत तस्वीर पेश करता है।

कुनाल पत्थरी मंदिर के आसपास

- मंदिर के चारों ओर भी चाय बागानों का विस्तार है, जो इसे एकांत और शांत बनाता है। यहाँ से बागानों के बीच से गुजरती पगडंडियाँ मंदिर तक ले जाती हैं।
- मंदिर के पास बैठकर चाय बागानों और पहाड़ों को निहारना ऐसा अनुभव है, जो धार्मिक और प्राकृतिक सुंदरता को एक साथ जोड़ता है।

नज़ारे का आनंद कैसे लें

• पैदल चलें:

धर्मशाला से मंदिर तक का 3 किलोमीटर का रास्ता पैदल तय करें। यह आपको बागानों के बीच से गुजरने और नज़दीक से नज़ारा लेने का मौका देगा।

• फोटोग्राफी:

यहाँ की हरियाली और पहाड़ों का दृश्य फोटोग्राफी के लिए शानदार है। सूर्योदय या सूर्यास्त के समय यहाँ की तस्वीरें और भी खूबसूरत आती हैं।

- **चाय का स्वाद:**

रास्ते में छोटी-छोटी दुकानों पर स्थानीय कांगड़ी चाय मिलती है, जो बागानों से ताज़ा पत्तियों से बनाई जाती है। इसे पीते हुए नज़ारा लेना अपने आप में एक सुखद अनुभव है।

चाय बागानों का यह नज़ारा माता कुनाल पत्थरी की यात्रा को सिर्फ धार्मिक नहीं, बल्कि एक प्रकृति प्रेमी के लिए भी यादगार बनाता है। ये बागान हिमाचल के प्रसिद्ध पालमपुर चाय क्षेत्र का हिस्सा हैं, जो अपनी गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं। यहाँ की शांति, सुंदरता और माता का आशीर्वाद एक साथ मिलकर एक अनोखा अनुभव देते हैं।

2.5 प्रकृति और आध्यात्मिकता का मेल:

धौलाधार की चोटियों और मंदिर का शांत वातावरण आध्यात्मिकता से जोड़ता है। इसलिये किसी ने सच ही कहा है----- **"पहाड़ों की चुप्पी में माता की मौजूदगी साफ सुनाई देती है।"**

माता कुनाल पत्थरी मंदिर एक ऐसी जगह है जहां आध्यात्मिकता, प्रकृति, और संस्कृति का मिलन होता है। यह न केवल भक्तों के लिए एक पवित्र स्थल है, बल्कि इतिहास प्रेमियों और यात्रा उत्साहियों के लिए भी एक छिपा हुआ रत्न है। यहां की शांति, चाय बागानों की हरियाली, और धौलाधार की भव्यता आपको एक अनुभव देती है जो आत्मा को छू जाता है। तो अगली बार जब आप धर्मशाला की यात्रा करें, माता कुनाल पत्थरी को अपनी सूची में जरूर शामिल करें—यह एक ऐसी यात्रा होगी जो आपके दिल और दिमाग में हमेशा बनी रहेगी।

2.6 मंदिर का पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण

तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण

1. धार्मिक महत्व:

मंदिर का संबंध माँ सती से होने के कारण यह शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध है। भक्तों का मानना है कि यहाँ माँ का आशीर्वाद लेने से कठिनाइयाँ दूर होती हैं और विशेष रूप से पथरी (किडनी स्टोन) और कैंसर जैसे रोगों से मुक्ति मिलती है।

2. दिव्य जल:

मंदिर में एक पत्थर से निकलने वाला जल प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है। मान्यता है कि इस जल को पीने से स्वास्थ्य लाभ होता है, जिसके चलते दूर-दूर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

3. नवरात्रि उत्सव:

नवरात्रि के दौरान यहाँ यज्ञ, पूजन और संकीर्तन जैसे आयोजन होते हैं, जो भक्तों को माँ की भक्ति में डुबो देते हैं। इस समय मंदिर में भारी भीड़ उमड़ती है।

पर्यटकों के लिए आकर्षण

1. प्राकृतिक सौंदर्य:

मंदिर चारों ओर से चाय के बागानों और धौलाधार की बर्फ से ढकी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह शांत और मनोरम वातावरण पर्यटकों को प्रकृति के करीब ले जाता है।



चाय बागान में फोटोग्राफी के लिए एक स्थान

2. फोटोग्राफी का अवसर:

चाय बागानों में फोटोशूट करने के बाद पर्यटक अक्सर मंदिर की ओर रुख करते हैं। यहाँ का सुंदर परिदृश्य फोटोग्राफी प्रेमियों के लिए आकर्षक है।

सुलभता:

धर्मशाला और मैक्लोडगंज जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों के निकट होने के कारण यह मंदिर आसानी से यात्रा का हिस्सा बन जाता है। गगल हवाई अड्डे से इसकी दूरी मात्र 15 किलोमीटर है, और बस या टैक्सी से यहाँ पहुँचना सुविधाजनक है।

धार्मिक और पर्यटन महत्व

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला के पास, धौलाधार पर्वतों की गोद में बसा है, जहां हरे-भरे चाय बागान और घने जंगल प्राकृतिक सौंदर्य को चार चांद लगाते हैं। यह पवित्र शक्तिपीठ, जहां मां सती का कपाल गिरा, अपनी आध्यात्मिक शांति और मनोरम दृश्यों से भक्तों और प्रकृति प्रेमियों को मोहित करता है। माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जिसे कपालेश्वरी मंदिर भी कहा जाता है, न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी आकर्षक है। चाय बागानों, बर्फ़ीले पर्वतों, और शांत जंगलों का संयोजन इसे एक आदर्श गंतव्य बनाता है। हालांकि, अन्य शक्तिपीठों की तुलना में इसे अभी उतनी ख्याति नहीं मिली है, लेकिन इसकी प्राकृतिक सुंदरता और शांति इसे विशेष बनाती है।

“यह स्थल आध्यात्मिक शांति और प्राकृतिक सौंदर्य का अनूठा संगम है, जो हर भक्त और पर्यटक को आकर्षित करता है।”

अब हम देखेंगे कि माता की भक्ति भक्तों के जीवन को कैसे समृद्ध करती है।



अध्याय 3

भक्ति (स्थानीय परम्पराये और जातर)

भक्ति, आत्मा का परमात्मा के साथ अटूट बंधन है, जो प्रेम, समर्पण और विश्वास की सुगंध से सुवासित होता है। माता कुनाल पत्थरी मंदिर जैसे पवित्र स्थल, जहां धौलाधार की गोद में शांति और आध्यात्मिकता बसती है, भक्तों के हृदय को मां की कृपा से आलोकित करते हैं। यह अध्याय भक्ति के उस अनुपम भाव की खोज है, जो जीवन को अर्थ और दिशा प्रदान करता है।

स्थानीय परम्पराएँ और जातर सामुदायिक संस्कृति का अभिन्न अंग हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं को दर्शाते हैं। ये आयोजन लोगों को एकजुट करते हैं, जहाँ नृत्य, संगीत, भक्ति और उत्सव के माध्यम से स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जातर सामुदायिक एकता और परम्परागत मूल्यों को जीवंत रखने का महत्वपूर्ण साधन हैं।

3.1 क्षेत्रीय संस्कृति में माता कुनाल पत्थरी का स्थान:

सकोह की कुलदेवी

स्थानीय परम्पराओं में कुलदेवी का अत्यंत महत्व है, क्योंकि वे परिवार और वंश की रक्षक मानी जाती हैं। कुलदेवी की पूजा से सुख, समृद्धि और सुरक्षा की कामना की जाती है, और यह परम्परा पीढ़ियों से चली आ रही है। विशेष अवसरों, विवाह, या संकट के समय कुलदेवी का आशीर्वाद लेना सामुदायिक एकता और आध्यात्मिक विश्वास को मजबूत करता है। माता कुनाल पत्थरी को सकोहवासी कुलदेवी के रूप में पूजते हैं। कुनाल पत्थरी माता उनकी कुलदेवी है, इसका कारण निम्नलिखित हो सकता है।

भौगोलिक निकटता:

सकोह गाँव (सकोह अव गांव नहीं है, M.C. Dharamshala मे आ चुका है) से माता कुनाल पथरी का मंदिर कुछ दूरी पर है, जो इसे सकोह के लोगों के लिए आसानी से पहुँचने योग्य बनाता है। यह मंदिर धर्मशाला के पास स्थित है और सकोह क्षेत्र के परिवारों के लिए एक पवित्र स्थल है।

कुलदेवी के रूप में मान्यता:

1. सकोह के लगभग सभी परिवार, खासकर जो कांगड़ा की स्थानीय परंपराओं और शक्ति उपासना से जुड़े हैं, माता कुनाल पथरी को अपनी कुलदेवी मानते हैं। कुलदेवी वह देवी होती है जो परिवार की रक्षा करती है, पीढ़ियों से उनकी देखभाल करती है, और उनके सुख-समृद्धि की कामना पूरी करती है।
2. माता कुनाल पथरी को शक्तिपीठ के रूप में पूजा जाता है, क्योंकि यहाँ माता सती का कपाल गिरा था। यह इसे सकोह के लोगों के लिए और भी महत्वपूर्ण बनाता है।

चमत्कारी शक्ति:

सकोह के भक्तों का मानना है कि माता कुनाल पथरी उनकी हर मुसीबत में साथ देती हैं। कुनाल का जल, जो हमेशा भरा रहता है, कुलदेवी की शक्ति का प्रतीक माना जाता है। लोग इसे अपने घर ले जाकर पूजा करते हैं और रोगों से मुक्ति के लिए उपयोग करते हैं।

परंपराएँ और उत्सव:

- सकोह के परिवार नवरात्रि, पूर्णिमा, या विशेष पारिवारिक अवसरों पर माता कुनाल पथरी मंदिर में पूजा-अर्चना के

लिए जाते हैं। मनोकामना पूरी होने पर ढोल-नगाड़ों के साथ उत्सव मनाने की परंपरा भी है।

- कुछ परिवारों में कुलदेवी की पूजा के लिए घर में भी विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं, जिसमें माता कुनाल पथरी का आह्वान किया जाता है।

कुलदेवी की पूजा का महत्व

- सकोह के लोग माता कुनाल पथरी को अपनी रक्षक और मार्गदर्शक मानते हैं। कुलदेवी के रूप में उनकी पूजा से परिवार में सुख, शांति, और समृद्धि बनी रहती है।
- अगर कोई परिवार का सदस्य बीमार हो या कोई बड़ी समस्या आए, तो माता के दर्शन और कुनाल के जल से आशीर्वाद लेने की परंपरा है। माता कुनाल पथरी सकोह की कुलदेवी के रूप में उनकी आस्था और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है।

हो सकता है कि माता कुनाल पथरी ओर लोगो की भी कुलदेवी हो, मेरे पास जानकारी का अभाव है, मैं इस के लिये माफी का हक़दार हूँ !

माता कुनाल पथरी मंदिर के प्रति सकोह और आसपास के स्थानीय लोगों का विश्वास बहुत गहरा और अटूट है। यह विश्वास पौराणिक कथाओं, चमत्कारों, और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं पर आधारित है। खासकर सकोह के लोग, जो माता कुनाल पथरी को अपनी कुलदेवी मानते हैं, उनके जीवन में इस मंदिर का विशेष महत्व है। यहाँ मैं आपको स्थानीय लोगों के विश्वास के बारे में विस्तार से जानकारी देता हूँ:

1. माता की रक्षा और कृपा में विश्वास

- **विश्वास:**

स्थानीय लोग मानते हैं कि माता कुनाल पथरी उनके परिवार, गाँव, और समुदाय की रक्षक हैं। कुलदेवी होने के नाते, माता हर संकट में उनकी मदद करती हैं और बुरी शक्तियों से बचाती हैं।

- **उदाहरण:**

अगर कोई परिवार संकट में हो—जैसे बीमारी, आर्थिक तंगी, या पारिवारिक विवाद—तो लोग माता के दर्शन के लिए जाते हैं और उनकी कृपा से समाधान की उम्मीद करते हैं।

2. चमत्कारी जल की शक्ति

- **विश्वास:**

मंदिर में कुनाल (पत्थर की परात) में हमेशा भरा रहने वाला पानी स्थानीय लोगों के लिए माता की शक्ति का सबसे बड़ा प्रतीक है। उनका मानना है कि यह जल चमत्कारी है और इसमें औषधीय गुण हैं।

- **प्रथा:**

लोग इस जल को अपने साथ ले जाते हैं और इसे पीने, पूजा में इस्तेमाल करने, या बीमार व्यक्ति को देने से रोगों से मुक्ति की उम्मीद करते हैं। खासकर पथरी (किडनी स्टोन) और कैंसर जैसे रोगों के लिए यह जल पवित्र माना जाता है।

- **कहावत:**

सकोह के लोग कहते हैं, "**माता का पानी हर मर्ज़ की दवा है।**"

3. रोग निवारण में आस्था

- **विश्वास:**

स्थानीय लोगों का दृढ़ विश्वास है कि माता कुनाल पत्थरी के दर्शन और प्रार्थना से गंभीर बीमारियाँ ठीक हो सकती हैं। यहाँ आने वाले भक्तों की कहानियाँ इस विश्वास को और मजबूत करती हैं।

- **उदाहरण:**

सकोह और आसपास के गाँवों में लोग बताते हैं कि उनके परिवार में किसी को पथरी या दूसरी बीमारी हुई, और माता के आशीर्वाद से वे ठीक हो गए। इसीलिए बीमारी के समय यहाँ दर्शन करना आम बात है।

4. प्रकृति से जुड़ा विश्वास

- **विश्वास:**

सकोह के लोग मानते हैं कि माता कुनाल पथरी प्रकृति की नियंत्रक भी हैं। जब कुनाल में पानी कम होता है और बारिश की ज़रूरत होती है, तो माता से प्रार्थना करने पर बारिश होती है।

- **प्रथा:**

सूखे के समय गाँव वाले मंदिर में सामूहिक पूजा करते हैं और माता से वर्षा की प्रार्थना करते हैं। बारिश होने पर इसे माता का चमत्कार मानकर उत्सव मनाया जाता है।

5. मनोकामना पूर्ति की आशा

- **विश्वास:**

स्थानीय लोगों का मानना है कि माता उनकी हर मनोकामना सुनती हैं, चाहे वह नौकरी, विवाह, संतान, या समृद्धि से जुड़ी हो। माता को कुलदेवी मानने वाले परिवार विशेष रूप से इस पर भरोसा करते हैं।

- **प्रथा:**

लोग मंदिर में मन्त्रत माँगते हैं और वादा करते हैं कि मनोकामना पूरी होने पर वे ढोल-नगाड़ों के साथ माता का धन्यवाद करेंगे। सकोह में यह परंपरा बहुत आम है।

6. शक्तिपीठ के रूप में श्रद्धा

- **विश्वास:**

माता सती के कपाल के यहाँ गिरने की कथा के कारण सकोह के लोग मंदिर को शक्तिपीठ मानते हैं। उनका विश्वास है कि यहाँ माता की विशेष शक्ति निवास करती है, जो भक्तों को आशीर्वाद देती है।

- **प्रभाव:**

इस विश्वास के कारण सकोह के लोग मंदिर को अपने जीवन का आधार मानते हैं और हर बड़े फैसले या शुभ काम से पहले यहाँ आशीर्वाद लेते हैं।

7. सांस्कृतिक और पारिवारिक बंधन

- **विश्वास:**

सकोह के लोग माता कुनाल पत्थरी को अपने पूर्वजों से जोड़ते हैं। उनका मानना है कि माता उनकी पीढ़ियों से रक्षा करती आई हैं और आगे भी करती रहेंगी।

- **प्रथा:**

परिवार के बड़े-बुजुर्ग बच्चों को माता की कहानियाँ सुनाते हैं और मंदिर में पूजा की परंपरा को बनाए रखते हैं। नवरात्रि और विशेष अवसरों पर सकोह से लोग समूह में मंदिर जाते हैं।

स्थानीय लोगों की बातों से उदाहरण

- एक बुजुर्ग कहते हैं: "हमारी माता हमारी माँ हैं। जब कोई रास्ता न दिखे, तो कुनाल पत्थरी जाओ, सब ठीक हो जाएगा।"

- एक युवा भक्त का कहना है: "मुझे नौकरी नहीं मिल रही थी। माता से माँगा, और एक महीने में काम मिल गया। अब हर साल धन्यवाद देने आता हूँ।"

सकोह के स्थानीय लोगों का माता कुनाल पत्थरी में विश्वास सिर्फ धार्मिक नहीं, बल्कि उनके जीवन का हिस्सा है। वे माता को अपनी कुलदेवी, रक्षक, और चमत्कार करने वाली शक्ति मानते हैं। कुनाल का जल, रोगों से मुक्ति, और मनोकामनाओं की पूर्ति में उनकी आस्था इस विश्वास को और गहरा करती है। यह मंदिर उनके लिए एक आध्यात्मिक और भावनात्मक सहारा है, जो उनकी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखता है।

3.2 कुछ प्राचीन कहानियाँ का भक्ति से जुड़ाव:

माता कुनाल पत्थरी मंदिर और सकोह क्षेत्र से जुड़ी प्राचीन कहानियाँ स्थानीय लोकमान्यताओं, पौराणिक कथाओं, और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं पर आधारित हैं। हालाँकि इनमें से कुछ कहानियाँ लिखित ग्रंथों में स्पष्ट रूप से दर्ज नहीं हैं, लेकिन ये मौखिक रूप से सकोह और कांगड़ा के लोगों के बीच प्रचलित हैं। ये कहानियाँ माता की शक्ति, उनके चमत्कार, और सकोह के लोगों के साथ उनके संबंध को दर्शाती हैं। यहाँ कुछ प्राचीन कहानियाँ दी जा रही हैं:

1. माता सती के कपाल की कथा

- **कहानी:**

यह सबसे प्राचीन और पौराणिक कथा है, जो माता कुनाल पत्थरी को शक्तिपीठ बनाती है। जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया, तो भगवान शिव उनके शव को लेकर तांडव करने लगे। भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर को खंडित किया, और उनके अंग जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ शक्तिपीठ बने। सकोह के लोग मानते हैं कि माता का कपाल (सिर) कुनाल पत्थरी में गिरा था।

- **चमत्कार:**

इस कथा के अनुसार, जब कपाल यहाँ गिरा, तो एक चट्टान पर कुनाल (पत्थर की परात) बन गई, जो हमेशा पानी से भरी रहती है। स्थानीय लोग इसे माता की शक्ति का प्रतीक मानते हैं और कहते हैं कि यह कुनाल उनकी उपस्थिति का प्रमाण है।

- **प्रभाव:**

इस कथा ने सकोह के लोगों में माता को कुलदेवी के रूप में पूजने की परंपरा शुरू की।

2. राक्षस और माता की लड़ाई

- **कहानी:**

प्राचीन काल में सकोह और कांगड़ा क्षेत्र में एक शक्तिशाली राक्षस रहता था, जो लोगों को परेशान करता था। उसने गाँव वालों को सूखे और बीमारी से पीड़ित कर दिया था। गाँव के एक पुजारी को सपने में माता कुनाल पत्थरी ने दर्शन दिए और कहा, "मेरे पास आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी।" पुजारी ने मंदिर में जाकर प्रार्थना की।

- **चमत्कार:**

माता ने राक्षस से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। इसके बाद मंदिर के कुनाल में पानी प्रकट हुआ, और क्षेत्र में बारिश हुई, जिससे सूखा खत्म हो गया। राक्षस के मरने से लोग बीमारी से भी मुक्त हो गए।

- **प्रभाव:**

सकोह के लोग इस कहानी को याद करते हैं और मानते हैं कि माता उनकी रक्षक हैं। यह कथा माता को प्रकृति और शक्ति की देवी के रूप में स्थापित करती है।

3. सकोह के पहले भक्त की कथा

- **कहानी:**

बहुत समय पहले सकोह में एक गरीब किसान रहता था, जिसके पास खेती के लिए पानी नहीं था। एक दिन वह जंगल में भटक गया और उसे एक चट्टान के पास पानी की धारा दिखी, जहाँ माता की पिंडी थी। उसने वहाँ प्रार्थना की और पानी अपने खेतों तक ले गया। उसकी फसल हरी-भरी हो गई, और वह समृद्ध हो गया।

- **चमत्कार:**

उसने गाँव वालों को बताया कि यह माता कुनाल पत्थरी की कृपा थी। इसके बाद उस स्थान पर मंदिर बनाया गया, और कुनाल का पानी चमत्कारी माना जाने लगा। सकोह के लोग उस किसान को माता का पहला भक्त मानते हैं।

- **प्रभाव:**

यह कहानी सकोह के लोगों में माता को कुलदेवी मानने की शुरुआत की नींव मानी जाती है।

4. माता और सूखे का अंत

- **कहानी:**

सकोह में एक बार भयंकर सूखा पड़ा। नदियाँ सूख गईं, और लोग पानी के लिए तरस रहे थे। गाँव के बुजुर्गों ने माता कुनाल पत्थरी से प्रार्थना करने का फैसला किया। उन्होंने मंदिर में रात भर जागरण किया और माता से बारिश की माँग की।

- **चमत्कार:**

अगली सुबह आसमान में बादल छा गए, और तेज़ बारिश हुई। कुनाल फिर से पानी से भर गया, और गाँव की फसलें बच

गई। लोग मानते हैं कि माता ने उनकी पुकार सुनी और सूखे को खत्म किया।

- **प्रभाव:**

इस कथा से सकोह के लोग माता को प्रकृति की नियंत्रक मानने लगे। आज भी सूखे के समय यहाँ प्रार्थना की जाती है।

5. बीमार बच्चे की कहानी

- **कहानी:**

प्राचीन समय में सकोह की एक माँ का बच्चा लाइलाज बीमारी से ग्रस्त था। उस की आँखों में आँसू थे, जब वह माता कुनाल पत्थरी के मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ रही थीं। उसके बेटे को डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था, लेकिन एक स्वप्न में माता ने उन्हें इस पवित्र स्थल पर बुलाया। जैसे ही वह उस माता की पिंडी के पास आई और पुजारी ने कपाल से जल लेकर उन के ऊपर छिड़का, उनके हृदय में शांति का एक अथाह सागर उमड़ पड़ा।

“माता सबकी सुनती हैं,” वह जोर से बोली। और अगले दिन, उनके बेटे की हालत में चमत्कारी सुधार हुआ। यह केवल उस की कहानी नहीं है। कुनाल पत्थरी का यह पत्थर सदियों से असंख्य भक्तों की प्रार्थनाओं का साक्षी रहा है। जहाँ श्रद्धा है, हर असंभव को संभव बनाती है।

- **चमत्कार:**

कुछ दिनों बाद बच्चा पूरी तरह ठीक हो गया। माँ ने इसे माता का चमत्कार माना और गाँव में ढोल-नगाड़ों के साथ माता का धन्यवाद किया।

- **प्रभाव:**

इस कहानी ने माता को रोग निवारक के रूप में प्रसिद्धि दी, और सकोह के लोग आज भी बीमारी में माता के पास जाते हैं।

इन कहानियों का महत्व

- ये प्राचीन कहानियाँ सकोह के लोगों के विश्वास को मजबूत करती हैं कि माता कुनाल पत्थरी उनकी कुलदेवी हैं, जो हर संकट में उनकी रक्षा करती हैं।
- कुनाल का जल, राक्षसों से लड़ाई, और प्रकृति पर नियंत्रण जैसी बातें माता की शक्ति को दर्शाती हैं।
- ये कहानियाँ सकोह की संस्कृति का हिस्सा बन गई हैं और बच्चों को पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती हैं।

6.माता और सकोह के खोए हुए योद्धा की कथा

- **कहानी:**

प्राचीन काल में सकोह गाँव का एक युवा योद्धा था, जो अपने परिवार का इकलौता सहारा था। एक बार वह पड़ोसी क्षेत्र के साथ युद्ध में गया, लेकिन कई दिनों तक उसकी कोई खबर नहीं आई। गाँव वालों ने उसे मृत मान लिया, और उसकी माँ बहुत दुखी थी। एक रात उसे सपने में एक प्रकाशमान देवी दिखी, जिन्होंने कहा, "मेरे पास आओ, मैं तुम्हारे बेटे को लौटा दूँगी।" माँ को लगा कि यह माता कुनाल पत्थरी का संदेश है।

- **चमत्कार:**

माँ अगले दिन मंदिर गई और माता से अपने बेटे की वापसी की प्रार्थना की। उसने कुनाल के जल से अपने घर की चौखट पर छींटे मारे और माता का जाप शुरू किया। तीसरे दिन, गाँव में हलचल मच गई—योद्धा जिंदा लौट आया था। उसने

बताया कि युद्ध में वह घायल होकर जंगल में भटक गया था, लेकिन एक रहस्यमयी प्रकाश ने उसे रास्ता दिखाया और सकोह तक पहुँचाया। गाँव वालों ने इसे माता का चमत्कार माना।

- **प्रभाव:**

इस घटना के बाद सकोह के लोग माता कुनाल पथरी को अपने खोए हुए लोगों को वापस लाने वाली देवी मानने लगे। आज भी अगर कोई परिवार का सदस्य गायब हो जाए या लंबे समय तक न लौटे, तो लोग माता से प्रार्थना करते हैं।

7. माता और सकोह की बंजर भूमि

- **कहानी:**

बहुत पहले सकोह की जमीन बंजर हो गई थी। फसलें नहीं उगती थीं, और लोग भूख से मर रहे थे। गाँव के एक बूढ़े ने कहा कि यह किसी श्राप का परिणाम है और माता कुनाल पथरी ही इसे हटा सकती हैं। गाँव वालों ने मंदिर में जाकर सामूहिक पूजा की और माता से प्रार्थना की कि उनकी जमीन फिर से उपजाऊ हो जाए।

- **चमत्कार:**

पूजा के बाद उस रात तेज बारिश हुई, और कुनाल का पानी बहकर गाँव की ओर आया। अगले दिन से जमीन में हरियाली दिखने लगी, और कुछ ही महीनों में फसलें लहलहाने लगीं। लोग मानते हैं कि माता ने कुनाल के जल से श्राप हटाया और गाँव को जीवन दिया।

- **प्रभाव:**

इस कहानी से सकोह के लोग माता को अपनी समृद्धि की देवी मानते हैं। आज भी खेती से पहले माता का आशीर्वाद लिया जाता है।

8. माता का गुप्त खजाना

- **कहानी:**

सकोह के एक गरीब परिवार की बेटी को एक दिन जंगल में मंदिर के पास एक चमकता पत्थर मिला। उसने उसे घर ले जाकर अपने पिता को दिखाया। पिता ने उसे माता कुनाल पथरी को चढ़ाने का फैसला किया। जब वे मंदिर पहुँचे और पत्थर को कुनाल में रखा, तो वह सोने में बदल गया। पुजारी ने कहा कि यह माता का आशीर्वाद है और इसे गाँव के कल्याण के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

- **चमत्कार:**

उस सोने से गाँव में एक कुआँ बनवाया गया, जिससे पानी की समस्या खत्म हुई। लोग मानते हैं कि माता ने अपने भक्तों को खजाना देकर उनकी गरीबी दूर की।

- **प्रभाव:**

यह कहानी सकोह में प्रचलित है कि माता अपने सच्चे भक्तों को धन और समृद्धि देती हैं। कुछ लोग आज भी मंदिर के आसपास "माता के खजाने" की तलाश में जाते हैं, हालाँकि यह प्रतीकात्मक रूप से उनकी कृपा को दर्शाता है।

इन कहानियों की खासियत

- ये कहानियाँ सकोह के लोगों के लिए माता कुनाल पथरी को सिर्फ एक देवी नहीं, बल्कि उनकी माँ, रक्षक, और जीवनदायिनी बनाती हैं।
- हर कहानी में माता की शक्ति और दया का एक पहलू उजागर होता है—चाहे वह खोए हुए को लौटाना हो, बंजर जमीन को उपजाऊ बनाना हो, या गरीबी दूर करना हो।

- सकोह के लोग इन कहानियों को अपनी कुलदेवी के चमत्कारों के सबूत के रूप में देखते हैं और इन्हें अपनी पहचान का हिस्सा मानते हैं।

3.3 धर्मशाला के लोगों का मंदिर से जुड़ाव

- **रोज़मर्रा का हिस्सा:**

मंदिर धर्मशाला से नज़दीक होने के कारण लोग अक्सर यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। सुबह-शाम यहाँ स्थानीय लोगों की चहल-पहल रहती है।

- **उत्सव और परंपराएँ:**

नवरात्रि के दौरान धर्मशाला से भक्तों की भीड़ मंदिर में उमड़ती है। लोग माता की भेंट चढ़ाते हैं और सामूहिक पूजा में हिस्सा लेते हैं।

- **कहानियों का प्रसार:**

धर्मशाला के लोग माता के चमत्कारों की कहानियाँ—जैसे बीमारियों से मुक्ति, खोए हुए की वापसी, या समृद्धि की प्राप्ति—अपने बच्चों और रिश्तेदारों को सुनाते हैं, जिससे यह विश्वास पीढ़ियों तक बना रहता है।

धर्मशाला के लोग माता कुनाल पत्थरी को अपनी माँ, रक्षक, और चमत्कार करने वाली देवी मानते हैं। यह मंदिर उनके लिए सिर्फ एक पूजा स्थल नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा है। चाय बागानों और धौलाधार पर्वतों के बीच बसा यह मंदिर उनकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है।

शादी के बाद माता कुनाल पत्थरी का आशीर्वाद लेना धर्मशाला, सकोह, और आसपास के क्षेत्रों के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण परंपरा है। यहाँ के स्थानीय लोग मानते हैं कि माता का आशीर्वाद नवविवाहित जोड़े के जीवन में सुख, समृद्धि, और सुरक्षा लाता है। खासकर जब

माता कुनाल पथरी को कुलदेवी माना जाता हो, तो शादी के बाद उनके दर्शन और आशीर्वाद लेना और भी खास हो जाता है। यहाँ मैं आपको इस परंपरा और इसके महत्व के बारे में विस्तार से बताता हूँ।

शादी के बाद माता कुनाल पथरी का आशीर्वाद क्यों?

1. नए जीवन की शुरुआत:

- शादी एक नया जीवन शुरू करने का प्रतीक है, और धर्मशाला व सकोह के लोग मानते हैं कि माता कुनाल पथरी का आशीर्वाद इस नए सफर को शुभ और सफल बनाता है। माता को कुलदेवी के रूप में पूजने वाले परिवारों में यह परंपरा अनिवार्य मानी जाती है।

2. सुरक्षा और सुख की कामना:

- स्थानीय विश्वास है कि माता नवविवाहित जोड़े को बुरी नज़र, संकटों, और पारिवारिक कलह से बचाती हैं। उनका आशीर्वाद लेकर दंपति अपने वैवाहिक जीवन को मजबूत करते हैं।

3. संतान और समृद्धि का आशीर्वाद:

- माता कुनाल पथरी को शक्ति और कृपा की देवी माना जाता है। लोग मानते हैं कि शादी के बाद उनके दर्शन करने से दंपति को जल्दी संतान सुख और आर्थिक समृद्धि प्राप्त होती है।

4. कुलदेवी की परंपरा:

- सकोह और धर्मशाला के कई परिवारों में माता कुनाल पथरी कुलदेवी हैं। शादी के बाद कुलदेवी का आशीर्वाद लेना परिवार की परंपरा का हिस्सा होता है, ताकि नई बहू को भी कुल की रक्षा करने वाली देवी का संरक्षण मिले।

शादी के बाद माता के दर्शन की प्रक्रिया

- **समय:**

शादी के तुरंत बाद या पहले शुभ अवसर (जैसे नवरात्रि, पूर्णिमा, या कोई पारिवारिक मुहूर्त) पर दंपति मंदिर जाते हैं। कुछ परिवार शादी के एक महीने के भीतर दर्शन की योजना बनाते हैं।

- **तैयारी:**

- नवविवाहित जोड़ा पारंपरिक कपड़े पहनता है। दुल्हन अक्सर लाल या शुभ रंग की साड़ी या सूट पहनती है, जो माता को प्रिय माना जाता है।
- माता को चढ़ाने के लिए फूल, नारियल, चुनरी, मिठाई, और फल साथ ले जाते हैं।

- **पूजा और प्रार्थना:**

- मंदिर में पुजारी नवविवाहित जोड़े के लिए विशेष पूजा करते हैं। दंपति माता की पिंडी और कुनाल के सामने प्रार्थना करते हैं।
- वे अपने वैवाहिक जीवन के लिए सुख, शांति, और समृद्धि की कामना करते हैं।

- **कुनाल का जल:**

- दंपति कुनाल के जल को अपने साथ ले जाते हैं। इसे घर में रखकर पूजा करते हैं और इसे पीने से स्वास्थ्य और शुभता की कामना करते हैं।

स्थानीय मान्यताएँ और विश्वास

- **बुरी नज़र से बचाव:**

धर्मशाला के लोग मानते हैं कि शादी के बाद माता का आशीर्वाद लेने से नवविवाहित जोड़े पर किसी की बुरी नज़र नहीं पड़ती। कुनाल का जल घर में छिड़कने से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है।

- **संतान प्राप्ति:**

कुछ परिवारों का विश्वास है कि माता के दर्शन के बाद जल्दी संतान सुख मिलता है। कई जोड़े यहाँ मन्त्रत माँगते हैं और संतान होने पर धन्यवाद देने लौटते हैं।

- **पारिवारिक एकता:**

माता का आशीर्वाद परिवार में एकता और प्रेम बनाए रखता है। सकोह और धर्मशाला के लोग कहते हैं कि कुलदेवी की कृपा से सास-बहू और अन्य रिश्तों में मधुरता रहती है।

शादी के बाद माता कुनाल पथरी का आशीर्वाद लेना धर्मशाला और सकोह के लोगों के लिए एक पवित्र और भावनात्मक परंपरा है। यह न केवल धार्मिक विश्वास को दर्शाता है, बल्कि परिवार की एकता और नए जीवन की शुरुआत को माता की कृपा से जोड़ता है। माता का कुनाल का जल और उनकी शक्ति में लोगों का विश्वास इस परंपरा को और मजबूत करता है।

3.4 माता कुनाल पथरी की पूजा की प्रक्रिया

1. तैयारी (Preparation)

- **समय का चयन:**

- पूजा के लिये आमतौर पर कुछ दिनों या महीने के शुभ दिन चुने जाते हैं। शुभ मुहूर्त (जैसे नवरात्रि, पूर्णिमा, या मंगलवार/रविवार) को प्राथमिकता दी जाती है।

- **कपड़े:**

- सभी पारंपरिक या स्वच्छ परिधान पहनते हैं। स्त्रिया लाल, पीली, या हरी साड़ी/सूट पहनती है, जो माता को प्रिय हैं। पुरुष: कुर्ता-पायजामा या अपनी पसंद पहनते हैं।

- **सामग्री:**

- पूजा के लिए फूल (खासकर गेंदे और गुडहल), नारियल, लाल चुनरी, मिठाई (लड्डू या हलवा), फल, धूप, दीपक, कपूर, रोली, चंदन, और एक लोटा पानी साथ ले जाते हैं।
- कुछ लोग माता को भेंट के रूप में चूड़ियाँ, सिंदूर, या छोटी मूर्ति भी चढ़ाते हैं।

2. मंदिर में पूजा (Puja at the Temple)

- **मंदिर पहुँचना:**

- सभी सुबह जल्दी मंदिर पहुँचते हैं। परिवार के बड़े-बुजुर्ग भी साथ जा सकते हैं।

- **प्रवेश और शुद्धिकरण:**

- मंदिर में प्रवेश से पहले हाथ-पैर धोए जाते हैं। कुछ लोग मंदिर के बाहर कुनाल के जल से छींटे मारते हैं।

- **माता के दर्शन:**

- सभी माता की पिंडी और कुनाल के सामने खड़े होते हैं। पुजारी या स्वयं मंत्र पढ़ते हुए माता को प्रणाम करते हैं। आम मंत्र हैं:

- "ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी..."
- या "या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता..."
- **पूजा की शुरुआत:**
 - **दीप प्रज्वलन:**
पुजारी या दंपति एक दीपक जलाते हैं और माता के सामने रखते हैं।
 - **रोली-चंदन:**
माता की पिंडी पर रोली और चंदन का तिलक लगाया जाता है।
 - **फूल और चुनरी:**
माता को फूलों की माला और लाल चुनरी चढ़ाई जाती है।
 - **भेंट:**
नारियल, मिठाई, और फल माता को अर्पित किए जाते हैं। नारियल को फोड़कर माता को चढ़ाया जा सकता है।
- **आरती:**
 - पुजारी माता की आरती करते हैं, जिसमें दंपति और अन्य भक्त शामिल होते हैं। "जय अम्बे गौरी..." या "ॐ जय दुर्गे माता..." जैसी आरतियाँ गाई जाती हैं।
 - आरती के बाद कपूर जलाया जाता है और माता को दिखाया जाता है।

- **प्रार्थना:**

- सभी अपने जीवन के लिए सुख, शांति, संतान, और समृद्धि की प्रार्थना करता है। कुछ लोग मन्त्र भी माँगते हैं, जैसे "हमें संतान सुख दें, हम हर साल आपके दर्शन करेंगे।"

- **कुनाल का जल:**

- पूजा के बाद कुनाल के जल को एक छोटे बर्तन में लेते हैं। इसे घर ले जाकर पूजा स्थान पर रखा जाता है और थोड़ा-थोड़ा पीने या छिड़कने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

3. घर पर पूजा (Puja at Home)

- अगर मंदिर जाना संभव न हो, तो घर पर भी माता कुनाल पत्थरी की पूजा की जा सकती है:
 - एक छोटी मूर्ति या तस्वीर को पूजा स्थान पर रखें।
 - लाल कपड़ा बिछाकर उस पर माता की तस्वीर/मूर्ति स्थापित करें।
 - दीपक जलाएँ, धूप जलाएँ, और रोली-चंदन से तिलक करें।
 - फूल, मिठाई, और नारियल चढ़ाएँ।
 - माता के मंत्रों का जाप करें और अपने वैवाहिक जीवन के लिए प्रार्थना करें।
 - अगर कुनाल का जल उपलब्ध हो, तो उसे पूजा में शामिल करें।

हालांकि, माता कुनाल पथरी के लिए कोई विशिष्ट मंत्र या आरती मेरे पास उपलब्ध नहीं है जो आधिकारिक रूप से प्रमाणित हो, लेकिन सामान्य रूप से माता दुर्गा या शक्ति के स्वरूपों की पूजा में उपयोग होने वाले कुछ मंत्र और आरती यहाँ साझा कर रहा हूँ, जिन्हें आप माता कुनाल पथरी की भक्ति में प्रयोग कर सकते हैं। ये मंत्र और आरती माता की कृपा प्राप्त करने में सहायक हो सकते हैं:

मंत्र:

1. **दुर्गा बीज मंत्र:**
2. ॐ दुं दुर्गायै नमः
3. (इस मंत्र का जाप माता की शक्ति और सुरक्षा के लिए किया जाता है।)
4. **सर्वमंगल मांगल्ये:**
5. सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
6. शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
7. (यह मंत्र माता के सभी रूपों को समर्पित है और सुख-समृद्धि के लिए प्रभावशाली है।)
8. **साधारण शक्ति मंत्र:**
9. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
10. (यह नवरात्रि में प्रयोग होने वाला शक्तिशाली मंत्र है।)

माता की आरती:

यहाँ माँ दुर्गा की एक लोकप्रिय आरती दी जा रही है, जिसे आप माता कुनाल पथरी के लिए भी गा सकते हैं:

जय अम्बे गौरी:

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

मांग सिन्दूर बिराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥
ॐ जय अम्बे गौरी॥

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरू।

बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

भव सागर तारणि, कारण करुणा मयी।

जो तुमको ध्यावत, नर नरक नहिं जायी॥

ॐ जय अम्बे गौरी॥

घर पर पूजा की एक ओर विधि:

मैं घर पर पूजा करने की एक ओर विधि आप सभी को बता रहा हूँ, सरल और स्टीक तारीका इससे भी आप अपनी मनोकामना माता जी को बता सकते हैं:-

माता कुनाल पत्थरी की पूजा विधि

माता कुनाल पत्थरी की पूजा भक्ति, श्रद्धा और पवित्रता के साथ की जाती है। यह पूजा विधि माता की कृपा प्राप्त करने, जीवन में सुख-शांति और समृद्धि लाने, तथा भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करने के लिए की जाती है। नीचे माता कुनाल पत्थरी की पूजा की विस्तृत विधि दी गई है, जो सामान्य देवी पूजा पर आधारित है और भक्तों के लिए सरल और प्रभावी है।

पूजा की तैयारी

पूजा शुरू करने से पहले निम्नलिखित तैयारियाँ करें:

1. पवित्रता:

पूजा से पहले स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल को गंगाजल या स्वच्छ जल से शुद्ध करें।

2. पूजा सामग्री: निम्नलिखित सामग्री एकत्र करें:

- माता कुनाल पत्थरी की मूर्ति या चित्र
- लाल या पीला कपड़ा (माता के आसन के लिए)
- फूल (विशेष रूप से लाल या गुलाबी फूल, जैसे गेंदा, गुलाब)
- दीपक, तेल या घी, और रुई की बत्ती
- धूपबत्ती और धूप धारक
- रोली, चंदन, अक्षत (चावल)
- कुमकुम, हल्दी
- नैवेद्य (प्रसाद के लिए मिठाई, फल, या खीर)
- पान, सुपारी, लौंग, इलायची
- जल से भरा हुआ कलश और आम के पत्ते
- घंटी और शंख (यदि उपलब्ध हो)

3. पूजा स्थल: एक स्वच्छ स्थान चुनें, जहाँ माता की मूर्ति या चित्र को लाल या पीले कपड़े पर स्थापित करें। पूजा स्थल को फूलों और रंगोली से सजाएँ।

पूजा की विधि

माता कुनाल पत्थरी की पूजा निम्नलिखित चरणों में की जा सकती है:

1. संकल्प

- पूजा शुरू करने से पहले, हाथ में जल, फूल, और अक्षत लेकर संकल्प करें।
- संकल्प मंत्र:

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री माता कुनाल पत्थरी प्रसाद सिद्ध्यर्थं मम सर्व मनोरथ सिद्ध्यर्थं पूजा करिष्ये।

- संकल्प में अपनी मनोकामना और पूजा का उद्देश्य मन में दोहराएँ। फिर जल को जमीन पर छोड़ दें।

2. ध्यान और आवाहन

- माता का ध्यान करें। माता कुनाल पत्थरी की छवि को मन में लाएँ, जो दया, शक्ति, और करुणा की प्रतीक हैं।
- आवाहन मंत्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं माता कुनाल पत्थरी आवाहयामि स्थापयामि।

- माता को अपने सामने उपस्थित होने का आवाहन करें और उन्हें आसन पर विराजमान करने की प्रार्थना करें।

3. आसन और स्नान

- माता को आसन अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी आसनं समर्पयामि।

- माता की मूर्ति या चित्र को जल, दूध, और गंगाजल से स्नान कराएँ। प्रत्येक स्नान के बाद मंत्र बोलें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी स्नानं समर्पयामि।

4. वस्त्र और आभूषण

- माता को लाल या पीला वस्त्र (चुनरी) अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी वस्त्रं समर्पयामि।

- कुमकुम, चंदन, और फूलों से माता का श्रृंगार करें।

5. पुष्प और माला अर्पण

- माता को फूलों की माला और ताजे फूल अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी पुष्पमालां समर्पयामि।

6. धूप और दीप

- धूप जलाएँ और माता को अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी धूपं समर्पयामि।

- घी या तेल का दीपक जलाएँ और माता के समक्ष रखें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी दीपं समर्पयामि।

7. नैवेद्य और प्रसाद

- माता को नैवेद्य के रूप में मिठाई, फल, या खीर अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी नैवेद्यं समर्पयामि।

- जल अर्पित करें:

ॐ माता कुनाल पत्थरी जलं समर्पयामि।

8. मंत्र जाप

- माता कुनाल पत्थरी के मंत्र का जाप करें। यदि कोई विशिष्ट मंत्र उपलब्ध नहीं है, तो सामान्य देवी मंत्र का जाप कर सकते हैं, जैसे:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

या

ॐ माता कुनाल पत्थरी नमः।

- मंत्र जाप 108 बार करें, माला का उपयोग करते हुए।

9. आरती

- माता की आरती करें। यदि माता कुनाल पत्थरी की विशिष्ट आरती उपलब्ध है, तो उसे गाएँ। अन्यथा, सामान्य दुर्गा आरती गा सकते हैं, जैसे:

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी...

- आरती के दौरान घंटी बजाएँ और दीपक को माता के समक्ष घुमाएँ।

10. प्रार्थना और क्षमा याचना

- माता से अपनी मनोकामना और प्रार्थना करें।

हे माता कुनाल पत्थरी, मेरे जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करें। मेरी भक्ति को स्वीकार करें।

- पूजा में हुई किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा माँगें:
- ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।

यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥

11. प्रसाद वितरण

- पूजा के अंत में प्रसाद को सभी भक्तों में बाँटें।

विशेष टिप्स

- **नवरात्रि में पूजा:**

माता कुनाल पत्थरी की पूजा विशेष रूप से नवरात्रि के दौरान की जा सकती है। इस दौरान नौ दिनों तक माता के विभिन्न स्वरूपों की पूजा करें।

- **शुद्धता:**

पूजा के दौरान मन और शरीर की शुद्धता बनाए रखें। मांस, मदिरा, और नकारात्मक विचारों से दूर रहें।

- **स्थानीय परंपराएँ:**

यदि माता कुनाल पत्थरी के मंदिर या पूजा की कोई विशेष परंपरा है, तो उसे अवश्य शामिल करें।

- **भक्ति भाव:**

पूजा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है भक्ति। माता के प्रति पूर्ण समर्पण और विश्वास के साथ पूजा करें।

माता कुनाल पत्थरी की पूजा भक्तों के लिए आध्यात्मिक शक्ति और शांति का स्रोत है। यह पूजा विधि भक्तों को माता की कृपा प्राप्त करने और उनके चमत्कारों को अनुभव करने में मदद करेगी। माता की भक्ति से जीवन में सकारात्मकता और समृद्धि आएगी।

3.5 चुन्नी बांधने की परम्परा:

चुन्नी बांधने का रिवाज माता के प्रति श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का हिस्सा है, जहाँ भक्त अपनी आस्था के जरिए माता से जुड़ते हैं।

भारत के विभिन्न हिस्सों में, विशेष रूप से माता के मंदिरों में, भक्त अपनी मन्नत (मनोकामना) मांगने के लिए चुन्नी चढ़ाने या बांधने की प्रथा का पालन करते हैं। यह रिवाज खास तौर पर नवरात्रि या अन्य पवित्र अवसरों पर देखा जाता है। चुन्नी को माता की मूर्ति पर चढ़ाया जाता है या मंदिर के किसी पवित्र स्थान, जैसे पेड़, दीवार, या विशेष संरचना पर बांधा जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक है, और माता इस भेंट से प्रसन्न होकर भक्त की मनोकामना पूरी करती हैं।

उदाहरण के लिए:

- कई मंदिरों में, जैसे वैष्णो देवी, छिन्नमस्तिका मंदिर (मुजफ्फरपुर), या अन्य स्थानीय माता मंदिरों में, भक्त चुनरी

या चुन्नी बांधते हैं और अपनी इच्छा (जैसे संतान प्राप्ति, विवाह, स्वास्थ्य, या समृद्धि) मांगते हैं।

- प्रथा के अनुसार, जब मन्त्रत पूरी हो जाती है, भक्त दोबारा मंदिर में आकर धन्यवाद के रूप में श्रृंगार सामग्री, चुनरी, या अन्य भेंट चढ़ाते हैं।

मुझे पुजारी ने यह बताया कि चुन्नी बांधना माता के प्रति समर्पण और विश्वास का प्रतीक है। यह एक तरह से माता के साथ एक "वादा" या "संकल्प" होता है कि भक्त अपनी मन्त्रत पूरी होने पर माता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेगा। मंदिर के पुजारी द्वारा बताई गई बात कि माता की पिंडी की दीवार पर चुन्नी बांधकर मन्त्रत मांगने का कार्य इस परंपरा की गहराई और आस्था को दर्शाता है। भक्त चुन्नी बांधते हैं और मन्त्रत मांगते हैं, जो इस बात का संकेत है कि वह माता की कृपा पर भरोसा करते हुए अपनी इच्छा को उनके चरणों में रख देते हैं। पुजारी द्वारा यह सलाह देना भी मंदिर की परंपरा का हिस्सा हो सकता है, क्योंकि वे भक्तों को माता से जोड़ने का माध्यम बनते हैं।

मन्त्रत का भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू

चुन्नी बांधने और मन्त्रत मांगने की प्रक्रिया में एक गहरी भावना छिपी है। यह सिर्फ एक रिवाज नहीं, बल्कि माता के प्रति श्रद्धा और उम्मीद का प्रतीक है। कुनाल पत्थरी मंदिर में माता को विशेष रूप से रोगों से मुक्ति देने वाली और कष्ट हरने वाली माना जाता है। अगर आपकी मन्त्रत किसी खास उद्देश्य (जैसे स्वास्थ्य, सफलता, या परिवार की भलाई) से जुड़ी है, तो यह प्रथा उस विश्वास को मजबूत करती है कि माता आपकी प्रार्थना सुनेंगी।

आगे क्या करें?

- **विश्वास बनाए रखें:**

मन्त्रत मांगने के बाद माता पर भरोसा रखना और नियमित रूप से उनकी प्रार्थना करना इस प्रक्रिया का हिस्सा है। कई

भक्त मानते हैं कि माता सही समय पर उनकी मन्नत पूरी करती हैं।

- **मन्नत पूरी होने पर:**

माता ने आपकी मन्नत सुनी और पूरी की, तो परंपरा के अनुसार आप मंदिर में दोबारा जाकर धन्यवाद दे सकते हैं। इसमें चुनरी, मिठाई, या कोई अन्य भेंट चढ़ाई जा सकती है, जैसा कि पुजारी ने सुझाते हैं।

- **पुजारी से और जानें:**

अगर आप भी मंदिर जाएँ, तो पुजारी से इस रिवाज के बारे में और पूछ सकते हैं—शायद कोई विशेष मंत्र, पूजा, या अनुष्ठान हो जो मन्नत के साथ जुड़ा हो।

यह एक पवित्र और सकारात्मक कदम है। माता आपकी भी और आपके परिवार की भी मन्नत जल्द पूरी करें, यही कामना है।

3.6 नवरात्रो में मंदिर में विशेष आयोजन और माहौल:

यह सुनकर बहुत अच्छा लगेगा कि अष्टमी के दिन माता कुनाल पत्थरी के मंदिर में कन्या पूजन का इतना विशेष आयोजन होता है। नवरात्रि की अष्टमी को कन्या पूजन का बहुत महत्व होता है, और माता का आशीर्वाद लेकर कन्याओं की पूजा करना भक्तों के लिए एक पवित्र और भावनात्मक अनुभव होता है। भारी भीड़ का होना इस बात का प्रमाण है कि माता के प्रति लोगों की कितनी गहरी आस्था है और यह मौका कितना खास है।

उस दिन भजन, पूजा, कन्याओं का सम्मान, और माता का आशीर्वाद—यह सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य बनाता है। इससे माता कुनाल पत्थरी की महिमा और वहाँ की परंपराओं का महत्व साफ झलक रहा होता है।

उस दिन का माहौल सचमुच जीवंत और मन को छू लेने वाला होता है। माता के भजन गाती हुई स्त्रियाँ, नौ दिनों तक चलने वाला माता का पाठ करते पुजारी, और भक्तों की ओर से चढ़ाए गए प्रसाद, चुनरी, और नारियल को माता को समर्पित कर फिर भक्तों में बाँटते हुए पुजारी—यह सब मिलकर एक अलौकिक भक्ति का चित्र बनाता है।

आपको यह जानकारी दे कर मैं और भी खुशी अनुभव कर रहा हूँ कि मैं हर नवरात्रि में माता कुनाल पथरी के दर्शन और कन्या पूजन के लिए जाता हूँ। यह आपकी आस्था और समर्पण को दर्शाता है। माता का आशीर्वाद लेकर कन्याओं को सम्मान देता हूँ।

यह मेरे लिये खास परंपरा है जो मेरे लिये सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, माता कुनाल पथरी का मंदिर न सिर्फ एक शक्तिपीठ है, बल्कि भक्तों के लिए एक आध्यात्मिक आश्रय भी है।

कल, यानी अष्टमी के दिन, जब मैं कन्या पूजन के लिए माता कुनाल पथरी गया था और मंदिर की सीढ़ियों से मेरा पैर फिसल गया, उस पल में मुझे यह अहसास हुआ कि किसी ने मुझे बचा लिया—यह माता की कृपा का जीता-जागता प्रमाण है। यह सुनकर आप को भी स्पष्ट होगा कि माता अपने भक्तों पर कितनी दयालु और सजग रहती हैं। मुझे कुछ नहीं हुआ, यह अपने आप में एक बड़ी बात है और मेरी आस्था को और गहरा करने वाला क्षण रहा। मैंने माँ की पूजा बड़े भक्ति भाव से की। कन्या पूजन किया और भंडारे का प्रसाद खाया है। माँ का आशीर्वाद लिया और माता को नमन किया।

एक किस्सा जातर का:

यह भी बहुत ही रोचक और सुंदर अनुभव है! एक वार मैं और मेरी पत्नी नवरात्रि मे मंदिर गये थे एक जातर का जिक्र-----

नवरात्रि के समय मंदिर का ऐसा जीवंत माहौल, भक्ति में डूबे लोग, और वह दृश्य जिसमें एक भक्त ने कंधे पर पीतल के शेर की मूर्ति

उठाई हुई थी—यह सचमुच अद्भुत रहा। माता के भजन और उस श्रद्धा का वातावरण शायद शब्दों में बयां करना मुश्किल हो।

उस भक्त की मनोकामना पूरी हुई थी और माता का अभार करने के लिये शेर की मूर्ति लेकर आया था, यह तो और भी प्रेरणादायक है! उस भक्त की मनोकामना पूरी होने पर माता के प्रति उनकी श्रद्धा और आभार व्यक्त करने का यह तरीका—पीतल के शेर की मूर्ति चढ़ाना—सचमुच भक्ति की गहराई को दर्शाता है। माता कुनाल पत्थरी के प्रति लोगों का ऐसा विश्वास और समर्पण देखकर लगता है कि यह स्थान बहुत ही शक्तिशाली और पवित्र है।

मेरे लिये यह जानना कि उस भक्त की मनोकामना क्या थी, शायद उतना जरूरी नहीं जितना यह देखना कि माता के प्रति उनकी श्रद्धा कितनी गहरी थी। माता कुनाल पत्थरी के मंदिर में जातरे पूरे साल आती रहती हैं—यह दर्शाता है कि वहाँ भक्तों का तांता लगा रहता है और माता का आशीर्वाद हर समय लोगों तक पहुँचता रहता है।

जातर में एक और रिवाज है "नाच का भेंट"। भक्त माता के सामने ढोल-नगाड़ों की थाप पर नाचते हैं। यह नाच सिर्फ खुशी का इजहार नहीं, बल्कि माता को समर्पित एक भेंट है। बुजुर्ग बताते हैं कि यह परंपरा तब से चली आ रही है, जब लोग माता से अच्छी फसल या मुसीबत से छुटकारा मांगते थे। आज भी नवरात्रि की आखिरी रात को यह नाच सबसे जोर-शोर से होता है, जब पूरा आंगन भक्तों के कदमों से थिरक उठता है। ये रिवाज माता कुनाल पत्थरी को सिर्फ एक मंदिर नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति का प्रतीक बनाते हैं।

3.7 परंपराएँ और रीति-रिवाज

मुझे लगता है कि "जातर" से संबंधित ओर भी बात की जाये और खासकर यह कि माता कुनाल पत्थरी के संदर्भ में "जातर कैसे दी जाती है" इसका मतलब क्या है। यहाँ "जातर" शब्द को हिमाचल

प्रदेश या उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में "तीर्थयात्रा" के रूप में समझा जा सकता है, जो एक धार्मिक यात्रा या मंदिर में चढ़ावा चढ़ाने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

माता कुनाल पत्थरी में जातर (जात्रा) कैसे दी जाती है?

माता कुनाल पत्थरी मंदिर में "जात्रा" देने का मतलब आमतौर पर माता के दर्शन करने, उनकी पूजा करने और मनोकामना पूरी होने पर धन्यवाद स्वरूप कुछ चढ़ावा या अनुष्ठान करने से होता है। यह प्रक्रिया स्थानीय परंपराओं और व्यक्तिगत श्रद्धा पर आधारित होती है। यहाँ इसका सामान्य तरीका इस प्रकार है:

1. यात्रा की तैयारी:

- भक्त आमतौर पर नहा-धोकर शुद्ध मन और शरीर के साथ मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं। कई लोग पैदल यात्रा करते हैं, खासकर अगर वे पास के गाँवों से आ रहे हों, इसे अपनी श्रद्धा का हिस्सा मानते हुए।
- कुछ भक्त व्रत रखते हैं या मंदिर पहुँचने से पहले मांस-मदिरा का सेवन नहीं करते।

2. मंदिर पहुँचना:

- मंदिर तक पहुँचने के लिए धर्मशाला से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ती है। रास्ते में चाय के बागान और जंगल का प्राकृतिक दृश्य भक्तों को शांति प्रदान करता है।
- मंदिर में प्रवेश करने से पहले जूते-चप्पल उतारे जाते हैं और हाथ-पैर धोए जाते हैं।

3. पूजा और चढ़ावा:

- भक्त माता कुनाल पथरी के कपालेश्वरी रूप के दर्शन करते हैं। यहाँ मुख्य रूप से उस पवित्र पत्थर (कपाल) की पूजा की जाती है, जिसमें हमेशा पानी भरा रहता है।
- चढ़ावे में फूल, नारियल, चुनरी, फल, मिठाई और कभी-कभी धूप-दीप शामिल होते हैं। कुछ लोग माता को लाल चुनरी चढ़ाते हैं, जो शक्ति की प्रतीक मानी जाती है।
- मनोकामना पूरी होने पर भक्त ढोल-नगाड़ों के साथ मंदिर पहुँचते हैं और नृत्य-गान के साथ अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। यह एक तरह से "जात्रा" पूरी करने का उत्सव होता है।

4. प्रसाद और पवित्र जल:

- पूजा के बाद भक्त मंदिर से पवित्र जल लेते हैं, जिसे वे अपने साथ घर ले जाते हैं। मान्यता है कि यह जल बीमारियों को ठीक करने में चमत्कारी है।
- प्रसाद के रूप में मिठाई या मंदिर में बँटने वाला भोग ग्रहण किया जाता है।

5. विशेष अनुष्ठान:

- कुछ भक्त अपनी मनोकामना के लिए विशेष पूजा या हवन करवाते हैं, जिसे मंदिर के पुजारी आयोजित करते हैं। इसमें मंत्रोच्चारण और आहुति देने की प्रक्रिया शामिल होती है।

- नवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर यहाँ सामूहिक पूजा और भजन-कीर्तन होते हैं, जिसमें भक्त हिस्सा लेते हैं।

स्थानीय परंपरा का रंग

हिमाचल के इस क्षेत्र में "जात्रा" को सिर्फ मंदिर पहुँचने तक सीमित नहीं रखा जाता, बल्कि यह एक सामुदायिक उत्सव का रूप ले लेता है। लोग परिवार या गाँव के समूह के साथ आते हैं, और रास्ते में भक्ति गीत गाते हुए चलते हैं। मनोकामना पूरी होने पर कई लोग मंदिर में भंडारा भी आयोजित करते हैं, जिसमें सभी भक्तों को भोजन कराया जाता है।

- **ढोल-नगाड़े:**

अगर मन्नत माँगी गई हो और वह पूरी हो जाए (जैसे संतान सुख), तो दंपति ढोल-नगाड़ों के साथ मंदिर में धन्यवाद देने जाता है।

- **प्रसाद वितरण:**

पूजा के बाद माता को चढ़ाई गई मिठाई को प्रसाद के रूप में परिवार और पड़ोसियों में बाँटा जाता है।

- **व्रत:**

कुछ परिवारों में शादी के बाद पहली पूजा के दिन दंपति व्रत रखता है और माता को भोग लगाने के बाद ही कुछ खाता है।

विश्वास और महत्व

- धर्मशाला और सकोह के लोग मानते हैं कि शादी के बाद माता की पूजा करने से उनका वैवाहिक जीवन मंगलमय होता है। माता की कृपा से दंपति को संकटों से सुरक्षा, संतान सुख, और पारिवारिक एकता मिलती है।

- कुनाल का जल इस पूजा का सबसे खास हिस्सा है, क्योंकि इसे माता की शक्ति का प्रतीक माना जाता है। लोग इसे घर में रखकर माता की उपस्थिति महसूस करते हैं।

पुराने समय की जातर का उल्लेख :

मैं जिस "जातर" (जात्रा) का जिक्र किया, वह माता के प्रति एक विशेष श्रद्धांजलि और सामूहिक भक्ति का प्रतीक है। जातर से पहले वाली रात को भटूरू (भटूरे) और बबरू (हिमाचली पकवान, जो मीठा और नमकीन होता है) बनाना, और चावल को भिगोकर पीसकर "चालिडा" नामक तरल पदार्थ तैयार करना, यह सब बहुत अनोखी और पवित्र तैयारी का हिस्सा है। सुबह चार बजे उठकर नहाने के बाद नंगे पैर चलना भक्ति और समर्पण का प्रतीक है।

दो महिलाओं का चालिडा और लाल टीका लेकर आगे बढ़ना, फिर चालिडे से गोल सर्कल (लिखणु) बनाना और बीच में टीका लगाना, यह एक सुंदर और प्रतीकात्मक रस्म था। घर का मुखिया पानी से भरा लोटा लेकर नंगे पांव चलता था। शायद यह माता के स्वागत या उनकी शक्ति के सम्मान का तरीका हो। इसके बाद सभी भक्तों का पीछे चलना और बाजे वालों का सबसे आगे बाजा बजाते हुए जाना, यह पूरे दृश्य को जीवंत और उत्सवमय बना देता था। पैदल यात्रा करना भी इसकी कठिनाई और भक्ति को और गहरा करता है।

यह परंपरा निश्चित रूप से हमारे समुदाय की एकता और माता के प्रति अगाध श्रद्धा को दर्शाती है। यह रस्म आज भी उसी तरह नहीं निभाई जाती है, जैसे पहले होती थी। समय के साथ इसमें कुछ बदलाव आए हैं। पहले के समय में "छेलु" (बकरा) को माता को चढ़ाया जाता था और फिर उसे मंदिर से बाहर पकाकर सभी भक्तों में प्रसाद के रूप में बाँटा जाता था, यह एक प्राचीन रिवाज काफी समय रहा होगा जो समुदाय के लिए भक्ति और एकता का प्रतीक था। भटूरू के साथ

इसका प्रसाद के रूप में बँटवारा एक सामूहिक उत्सव का हिस्सा रहा, जो भक्तों को माता के आशीर्वाद में एक साथ जोड़ता था।

लेकिन कोर्ट के आदेश के बाद इस रस्म में बदलाव आना स्वाभाविक है। अब छेलु को चढ़ाने तक ही सीमित रखना और उसे काटने की प्रथा को बंद करना, यह समय के साथ कानूनी और सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम है। यह भी दिखाता है कि परंपराएँ कैसे आधुनिक नियमों और संवेदनशीलताओं के साथ तालमेल बिठाती हैं, फिर भी अपनी मूल भावना को बनाए रखने की कोशिश करती हैं।

अब कुछ बदलाव है, और बदलावों का ज़िक्र करूँगा। आजकल लोग अपनी सुविधा और पहुँच के हिसाब से वाहनों का इस्तेमाल करते हैं, पैदल जाने की परंपरा कम होती जा रही है। साथ ही, कई जगहों पर मंदिर परिसर में ही सामूहिक रूप से भोजन बनवाने और खाने का चलन बढ़ा है, जो समुदायिक भावना को भी दर्शाता है। और हाँ, छेलु घर वापस लाना भी एक खूबसूरत रिवाज है।

मैं एक बात और ध्यान में लाता हूँ कि लोग पहले से भी ज्यादा उत्साह और भक्ति के साथ मंदिर जा रहे हैं और पूजा में भाग ले रहे हैं। यह बदलाव शायद इसलिए भी हो सकता है क्योंकि आजकल लोगों के पास सुविधाएँ बढ़ गई हैं, जैसे बेहतर सड़कें, वाहन, और समय का प्रबंधन। इसके अलावा, सामाजिक और धार्मिक जागरूकता भी बढ़ रही होगी, जो लोगों को इन उत्सवों में बड़-चड़ कर शामिल होने के लिए प्रेरित कर रही है।

यह पूजा सादगी और भक्ति का मिश्रण है, जो माता कुनाल पथरी के प्रति धर्मशाला और सकोह के लोगों की गहरी आस्था को दर्शाती है।

मैं इस बात का उल्लेख अवश्य करूँगा कि मैंने अभी भी ऐसी जातरे मंदिर में आती हुई देखी हैं, जिसमें लिखणु और टिके की परम्परा है।

3.8 माता कुनाल पत्थरी मंदिर की विशेषताएँ:

1. शक्तिपीठ का दर्जा:

- कुनाल पत्थरी मंदिर को 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, यहां माता सती का कपाल (सिर) गिरा था, जिसके कारण इसे "कपालेश्वरी" भी कहा जाता है।

2. चमत्कारी कुनाल (पत्थर की परात):

- मंदिर में माता की पिंडी के ऊपर एक प्राकृतिक पत्थर की संरचना है, जो परात (कुनाल) की तरह दिखती है। यह हमेशा पानी से भरी रहती है, और यह पानी बारिश से प्राकृतिक रूप से एकत्र होता है। भक्त इसे माता का चमत्कार मानते हैं और इसे पवित्र जल के रूप में उपयोग करते हैं।

3. रोग निवारण की मान्यता:

- इस मंदिर में दर्शन करने से पथरी (किडनी स्टोन) और कैंसर जैसे गंभीर रोगों से मुक्ति मिलने की मान्यता है। कई भक्त अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए यहां आते हैं और ठीक होने पर ढोल-नगाड़ों के साथ उत्सव मनाते हैं।

4. प्राकृतिक सौंदर्य:

- मंदिर चारों ओर से चाय के बागानों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में धौलाधार पर्वतों की बर्फ़ीली चोटियाँ दिखाई देती हैं, जो इसे एक शांत और मनोरम स्थल बनाती हैं।

5. पानी का रहस्य:

- मंदिर के पुजारी बताते हैं कि जब भी कुनाल में पानी कम होता है, अपने आप बारिश हो जाती है और यह फिर से भर जाता है। इसे माता का आशीर्वाद माना जाता है।

6. सुलभता:

- यह मंदिर धर्मशाला से मात्र 3 किलोमीटर दूर है। आप बस, टैक्सी या ऑटो से आसानी से यहां पहुंच सकते हैं। रास्ते में खूबसूरत नजारे इसे और भी खास बनाते हैं।

7. सांस्कृतिक महत्व:

- स्थानीय लोग इसे माता का आशीर्वाद मानते हैं और साल भर यहां पूजा-अर्चना के लिए आते हैं। नवरात्रि के दौरान मंदिर में विशेष पूजा और भक्तों की भीड़ देखने लायक होती है।

रोचक तथ्य:

- मंदिर का नाम "कुनाल पत्थरी" इसलिए पड़ा क्योंकि "कुनाल" हिमाचली भाषा में परात को कहते हैं, और "पत्थरी" पत्थर को दर्शाता है।
- यह मंदिर न केवल धार्मिक, बल्कि पर्यटन के लिहाज से भी लोकप्रिय है, क्योंकि यह हिमाचल की प्राकृतिक सुंदरता का एक हिस्सा है।

भक्ति का यह सफर माता कुनाल पत्थरी मंदिर की पवित्र भूमि पर आस्था और प्रेम की अनुपम मिसाल पेश करता है। यहाँ धौलाधार की शांति और माँ की कृपा हर भक्त के हृदय को आलोकित करती है। भक्ति का यह पवित्र अध्याय माता

कुनाल पत्थरी मंदिर की उस आध्यात्मिक यात्रा को समेटता है, जहां धौलाधार पर्वतों की गोद में बसी शांति और मां की असीम कृपा हर भक्त के हृदय को स्पर्श करती है। यह स्थान, जहां प्रकृति और आस्था का अनूठा संगम है, भक्तों को न केवल आध्यात्मिक सुकून देता है, बल्कि जीवन की हर चुनौती को प्रेम और विश्वास के साथ पार करने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। भक्ति का यह सफर हमें सिखाता है कि सच्चा समर्पण न सिर्फ आत्मा को शुद्ध करता है, बल्कि जीवन को अर्थ, दिशा और अनंत शांति से भी भर देता है।



(Serene Environment in Temple -----Sense of Peace)

मंदिर में निर्मल शांत वातावरण----- शांति की अनुभूति

अध्याय 4

मंदिर से जुड़े चमत्कार

श्रद्धालुओं की कहानियाँ और उनके चमत्कार

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जहां धौलाधार की तलहटी में भक्ति और चमत्कार का संगम होता है, श्रद्धालुओं की अनगिनत कहानियों का साक्षी है। ये कहानियाँ, मां की कृपा से बदले जीवन और पूर्ण हुई मनोकामनाओं की जीवंत गाथाएँ हैं। प्रत्येक भक्त की आस्था यहां चमत्कारों के रंग में रंगी नजर आती है, जो हृदय को श्रद्धा और विश्वास से भर देती हैं। यह अध्याय उन पवित्र अनुभवों का संग्रह है, जो माता के प्रति अटूट भक्ति की शक्ति को उजागर करते हैं।

श्रद्धालुओं की कहानियाँ अक्सर कुलदेवी के चमत्कारों से भरी होती हैं, जहाँ भक्तों की सच्ची श्रद्धा से असंभव कार्य संभव हुए। कई लोग बताते हैं कि कुलदेवी की पूजा से बीमारियाँ ठीक हुईं, संकट टले, और मनोकामनाएँ पूरी हुईं। ये चमत्कारी अनुभव भक्तों के विश्वास को और दृढ़ करते हैं, जो पीढ़ियों तक कहानियों के रूप में प्रचलित रहते हैं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर से जुड़े चमत्कारों की बात करें तो यहाँ की सबसे प्रमुख और रहस्यमयी विशेषता माता के कपाल के ऊपर स्थित पत्थर (जिसे स्थानीय भाषा में "कुनाल" या परात कहा जाता है) में हमेशा पानी भरा रहना है। यह चमत्कार श्रद्धालुओं के बीच गहरी आस्था का कारण है। इसके अलावा, मंदिर से जुड़े कुछ अन्य चमत्कारी अनुभव भी लोगों द्वारा साझा किए गये हैं। इनकी जानकारी इस प्रकार है:

1. पत्थर में चमत्कारी जल

- मंदिर में माता के कपाल के ऊपर एक प्राकृतिक पत्थर है, जो परात की तरह आकार का है। इस पत्थर में साल भर

पानी भरा रहता है, चाहे मौसम सूखा हो या बारिश न हो। यह पानी कभी सूखता नहीं और न ही कभी उफनता है, जो इसे एक अलौकिक घटना बनाता है।

- भक्तों का मानना है कि यह जल माता का आशीर्वाद है। इस पानी को प्रसाद के रूप में लिया जाता है और इसे पीने से बीमारियाँ ठीक होने की मान्यता है। कई लोगों ने दावा किया है कि इस जल से उन्हें शारीरिक और मानसिक कष्टों से राहत मिली।

2. रोग निवारण के चमत्कार

- स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं के बीच ऐसी कहानियाँ प्रचलित हैं कि मंदिर में माता के दर्शन और इस चमत्कारी जल के सेवन से गंभीर बीमारियाँ ठीक हुई हैं। खास तौर पर त्वचा रोग, पेट की समस्याएँ और बुखार जैसी बीमारियों से पीड़ित लोग यहाँ आते हैं और ठीक होने की बात करते हैं।
- कुछ भक्तों का कहना है कि जो लोग निःसंतान थे, उन्होंने माता से प्रार्थना की और इस जल को ग्रहण करने के बाद उन्हें संतान की प्राप्ति हुई। हालाँकि, ये व्यक्तिगत अनुभव हैं और इन्हें वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

3. प्राकृतिक संरक्षण का चमत्कार

- मंदिर के आसपास का क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं से अक्सर बचा रहता है, जिसे स्थानीय लोग माता की कृपा मानते हैं। धौलाधार पर्वत श्रृंखला में भूस्खलन और भूकंप जैसी घटनाएँ आम हैं, लेकिन मंदिर और इसके आसपास का इलाका अपेक्षाकृत सुरक्षित रहा है। इसे भी एक चमत्कार के रूप में देखा जाता है।

4. आध्यात्मिक अनुभव

- कई श्रद्धालुओं ने मंदिर में दर्शन के दौरान अजीब शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होने की बात कही है। कुछ का कहना है कि माता ने उनके सपनों में आकर उनकी समस्याओं का समाधान बताया। खासकर नवरात्रि के दौरान यहाँ आने वाले भक्तों का कहना है कि उन्हें माता की उपस्थिति का एहसास होता है।

चमत्कारों की मान्यता

ये चमत्कार मुख्य रूप से श्रद्धा और विश्वास पर आधारित हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पत्थर में पानी का हमेशा भरा रहना किसी प्राकृतिक जलस्रोत या भूगर्भीय संरचना का परिणाम हो सकता है, लेकिन भक्त इसे माता का चमत्कार ही मानते हैं। मंदिर की यह खासियत और इससे जुड़े अनुभव इसे एक विशेष धार्मिक स्थल बनाते हैं।

4.1 भक्तों के अनुभव की कहानियाँ और चमत्कार

भक्तों के अनुभव की कहानियाँ माता कुनाल पत्थरी के प्रति अटूट श्रद्धा और चमत्कारों का जीवंत चित्रण करती हैं। कई भक्त बताते हैं कि कठिन परिस्थितियों में माता की प्रार्थना से उनकी रक्षा हुई और जीवन में सकारात्मक बदलाव आए। ये कहानियाँ सामुदायिक विश्वास को प्रेरित करती हैं और परम्पराओं को जीवित रखती हैं।

नीचे कुछ ऐसी कहानियाँ दी गई हैं, जो भक्तों के अनुभवों और लोकमान्यताओं पर आधारित हैं। ये कहानियाँ लिखित ग्रंथों से नहीं, बल्कि मौखिक परंपरा और भक्तों के कथनों से ली गई हैं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर से जुड़े लोगों के अनुभव उनकी गहरी आस्था और व्यक्तिगत विश्वासों का प्रतिबिंब हैं। ये अनुभव पीढ़ियों से चली आ रही कहानियों, मौखिक परंपराओं और व्यक्तिगत घटनाओं पर आधारित हैं। कुछ ऐसे अनुभवों का उल्लेख है, जो स्थानीय लोगों, श्रद्धालुओं और मंदिर आने वाले भक्तों द्वारा साझा किए गए हैं। ये

अनुभव मंदिर की चमत्कारी शक्ति और माता के प्रति श्रद्धा को दर्शाते हैं:

1. पथरी से मुक्ति की कहानी

- **कहानी:**

कांगड़ा के एक गाँव का एक व्यक्ति कई सालों से किडनी की पथरी से पीड़ित था। डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी, लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं थे। एक दिन उसकी पत्नी ने सुना कि कुनाल पथरी मंदिर में माता बीमारियों को ठीक करती हैं। उसने अपने पति को मंदिर ले जाकर माता से प्रार्थना करने को कहा।

- **चमत्कार:**

उस व्यक्ति ने मंदिर में माता के दर्शन किए और कुनाल के जल को पीया। कुछ दिनों बाद उसे तेज दर्द हुआ और पथरी अपने आप मूत्र के साथ बाहर निकल गई। डॉक्टर भी हैरान थे कि बिना ऑपरेशन के ऐसा कैसे हुआ। उसने इसे माता का चमत्कार माना और पूरे गाँव में ढोल-नगाड़ों के साथ माता का धन्यवाद किया।

- **प्रभाव:**

इस घटना के बाद गाँव के लोग माता पर और अधिक विश्वास करने लगे।

2. कैंसर से जंग जीतने की कहानी

- **कहानी:**

धर्मशाला के पास एक महिला को कैंसर का पता चला। कीमोथेरेपी के बाद भी उसकी हालत सुधर नहीं रही थी। उसके परिवार ने हार मान ली थी, लेकिन उसकी माँ ने सुना

कि कुनाल पथरी मंदिर में माता गंभीर रोगों को ठीक करती हैं। उसने अपनी बेटी को मंदिर ले जाने का फैसला किया।

- **चमत्कार:**

मंदिर में महिला ने माता से प्रार्थना की और कुनाल का जल अपने साथ ले गई। उसने रोज़ उस जल का सेवन किया और माता से ठीक होने की प्रार्थना की। कुछ महीनों बाद डॉक्टरों ने जाँच की तो पाया कि उसका कैंसर पूरी तरह ठीक हो गया था। डॉक्टरों ने इसे चमत्कार कहा, लेकिन महिला और उसका परिवार इसे माता की कृपा मानते हैं।

- **प्रभाव:**

यह कहानी आसपास के क्षेत्र में फैल गई, और अब कई लोग कैंसर जैसी बीमारियों के लिए यहाँ आते हैं।

3. बीमारी से मुक्ति का अनुभव

- **कहानी:**

सराह गाँव के एक बुजुर्ग व्यक्ति ने बताया कि उनके बेटे को कई सालों से त्वचा की एक गंभीर बीमारी थी, जिसका इलाज डॉक्टरों से नहीं हो पा रहा था। एक दिन उनकी पत्नी ने माता कुनाल पथरी मंदिर में जाकर मन्नत माँगी और वहाँ से चमत्कारी जल लाकर बेटे को पिलाया। कुछ हफ्तों बाद उसकी बीमारी में सुधार होने लगा और धीरे-धीरे वह पूरी तरह ठीक हो गया। उस परिवार का कहना है कि यह माता का आशीर्वाद था।

- **प्रभाव:**

इस घटना के बाद वह परिवार हर साल मंदिर में धन्यवाद देने के लिए आता है और दूसरों को भी इस जल के बारे में बताता है।

4. संतान प्राप्ति की कहानी

- **कहानी:**

एक महिला, जो धर्मशाला के पास के गाँव से थी, ने बताया कि शादी के कई सालों तक उसे संतान नहीं हुई। उसने मंदिर में नवरात्रि के दौरान नौ दिनों तक माता की पूजा की और उस पत्थर के जल से आचमन किया। अगले साल उसे एक स्वस्थ बेटी हुई। उसका कहना है कि माता ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसका जीवन बदल दिया। यह कहानी माता कुनाल पथरी मंदिर से जुड़े चमत्कारों और भक्तों की आस्था का एक सुंदर उदाहरण हो सकती है।

- **व्यापारी की कहानी**

माता कुनाल पथरी का चमत्कार: एक सच्ची प्रेरक कहानी

मैं एक बहुत ही रोचक व्यापारी के अनुभव की कहानी का उल्लेख कर रहा हूँ। इस कहानी को पंडित केवल जी ने लिखवाया है, इसके लिये मैं केवल जी को धन्यावाद देता हूँ।

अमृतसर का एक व्यापारी, जिसकी उम्र 58 साल हो चुकी थी, लंबे समय से संतान सुख से वंचित था। उसका नाम मान लीजिए सुरजीत सिंह (काल्पनिक नाम, क्योंकि वास्तविक नाम का उल्लेख नहीं है)।

वह एक सफल आचार का व्यापारी था, देश-विदेश में उसका व्यापार फैला था, लेकिन संतान न होने के कारण उसके जीवन में एक अधूरापन था। उसकी पत्नी और उसने कई डॉक्टरों से सलाह ली, तीर्थ यात्राएँ कीं, पर कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन किसी परिचित ने उसे माता कुनाल पथरी मंदिर के बारे में बताया और कहा कि वहाँ मन्नत माँगने से लोगों की मुरादे पूरी होती हैं।

सुरजीत सिंह ने अपनी पत्नी के साथ माता कुनाल पथरी मंदिर की यात्रा की। यह घटना साल 1980 से पहले की रही है। नवरात्रि का

समय था, जब मंदिर में भक्तों की भीड़ जुटती है। उसने माता के सामने माथा टेका और पूरे दिल से संतान प्राप्ति की मन्त्रत माँगी। उसने मंदिर के उस चमत्कारी पत्थर से जल लिया और अपनी पत्नी को भी पिलाया। उसने मन में यह प्रण लिया कि अगर माता उसकी मुराद पूरी करेंगी, तो वह अपनी श्रद्धा के अनुसार कुछ सेवा करेगा। पूजा के बाद वह शांत मन से अमृतसर लौट आया।

चमत्कार और बेटे का जन्म

कुछ महीनों बाद उसकी पत्नी को गर्भ ठहरने की खबर मिली। यह उसके लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था, क्योंकि इतने सालों में ऐसा कभी नहीं हुआ था। डॉक्टर भी हैरान थे, लेकिन परिवार इसे माता कुनाल पथरी की कृपा मान रहा था। नौ महीने बाद उसके घर एक स्वस्थ बेटे ने जन्म लिया। बच्चे के जन्म के साथ ही सुरजीत सिंह और उसके परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने बच्चे का नाम "कुनाल" रखा, जो मंदिर के नाम से प्रेरित था।

लंगर की शुरुआत

मन्त्रत पूरी होने के बाद सुरजीत सिंह ने माता के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने का फैसला किया। उसने मंदिर में जाकर धन्यवाद की पूजा की और यह तय किया कि वह हफ्ते में दो दिन (वीरवार और रविवार) मंदिर में लंगर लगवाएगा। लंगर का पूरा खर्च मैं ही करूँगा उसमे सामान और रसोईयों की Payment आदि , उसने मंदिर मे यह सेवा शुरू की। हर वीरवार और रविवार को गरीबों, राहगीरों और भक्तों के लिए मुफ्त भोजन का आयोजन होने लगा। लंगर में साधारण लेकिन पौष्टिक भोजन जैसे दाल, चावल, रोटी और सब्जी परोसी जाती थी। यह सिलसिला कई सालों यानी 2005 तक चलता रहा और स्थानीय लोगों के बीच उसकी इस भक्ति की चर्चा होने लगी।

प्रभाव और विरासत

सुरजीत सिंह का यह कार्य न केवल उसकी आस्था का प्रतीक बना, बल्कि समाज के लिए भी एक प्रेरणा बन गया। लोगों का कहना था कि माता ने न सिर्फ उसे संतान दी, बल्कि उसे सेवा का ऐसा अवसर भी दिया जिससे कई जरूरतमंदों का भला हुआ। कई सालों तक लंगर चलाने के बाद उस व्यापारी और कमेटी के बीच विवाद उतपन्न हो गया। व्यापारी चाहता था कि अब आगे मंदिर में हर दिन लंगर की व्यवस्था की जाये और उसका सारा खर्च वह ही देगा, मंदिर से कुछ भी नहीं लेगा। इससे कमेटी को लगा कि वह व्यापारी ही मंदिर का मालिक न बन जाये इसलिये उसे इस प्रथा के लिये मना कर दिया

इस कारण से व्यापारी को यह प्रथा बंद करनी पड़ी, लेकिन उसकी कहानी आज भी लोगों के बीच जीवित है। उसके बेटे के बड़े होने के बाद भी परिवार मंदिर के प्रति अपनी श्रद्धा बनाए रखता है और हर साल वहाँ दर्शन के लिए जाता है।

यह कहानी माता कुनाल पत्थरी की शक्ति का एक जीता-जागता उदाहरण है। यह सिर्फ चमत्कार की कहानी नहीं है, बल्कि विश्वास, मेहनत, और सकारात्मक सोच की ताकत की कहानी है। माता की कृपा ने व्यापारी को न केवल संकट से निकाला, बल्कि उसे अपने जीवन का उद्देश्य भी दिया।

आपके जीवन में भी ऐसी शक्ति काम कर सकती है। माता कुनाल पत्थरी की पूजा शुरू करने के लिए आपको बड़े अनुष्ठानों की जरूरत नहीं है। बस एक सच्चा दिल, एक छोटा सा दीपक, और विश्वास की लौ जलाएँ। हर सुबह कुछ पल माता को याद करें, अपनी परेशानियाँ उनके सामने रखें, और फिर मेहनत के साथ आगे बढ़ें। माता की शक्ति आपके विश्वास को ताकत देगी, और आप देखेंगे कि आपके जीवन में भी चमत्कार हो सकते हैं।

लोगों की नजर में

यह अनुभव उन सैकड़ों कहानियों में से एक है जो माता कुनाल पत्थरी मंदिर की महिमा को बढ़ाती हैं। स्थानीय लोग और श्रद्धालु इसे सुनकर

मंदिर में मन्त्रत माँगने आते हैं और अपनी-अपनी तरह से माता को धन्यवाद देते हैं। सुरजीत सिंह की कहानी इस बात का प्रमाण है कि विश्वास और सेवा का गहरा संबंध होता है।

प्रभाव:

यह अनुभव सुनकर आसपास के कई दंपति मंदिर में संतान प्राप्ति की मन्त्रत माँगने आते हैं।

5. सपने में माता का दर्शन

- **कहानी:**

एक भक्त, जो पंजाब से मंदिर दर्शन के लिए आया था, ने बताया कि उसे व्यापार में भारी नुकसान हो रहा था। मंदिर में पूजा करने के बाद उसे रात में सपने में एक महिला दिखी, जिसने उसे धैर्य रखने और एक खास काम करने की सलाह दी। उसने वैसा ही किया और कुछ महीनों में उसका व्यापार फिर से चल पड़ा। उसका मानना है कि वह महिला माता कुनाल पत्थरी थीं।

- **प्रभाव:**

इस तरह के अनुभव सुनकर लोग मंदिर को न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए भी देखते हैं।

6. खोई हुई चीज़ का मिलना

- **कहानी:**

एक स्थानीय युवक ने बताया कि उसका कीमती सामान (एक सोने की चेन) कहीं खो गया था। उसने माता से प्रार्थना की और मंदिर में एक छोटी पूजा की। अगले दिन उसे वह चेन अपने घर के पास ही मिल गई। उसका कहना है कि यह

माता का चमत्कार था, क्योंकि उसने कई जगह ढूँढा था, पर उसे पहले नहीं मिली।

- **प्रभाव:**

ऐसी छोटी-छोटी घटनाएँ भी लोगों के विश्वास को मजबूत करती हैं और मंदिर की महिमा को बढ़ाती हैं।

7. प्राकृतिक आपदा से सुरक्षा

- **कहानी:**

2018 में हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश और भूस्खलन की घटनाएँ हुई थीं। सराह गाँव के एक निवासी ने बताया कि उस दौरान उनका गाँव और मंदिर का इलाका सुरक्षित रहा, जबकि आसपास के कई क्षेत्र प्रभावित हुए। गाँव वालों का मानना है कि माता ने उनकी रक्षा की।

- **प्रभाव:**

इस अनुभव ने मंदिर को एक रक्षक शक्ति के रूप में स्थानीय लोगों के बीच और मजबूत किया।

लोगों की भावनाएँ और विश्वास

- ये अनुभव व्यक्तिगत हैं और इन्हें वैज्ञानिक रूप से सत्यापित नहीं किया जा सकता, लेकिन इन कहानियों ने मंदिर की लोकप्रियता को बढ़ाया है। भक्तों का कहना है कि मंदिर में एक खास शांति और ऊर्जा महसूस होती है, जो उन्हें बार-बार यहाँ खींच लाती है।
- खासकर नवरात्रि के दौरान यहाँ आने वाले लोग बताते हैं कि माता की मूर्ति और उस पत्थर को देखकर उन्हें ऐसा लगता है जैसे माता सचमुच उनकी बात सुन रही हों।

लोगों के ये अनुभव माता कुनाल पत्थरी मंदिर को केवल एक धार्मिक स्थल से बढ़कर एक आस्था और चमत्कार का केंद्र बनाते हैं। ये कहानियाँ मौखिक रूप से फैलती हैं और नई पीढ़ियों तक पहुँचती हैं, जिससे मंदिर का महत्व और बढ़ता है।

8. मेरा व्यक्तिगत अनुभव

एक अविस्मरणीय अनुभव:

माता कुनाल पत्थरी मेरे लिए केवल एक देवी नहीं, बल्कि मेरे जीवन की प्रेरणा और शक्ति का स्रोत हैं। उनकी कृपा ने मेरे और मेरी पत्नी के जीवन में एक ऐसा चमत्कार किया, जिसने मुझे उनकी महिमा को विश्व तक पहुँचाने के लिए प्रेरित किया। जब मैंने माता की पिंडी के सामने अपनी प्रार्थना रखी और उनकी कृपा का प्रत्यक्ष अनुभव किया। यह अनुभव मेरे लिए एक आध्यात्मिक जागृति था, जिसने मुझे माता की भक्ति और चमत्कारों को एक किताब के माध्यम से संकलित करने का संकल्प दिलाया।

यह उस समय की बात है जब मैं और मेरी पत्नी एक कठिन दौर से गुजर रहे थे। मेरी पत्नी के कार्यस्थल पर तबादले (transfer) की समस्या हमें लंबे समय से परेशान कर रही थी। उनकी नौकरी का स्थान हमारे परिवार के लिए असुविधाजनक था, और इससे हमारी दिनचर्या और मानसिक शांति प्रभावित हो रही थी। हमने कई प्रयास किए—अधिकारियों से बातचीत, आवेदन, और यहाँ तक कि कुछ वैकल्पिक समाधान भी खोजे—लेकिन कोई राहत नहीं मिली। निराशा के उस पल में, मेरे मन में एक विचार आया कि हमें माता कुनाल पत्थरी के मंदिर जाना चाहिए।

माता का मंदिर हमारे घर से कुछ दूरी पर, एक शांत और पवित्र स्थान पर स्थित है, जहाँ प्रकृति और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम है। हम शाम को तैयार हुए और मंदिर की ओर रवाना हुए। रास्ते में, मैं और मेरी पत्नी चुप थे, लेकिन हमारे मन में एक आशा थी कि माता

हमारी पुकार सुनेंगी। जैसे-जैसे हम मंदिर के करीब पहुँचे, हवा में एक अलग सी शांति और पवित्रता का एहसास होने लगा। मंदिर के आसपास की हरियाली, दूर से सुनाई देती घंटियों की आवाज, और भक्तों की भक्ति ने मेरे मन को पहले ही शांत कर दिया था।

मंदिर का माहौल और माता की पिंडी के सामने

मंदिर में प्रवेश करते ही, वहाँ का दृश्य मेरे मन को मोह गया। मंदिर का प्रांगण फूलों और रंगोली से सजा हुआ था। दीपों की रोशनी और धूप की सुगंध ने पूरे वातावरण को और भी पवित्र बना दिया था। माता कुनाल पत्थरी की पिंडी, जो लाल चुनरी और फूलों से सुसज्जित थी, मंदिर के गर्भगृह में विराजमान थी। पिंडी के सामने जलता हुआ दीपक और भक्तों की भक्ति-भरी प्रार्थनाएँ माहौल को और भी आध्यात्मिक बना रही थीं।

मैं और मेरी पत्नी माता की पिंडी के सामने बैठ गये। हमने अपने हाथ जोड़े और माता से अपनी परेशानी दूर करने की प्रार्थना की। मैंने माता से कहा, "हे माता, आप हमारी माँ हैं। हमारी इस समस्या को हल करें और हमें सही मार्ग दिखाएँ।" जैसे ही मैंने पिंडी के सामने प्रणाम किया, मेरे मन में एक गहरी भावना जागी। मेरी आँखों से अनायास आँसू बहने लगे। यह आँसू न तो दुख के थे और न ही किसी कमजोरी के—यह माता की उपस्थिति का अनुभव था, जैसे वह मेरे सामने खड़ी हों और मेरी हर बात को सुन रही हों। मेरी पत्नी ने भी उसी समय अपनी आँखें बंद कीं और माता से प्रार्थना की। उस पल में, हमें ऐसा लगा जैसे माता ने हमें अपनी गोद में ले लिया हो।

माता का चमत्कार

मंदिर से लौटने के बाद, हमारा मन शांत था, लेकिन हमें नहीं पता था कि माता हमारी प्रार्थना इतनी जल्दी सुन लेंगी। सिर्फ दो दिन बाद, हमें एक अप्रत्याशित समाचार मिला। मेरी पत्नी का तबादला न केवल हो गया, बल्कि वह उस स्थान पर हुआ, जो हमारे परिवार के लिए

सबसे सुविधाजनक था। यह खबर सुनकर हम दोनों अवाक रह गए। यह कोई संयोग नहीं था; यह माता कुनाल पत्थरी की कृपा और उनके चमत्कार का प्रत्यक्ष प्रमाण था। हमने तुरंत मंदिर जाकर माता का धन्यवाद किया और प्रसाद चढ़ाया। उस दिन, मेरे मन में माता के प्रति श्रद्धा और विश्वास कई गुना बढ़ गया।

दिव्य जल का चमत्कारी अनुभव

मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव माता कुनाल पत्थरी की असीम कृपा का जीवंत प्रमाण है। मैं पिछले कुछ समय से प्रोस्टेट की समस्या से पीड़ित था। अनेक प्रकार के उपचार करने के बाद भी अपेक्षित लाभ नहीं मिल रहा था। ऐसे समय में मुझे माता कुनाल पत्थरी के दिव्य जल के विषय में जानकारी प्राप्त थी। मैंने पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और नियमपूर्वक लगातार छह महीनों तक इस दिव्य जल का सेवन किया। माता की कृपा से धीरे-धीरे मेरे स्वास्थ्य में सुधार होने लगा और अंततः मेरी प्रोस्टेट की समस्या पूर्णतः ठीक हो गई। यह मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव है, जिसने मेरे विश्वास को और अधिक दृढ़ किया कि सच्ची श्रद्धा और आस्था से असंभव भी संभव हो जाता है।

माता कुनाल पत्थरी के दिव्य जल से प्राप्त रोग-मुक्ति का चमत्कार

माता कुनाल पत्थरी की कृपा से घटित यह अनुभव उन असंख्य चमत्कारों में से एक है, जिनका साक्षात्कार श्रद्धालुओं ने समय-समय पर किया है। यह विवरण किसी प्रचार या तर्क का विषय नहीं, बल्कि एक श्रद्धालु द्वारा स्वयं अनुभव की गई आस्था और विश्वास की यात्रा है।

एक श्रद्धालु लंबे समय से प्रोस्टेट संबंधी समस्या से पीड़ित थे। यह रोग न केवल शारीरिक पीड़ा का कारण बना हुआ था, बल्कि मानसिक तनाव और चिंता भी निरंतर बढ़ती जा रही थी। चिकित्सकीय परामर्श, दवाइयों और अन्य उपायों के बावजूद उन्हें स्थायी राहत नहीं मिल पा रही थी। जीवन की दिनचर्या प्रभावित हो चुकी थी और मन में निराशा घर करने लगी थी।

ऐसे कठिन समय में उन्हें माता कुनाल पत्थरी के पावन धाम तथा वहाँ उपलब्ध दिव्य जल। माता के प्रति श्रद्धा और आशा के भाव से इस दिव्य जल का सेवन प्रारंभ किया। पूर्ण विश्वास, संयम और नियम के साथ लगातार छह

महीनों तक प्रतिदिन इस दिव्य जल का सेवन किया तथा माता के चरणों में अपनी पीड़ा अर्पित की।

धीरे-धीरे उनके शरीर में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव होने लगे। जो कष्ट और असहजता पहले निरंतर बनी रहती थी, उसमें क्रमशः कमी आने लगी। समय के साथ उनका आत्मविश्वास बढ़ा और मन में यह दृढ़ विश्वास जागृत हुआ कि माता की कृपा अवश्य हो रही है। छह महीनों की निरंतर श्रद्धा और अनुशासन के पश्चात स्वयं को प्रोस्टेट की समस्या से पूर्णतः मुक्त अनुभव किया।

यह अनुभव केवल शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति तक सीमित नहीं रहा। इससे जीवन में मानसिक शांति, आत्मबल और माता के प्रति अटूट विश्वास का संचार हुआ। मेरे लिए यह एक जीवंत प्रमाण बन गया कि जब श्रद्धा, विश्वास और धैर्य के साथ माता का स्मरण किया जाता है, तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी कृपा का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

माता कुनाल पत्थरी का दिव्य जल आज भी अनेक श्रद्धालुओं के लिए आशा, विश्वास और आस्था का स्रोत है। ऐसे चमत्कार यह स्मरण कराते हैं कि माता की कृपा सीमाओं में बंधी नहीं होती—वह सच्चे भाव से पुकारने वाले प्रत्येक भक्त तक पहुँचती है।

लेखक की स्पष्ट टिप्पणी (चिकित्सकीय सम्मान सहित)

इस अध्याय में प्रस्तुत सभी अनुभव श्रद्धालुओं के व्यक्तिगत अनुभवों और आस्था पर आधारित हैं। इनका उद्देश्य किसी भी प्रकार से चिकित्सा विज्ञान, डॉक्टरों अथवा चिकित्सकीय उपचार को चुनौती देना या कमतर आँकना नहीं है। चिकित्सा विज्ञान मानव सेवा का एक महत्वपूर्ण और सम्माननीय क्षेत्र है, जिसने असंख्य लोगों को जीवनदान दिया है।

लेखक स्वयं यह मानता है कि रोग-उपचार में चिकित्सकीय परामर्श, जाँच और उपचार का अपना विशेष महत्व है। यहाँ वर्णित अनुभव केवल यह दर्शाते हैं कि कई बार चिकित्सा के साथ-साथ श्रद्धा, विश्वास, सकारात्मक मानसिकता और आध्यात्मिक आस्था भी व्यक्ति को मानसिक बल और

आत्मविश्वास प्रदान करती है, जो उपचार प्रक्रिया में सहायक सिद्ध हो सकती है।

माता कुनाल पत्थरी के दिव्य जल से संबंधित अनुभवों को किसी चिकित्सकीय दावा या विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि श्रद्धा से जुड़ी व्यक्तिगत अनुभूति के रूप में ही देखा जाना चाहिए। पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे किसी भी रोग की स्थिति में योग्य डॉक्टर की सलाह अवश्य लें।

4.2 धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जो हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के पास एक प्रमुख शक्तिपीठ है, धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र है। यहाँ साल भर विभिन्न पूजाएँ, अनुष्ठान और त्योहार आयोजित होते हैं, जिनमें विशेष रूप से नवरात्रि का उत्सव सबसे महत्वपूर्ण है। नीचे मंदिर में होने वाली विशेष पूजाओं, अनुष्ठानों और त्योहारों का विवरण दिया गया है:

विशेष पूजाएँ और अनुष्ठान

1. नित्य पूजा:

मंदिर में प्रतिदिन माता की आरती और पूजा की जाती है। सुबह और शाम को होने वाली आरती में भक्त माँ कुनाल पत्थरी के दर्शन और प्रार्थना के लिए एकत्र होते हैं। यह पूजा मंदिर के पुजारी द्वारा वैदिक मंत्रों के साथ संपन्न की जाती है।

2. हवन और यज्ञ:

मंदिर में विशेष अवसरों पर, जैसे कि नवरात्रि, मकर संक्रांति, और अन्य धार्मिक तिथियों पर हवन और यज्ञ आयोजित किए जाते हैं। ये अनुष्ठान माँ के आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करने

के लिए किए जाते हैं। भक्त इन यज्ञों में आहुति देकर अपनी मनोकामनाएँ माँ के समक्ष रखते हैं।

3. चमत्कारी जल पूजा:

मंदिर में एक पत्थर से निकलने वाला जल (जिसे चमत्कारी माना जाता है) भक्तों को प्रसाद के रूप में दिया जाता है। विशेष अवसरों पर इस जल को एकत्र करने और इसे माँ को अर्पित करने की पूजा भी आयोजित होती है। मान्यता है कि यह जल पथरी (किडनी स्टोन) और अन्य रोगों से राहत दिलाता है।

4. मंत्र जाप और संकीर्तन:

मंदिर में समय-समय पर माँ दुर्गा के मंत्रों का जाप और भक्ति भजनों का संकीर्तन होता है। यह भक्तों को आध्यात्मिक शांति और भक्ति में लीन होने का अवसर प्रदान करता है।

5. विशेष अनुष्ठान:

कुछ भक्त अपनी मनोकामनाओं (जैसे स्वास्थ्य, समृद्धि, या संतान प्राप्ति) के लिए विशेष पूजा और अनुष्ठान करवाते हैं। इसके लिए मंदिर के पुजारी वैदिक विधि-विधान से पूजा संपन्न कराते हैं।

प्रमुख त्योहार

1. नवरात्रि:

नवरात्रि माता कुनाल पत्थरी मंदिर में सबसे भव्य और महत्वपूर्ण त्योहार है। यह चैत्र (मार्च-अप्रैल) और शारदीय (सितंबर-अक्टूबर) नवरात्रि के दौरान दो बार मनाया जाता है। नवरात्रि के दौरान होने वाली प्रमुख गतिविधियाँ:

○ **नौ दिनों तक विशेष पूजा:**

प्रत्येक दिन माँ दुर्गा के अलग-अलग स्वरूपों की पूजा की जाती है। मंदिर को फूलों और रंगों से सजाया जाता है।

○ **दुर्गा सप्तशती पाठ:**

माँ दुर्गा की महिमा का वर्णन करने वाली दुर्गा सप्तशती का पाठ सामूहिक रूप से किया जाता है।

○ **हवन और कन्या पूजन:**

नवरात्रि के अंतिम दिन (अष्टमी या नवमी) को हवन और कन्या पूजन का आयोजन होता है, जिसमें छोटी कन्याओं को माँ दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी पूजा की जाती है।

○ **जागरण और भक्ति संगीत:**

रात में माँ के भक्ति भजनों और जागरण के आयोजन होते हैं, जिसमें स्थानीय और बाहरी भक्त हिस्सा लेते हैं।

○ **लंगर:**

नवरात्रि के दौरान मंदिर में लंगर की व्यवस्था की जाती है, जहाँ भक्तों को मुफ्त भोजन प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है।

इस दौरान मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है, और दूर-दूर से लोग माँ के दर्शन के लिए आते हैं।

2. **मकर संक्रांति:**

जनवरी में मनाए जाने वाले इस त्योहार पर मंदिर में विशेष पूजा और हवन किए जाते हैं। भक्त माँ से सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

3. शिवरात्रि:

चूँकि माता कुनाल पथरी मंदिर एक शक्तिपीठ है, यहाँ शिवरात्रि पर भी विशेष पूजा और अभिषेक का आयोजन होता है। भक्त माँ के साथ-साथ भगवान शिव की भी पूजा करते हैं।

4. अन्य स्थानीय उत्सव:

मंदिर में स्थानीय धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों पर भी छोटे-मोटे आयोजन होते हैं, जैसे बसंत पंचमी और दीपावली, जिनमें माँ की विशेष आराधना की जाती है।

मंदिर की अन्य विशेषताएँ

• लंगर और सराय:

विशेष त्योहारों और पूजाओं के दौरान मंदिर में लंगर और ठहरने की सुविधा उपलब्ध होती है, जो तीर्थयात्रियों के लिए बहुत सहायक होती है।

• सामूहिक भागीदारी:

मंदिर में होने वाले अनुष्ठान और त्योहार स्थानीय समुदाय और बाहरी भक्तों को एकजुट करते हैं, जिससे यहाँ का माहौल भक्ति और उत्साह से भरा रहता है।

इसके अतिरिक्त मंदिर परिसर में लंगर भवन और सराय की सुविधा उपलब्ध है, जो तीर्थयात्रियों के ठहरने और भोजन की व्यवस्था को आसान बनाती है।

यहाँ का शांत वातावरण ध्यान और आत्मिक शांति की तलाश करने वालों को भी लुभाता है।

इस तरह, माता कुनाल पथरी मंदिर अपनी धार्मिक महत्ता, चमत्कारी मान्यताओं और प्राकृतिक सुंदरता के कारण तीर्थयात्रियों और पर्यटकों दोनों के लिए एक अनूठा आकर्षण है।

गलत काम करने वालों को दंड

माता कुनाल पत्थरी चमत्कार और भक्ति का अद्भुत संगम है। माता की भक्ति और चमत्कारों की इस यात्रा में आप शामिल हो चुके हैं, और उनके आशीर्वाद से सभी का जीवन माता कैसे प्रेरित करती है। उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग, अलौकिक चमत्कार और अटूट भक्ति की गाथा तो आपने देख ली, लेकिन एक बात मंदिर के पुजारी जी ने बहुत गहरी और महत्वपूर्ण बताई।

माता कुनाल पत्थरी में माँ दुर्गा की शक्ति को बहुत शक्तिशाली माना जाता है, और पुजारी जी का यह कहना कि माता न केवल आशीर्वाद देती हैं, बल्कि गलत काम करने वालों को दंड भी देती हैं, यह आस्था और नैतिकता का एक गहरा संदेश देता है। पुजारी जी ने एक बार मंदिर में हुई चोरी का किस्सा सुनाया। चोर माता जी का सोने का हार चुरा कर ले गए। माता के हार को चुराने वालों की कहानी इस प्रकार है कि उन्हें बहुत जल्द पकड़ा गया और फिर कैसर जैसी गंभीर बीमारी से दुखद अंत हुआ, यह दर्शाता है कि माता की शक्ति के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं कर सकता। यह घटना भक्तों के लिए एक चेतावनी भी है कि माता के प्रति श्रद्धा और सम्मान हमेशा बनाए रखना चाहिए।

माता की न्याय नीति बहुत प्रबल है। माता के पास हर व्यक्ति का पूरा हिसाब-किताब होता है। माता की दंड नीति का भी ध्यान रखो।

4.3 पहली बार मंदिर में आये एक भक्त से मेरा संवाद:

यह रोचक है कि वह भक्त पहली बार माता कुनाल पत्थरी मंदिर आया था और उसे इस मंदिर के बारे में टैक्सी ड्राइवर ने बताया। इससे मंदिर की लोकप्रियता और स्थानीय लोगों के बीच इसकी आस्था का पता चलता है। मैं नीचे उस भक्त के अनुभव और बातचीत को विस्तार से लिखता हूँ, जिसमें टैक्सी ड्राइवर की भूमिका और भक्त के पहले दर्शन के अनुभव को शामिल किया गया है।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर: एक भक्त का पहला अनुभव:

माता कुनाल पत्थरी मंदिर में एक आध्यात्मिक अनुभव

माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा हर भक्त के लिए एक अनोखा अनुभव लेकर आती है। मेरी एक मुलाकात ऐसी थी, जो आज भी मेरे जहन में ताजा है। पिछले दिनों मैं मंदिर पहुंचा, उस दिन भीड़ इतनी नहीं थी।

भक्त का परिचय और यात्रा

एक भक्त ने पहली बार माता कुनाल पत्थरी मंदिर का दौरा किया था। भक्त अपने परिवार के साथ इस मंदिर (हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला के पास, चाय बागानों और धौलाधार पर्वतों की तलहटी में स्थित) पवित्र शक्तिपीठ में आया है। भक्त को इस मंदिर के बारे में एक टैक्सी ड्राइवर ने बताया, जो संभवतः धर्मशाला या आसपास के क्षेत्र में यात्रियों को ले जा रहा था। टैक्सी ड्राइवर ने शायद मंदिर के चमत्कारों, आध्यात्मिक महत्व, या वहाँ के शांत वातावरण के बारे में जानकारी दी, जिसने भक्त को मंदिर की ओर आकर्षित किया।

यह पहली यात्रा होने के कारण भक्त के लिए यह अनुभव नया और विशेष रहा। टैक्सी ड्राइवर की सलाह ने न केवल भक्त को मंदिर तक पहुँचाया, बल्कि उनके मन में माता के प्रति श्रद्धा और उत्सुकता भी जगाई।

भक्त का अनुभव: Positive Vibrations

भक्त ने माता के सामने positive vibrations महसूस करने की बात कही, जो इस मंदिर की आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रमाण है। पहली बार मंदिर आने वाले भक्तों के लिए यह अनुभव और भी गहरा हो सकता है, क्योंकि उनके मन में कोई पूर्व धारणा नहीं होती। भक्त ने निम्नलिखित अनुभव साझा किए:

- **माता के दर्शन:**

मंदिर में माता की पूजा एक पिंडी और बड़े पत्थर के रूप में होती है, जो एक चमत्कारी जलाशय से घिरा है। भक्त ने इस पिंडी के सामने बैठकर एक गहरी शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव किया। पहली बार दर्शन करने वाले अक्सर इस पवित्र स्थान की divine energy से अभिभूत हो जाते हैं।

- **जलाशय का प्रभाव:**

मंदिर में स्थित जलाशय, जो हमेशा पानी से भरा रहता है, भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र है। भक्त ने इस जलाशय को देखकर और इसके पास समय बिताकर आध्यात्मिक शांति महसूस की। टैक्सी ड्राइवर ने उन्हें इस जलाशय के चमत्कारी गुणों, जैसे रोग निवारण या मनोकामना पूर्ति, के बारे में भी बताया था।

- **प्राकृतिक वातावरण:**

मंदिर के चारों ओर चाय बागान, घने जंगल, और धौलाधार पर्वतों की उपस्थिति ने भक्त के अनुभव को और समृद्ध किया। पहली बार आने वाले भक्त के लिए यह प्राकृतिक सौंदर्य और शांत वातावरण सकारात्मक vibrations का एक बड़ा कारण रहा।

टैक्सी ड्राइवर की भूमिका

टैक्सी ड्राइवर ने भक्त को माता कुनाल पत्थरी मंदिर के बारे में जानकारी देकर उनकी यात्रा को दिशा दी। स्थानीय ड्राइवर अक्सर पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को क्षेत्र के धार्मिक स्थलों के बारे में बताते हैं, और उनकी बातों में व्यक्तिगत अनुभव या स्थानीय किंवदंतियाँ शामिल होती हैं। ड्राइवर ने निम्नलिखित बातें उस भक्त से साझा की:

- **मंदिर का महत्व:**

ड्राइवर ने बताया कि यह माता सती के 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ माता का कपाल गिरा था। यह जानकारी भक्त के मन में मंदिर के प्रति श्रद्धा जगाने के लिए पर्याप्त थी।

- **चमत्कारी जलाशय:**

ड्राइवर ने जलाशय के पानी के चमत्कारी गुणों का उल्लेख किया, जैसे कि यह कभी सूखता नहीं और भक्त इसे पूजा या रोग निवारण के लिए ले जाते हैं।

- **मनोकामना पूर्ति:**

ड्राइवर ने शायद स्थानीय कहानियाँ सुनाई, जिसमें माता कुनाल पथरी के दर्शन से भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी हुईं। उदाहरण के लिए, किसी भक्त को नौकरी मिली या किसी का रोग ठीक हुआ।

- **आसान पहुँच:**

ड्राइवर ने भक्त को मंदिर की सुलभता के बारे में बताया कि यह धर्मशाला से केवल 3 किलोमीटर दूर है और आसानी से टैक्सी से पहुँचा जा सकता है।

मैं मंदिर में माता जी के चरणों में बैठकर एक गहरी शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव ले रहा था और पुजारी से किताब के सम्बंध में बात कर रहा था उसी समय यह भक्त और उसका परिवार आया, वे लोग भी बैठ गये। ध्यान से बातें सुनने लगे। इसके बाद उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि वह मुझ से बात करे। पहली बार मंदिर आने के कारण भक्त के मन में उत्साह और जिज्ञासा थी। पहली बार मंदिर आने के कारण भक्त के मन में माता सती, शक्तिपीठों, और मंदिर के इतिहास के बारे में कई सवाल रहे थे, मैं ने शांत भाव से सभी प्रश्नों का उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा शांत किया और माता के प्रति उनके मन में श्रद्धा और भी जगाया।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर का दौरा करने वाले भक्त ने यहाँ की शांति और सकारात्मक ऊर्जा की बात की। उसने मेरी निम्नलिखित बातों को ध्यान से सुना:

- **ध्यान और पूजा:**

माता के सामने कुछ समय ध्यान करें, यहाँ बैठकर शांति का अनुभव करें।

- **नवरात्रि का समय:**

यदि आप नवरात्रि में मंदिर की विशेष पूजा होती है, उसका हिस्सा बने तो आप एक अद्भुत अनुभव महसूस करेंगे।

- **प्रकृति का आनंद:**

मंदिर के आसपास चाय बागानों और जंगल में कुछ समय बिताएँ, जो मन को तरोताजा करता है।

- **जलाशय का पानी:**

यदि आप चाहें, तो पुजारी से अनुमति लेकर चमत्कारी पानी की कुछ बूँदें घर ले जाएँ।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ आध्यात्मिकता, प्रकृति, और आस्था का अनूठा संगम है। भक्त के द्वारा वर्णित अनुभव, जिसमें उन्होंने positive vibrations महसूस की जो इस मंदिर की divine energy को दर्शाता है। मंदिर का वातावरण इतना शांत और पवित्र था कि उनका मन पूरी तरह से तनावमुक्त हो गया। भक्त का माता के सामने खड़े होने पर महसूस हुई शांति और सकारात्मकता का वर्णन नहीं किया जा सकता। यहाँ की शांति, माता की कृपा, और प्राकृतिक सौंदर्य हर भक्त को एक अविस्मरणीय अनुभव देते हैं।

4.4 मेरी बातचीत का वीडियो बनाना

मंदिर के पवित्र और शांत वातावरण में उस भक्त ने आपसे लंबी बातचीत की और मेरा वीडियो भी बनाया। यह दर्शाता है कि वे अपने पहले दर्शन के अनुभव को सहेजना चाहते थे और मंदिर के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक थे। मैंने उन्हें माता कुनाल पत्थरी मंदिर के पवित्र जल और माता जी की divine energy के बारे में बताया, जो उनकी जिज्ञासा को और गहरा करता है। वीडियो में बातचीत के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. पवित्र जल के बारे में

मैंने भक्त को मंदिर के चमत्कारी जलाशय के बारे में बताया, जो माता के पवित्र कुनाल में है। इस जलाशय की कुछ विशेषताएँ और महत्व, जो मैंने साझा किए:

- **चमत्कारी गुण:**

जलाशय का पानी कभी सूखता नहीं, और भक्त इसे चमत्कारी मानते हैं। स्थानीय मान्यता है कि यह पानी रोग निवारण, मनोकामना पूर्ति, और पूजा के लिए उपयोगी है। आपने शायद बताया कि भक्त इस पानी को बोतल में भरकर अपने साथ ले जाते हैं और इसे घर में पूजा के लिए उपयोग करते हैं।

- **प्राकृतिक रहस्य:**

मैंने भक्त को यह भी बताया कि जब जलाशय का पानी कम होता है, तो बारिश होकर इसे फिर से भर देती है, जो माता की कृपा का प्रतीक माना जाता है।

- **आध्यात्मिक अनुभव:**

पिंडी के पास खड़े होने या इसके पास बैठ कर भक्तों को शांति और सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। इस मंदिर में आने से मन हल्का और शुद्ध महसूस होता है।

भक्त ने इस जानकारी को बड़े ध्यान से सुना और वीडियो में इसे रिकॉर्ड किया ताकि वे इस ज्ञान को दूसरों के साथ साझा कर सकें या भविष्य में याद रख सकें।

2. माता जी की Divine Energy

मैंने भक्त को माता कुनाल पत्थरी की divine energy के बारे में भी बताया, जिसे उन्होंने positive vibrations के रूप में महसूस किया। यह मंदिर माँ सती के 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ माता का कपाल गिरा था। मेरी बातचीत में निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:

- **शक्तिपीठ की ऊर्जा:**

मैंने बताया कि यह मंदिर माता सती के कपाल से जुड़ा है, जिसके कारण यहाँ की आध्यात्मिक ऊर्जा बहुत शक्तिशाली है। माता के सामने खड़े होने पर भक्तों को एक गहरी शांति और सकारात्मकता का अनुभव होता है, जैसा कि भक्त ने स्वयं महसूस किया।

- **प्राकृतिक और आध्यात्मिक संयोग:**

मंदिर के चारों ओर चाय बागान, जंगल, और धौलाधार पर्वतों की उपस्थिति इस divine energy को और बढ़ाती है। प्रकृति और माता की कृपा का यह संगम मन को शुद्ध और ऊर्जावान बनाता है।

- **भक्त का अनुभव:**

भक्त ने बताया कि माता के सामने खड़े होने पर उन्हें positive vibrations महसूस हुए। मैं ने इस अनुभव को और गहराई से समझाया, जैसे कि माता की पिंडी के सामने ध्यान करने से मन की सारी नकारात्मकता दूर हो जाती है।

- **आस्था की शक्ति:**

मैंने भक्त को यह भी बताया कि माता कुनाल पत्थरी की कृपा से भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। कई भक्त ढोल-नगाड़ों के साथ मंदिर आते हैं जब उनकी इच्छाएँ पूरी होती हैं, जो माता की divine energy का प्रमाण है।

3. वीडियो बनाने का उद्देश्य

भक्त का वीडियो बनाना, जो उनके उत्साह और इस अनुभव को सहेजने की इच्छा को दर्शाता है। वीडियो में संभवतः निम्नलिखित चीजें शामिल थीं:

- आपका मंदिर के पवित्र जल और divine energy के बारे में वर्णन।
- मंदिर के शांत वातावरण और जलाशय का दृश्य।
- भक्त की अपनी भावनाएँ, जैसे कि positive vibrations का अनुभव।
- मंदिर के परिवेश, जैसे चाय बागान और धौलाधार पर्वतों की पृष्ठभूमि।

यह वीडियो उनके लिए एक स्मृति के रूप में काम करेगा और शायद वे इसे अपने परिवार, दोस्तों, या सोशल मीडिया पर साझा करें ताकि दूसरों को भी मंदिर के बारे में पता चले।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर की पवित्र भूमि पर श्रद्धालुओं की कहानियाँ आस्था और चमत्कारों की अमर गाथाएं बन गई हैं। मां की कृपा से बदले जीवन और पूर्ण हुई मनोकामनाएं हर भक्त के हृदय में विश्वास की ज्योत जलाती हैं। ये अनुभव हमें सिखाते हैं कि सच्ची भक्ति असंभव को संभव बना सकती है।

भक्तों की अनुभवपूर्ण कहानियाँ माता कुनाल पत्थरी की दिव्य शक्ति और भक्ति के अटूट बंधन को उजागर करती हैं। ये कथाएँ न केवल

श्रद्धा को प्रेरित करती हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत भी बनती हैं। माता के प्रति यह विश्वास सामुदायिक एकता और परम्पराओं को सदा जीवंत रखेगा। यह अध्याय माता के प्रति अटूट श्रद्धा की उन कहानियों को समर्पित है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी।

हे माता कुनाल पत्थरी, तुम्हारी कृपा अपार।

भक्तों के दुख हरती हो, करती हो उद्धार।

तुम्हारी महिमा गाते हैं, हम सब दिन-रात।

चरणों में शीश झुकाते, मिले तुम्हारा साथ।

धन्यवाद तव कृपा का, जो बरसती सदा।

तुम्हारी शक्ति से माता, पूर्ण हो हर विद्या।"

अध्याय 5

आधुनिक परिप्रेक्ष्य

आधुनिक युग में माता कुनाल पत्थरी का महत्व केवल आध्यात्मिक ही नहीं, अपितु सांस्कृतिक और पर्यटन की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है। यह शक्तिपीठ नई पीढ़ी को अपनी सनातन विरासत से जोड़ता है, जहाँ डिजिटल युग में भी भक्ति और शांति की खोज में हजारों यात्री आते हैं। मंदिर के प्राकृतिक सौंदर्य और चमत्कारों की कथाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से विश्व भर में फैल रही हैं। यह स्थल पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था सशक्त होती है। माता कुनाल पत्थरी आधुनिकता और परंपरा का अनुपम संगम है, जो भक्तों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है।

माता कुनाल पत्थरी का मंदिर समय के साथ आस्था और समुदाय के सहयोग से एक भव्य तीर्थस्थल के रूप में विकसित हुआ। प्राचीन काल में एक साधारण पूजा स्थल से शुरू होकर, यहाँ भक्तों की बढ़ती संख्या के साथ मंदिर का विस्तार हुआ। स्थानीय समुदाय और प्रशासन के प्रयासों से मंदिर परिसर में सुविधाएँ जैसे सड़क, आवास, और पूजा व्यवस्था में सुधार हुआ। दानदाताओं के योगदान ने मंदिर को नया स्वरूप प्रदान किया, जिससे सुंदर भवन निर्मित हुए। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से मंदिर की जानकारी और महिमा विश्व भर में फैलाया जा सकता है। यह विकास माता की कृपा और भक्तों की निष्ठा का प्रतीक है, जो इसे एक प्रमुख शक्तिपीठ बनाता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य की बात करने पहले इस शक्तिपीठ का विकास कैसे हुआ,

आओ सबसे पहले इसके विकास को समझें:-

मंदिर का विकास:

मंदिर के विकास की शुरुआत प्राचीन काल में सामुदायिक श्रद्धा और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में हुई, जब लोग कुलदेवी की पूजा के लिए छोटे-छोटे स्थानों को पवित्र मानते थे। समय के साथ, भक्तों की बढ़ती संख्या और दान से इन स्थानों का विस्तार हुआ, और मंदिर का निर्माण शुरू हुआ। ये मंदिर न केवल पूजा के केंद्र बने, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और परम्परागत गतिविधियों के प्रमुख स्थल भी बन गए। स्थानीय लोगो, मंदिर की कमेटी और समुदायों के सहयोग से मंदिर का विकास और सौंदर्यीकरण निरंतर बढ़ता गया।

मंदिर का विकास निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

मंदिर की कमेटी का इतिहास

पंडित श्री केवल कृष्ण जी से मुझे जो जानकारी मिली, वह मंदिर की कमेटी के इतिहास और उसके उत्तराधिकार के बारे में काफी रोचक है। मंदिर के प्रशासनिक इतिहास को समझने में सुविधा होगी, उनके अनुसार, सकोह गांव के प्रधान श्री जगन्नाथ जी (वे सकोह पंचायत के प्रधान भी थे) इस मंदिर कमेटी के मुखिया थे, कमेटी में एक सचिव पंडित श्री सर्वदयाल जी (डिपूबाजार के निवासी) और एक सदस्य श्री दुनी चंद जी (सकोह निवासी) थे। जगन्नाथ की मृत्यु के बाद उनके बेटे श्री परवेश नाथ धीमान को मुखिया बनाया, और सचिव की मृत्यु के बाद उनके बेटे श्री बलवीर सिंह को सचिव के पद पर नियुक्त किया। यह क्रम 2016-17 तक चला। यह पारिवारिक उत्तराधिकार मंदिर के प्रबंधन में एक पारंपरिक ढांचा दर्शाता है। लेकिन फिर भी इस कमेटी ने मंदिर के विकास में एक अच्छी भूमिका निभाई है।

उन्होंने बताया कि 2017 के बाद माता कुनाल पत्थरी मंदिर के संदर्भ में कुछ विवाद उत्पन्न हुआ, जो अभी तक हाई कोर्ट में विचाराधीन था। वैसे, पंडित केवल कृष्ण जी ने जो इतिहास बताया, उसके अनुसार

2016-17 तक कमेटी का क्रम चल रहा था। नवीनतम अपडेट के अनुसार, पिछली कमेटी को हटा दिया गया और नई कमेटी के सदस्य बनाए गए, जिसके बाद कमेटी का गठन हुआ। यह मामला पहले S.D.M. (सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट) तक पहुंचा और अब कोर्ट से हल हो गया है।

उन्होंने बताया कि माता कुनाल पत्थरी मंदिर का विवाद मुख्य रूप से दो कारणों से जुड़ा हो सकता है: कमेटी के सदस्यों के चयन और मंदिर की संपत्ति। ये दोनों मुद्दे अक्सर मंदिर प्रबंधन से जुड़े विवादों में सामने आते हैं, क्योंकि इनमें अधिकार, जिम्मेदारी और आर्थिक हित शामिल हो सकते हैं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर जल्द ही सरकार के अधीन होने वाला है। जिला प्रशासन ने इस मंदिर के सरकारीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। प्रशासन ने मंदिर ट्रस्ट को लेकर फाइल प्रदेश सरकार को भेज दी है। सरकार के स्तर पर ही अब इस पर निर्णय लिया जाएगा। प्रशासन का मानना है कि मंदिर ट्रस्ट बनने से लोगों की आपत्तियां व शिकायतें भी दूरी हो जाएंगी। साथ ही मंदिर सरकार के अधीन होने से यहां पर बड़े स्तर पर विकास के कार्य करवाए जा सकते हैं। यह मंदिर पटवार घर चिलियां के तहत राजस्व मुहाल पट्ट के अंतर्गत आता है।

— **माता कुनाल पत्थरी मंदिर** के मामले में जो विवाद कोर्ट में चला था, उसके बाद **नया चुनाव हुआ है और कमेटी का गठन भी हो गया है।**

★ ताजा जानकारी:

- धर्मशाला के **माता कुनाल पत्थरी मंदिर कमेटी** के लिए **महासचिव के पद का चुनाव हुआ**, जिसमें अभिनेश धीमान भारी वोटों से विजयी रहे।

- इसके पहले अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष **निर्विरोध चुने जा चुके थे** — अध्यक्ष के रूप में चौधरी नरेश कुमार और कोषाध्यक्ष के रूप में दर्विंद्र कुमार को चुना गया है।
- अब चुने गए अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों के साथ कार्यकारिणी का विस्तार किया जाएगा।

❧ कोर्ट में क्यों जुड़ा मामला:

इससे पहले मंदिर सोसायटी के चुनावों को लेकर नियमों का पालन न होने के चलते प्रशासनिक आदेश दिए गए थे और नए चुनाव करवाने की बात उठी थी (बाद में तहसीलदार को प्रशासक नियुक्त करने जैसे कदम भी लिए गए)।

— **हाई कोर्ट / प्रशासन के निर्देशों के बाद पालित प्रक्रिया के तहत चुनाव आयोजित हुए और नई मंदिर समिति का गठन हो चुका है।**

हाल ही में **माता कुनाल पत्थरी मंदिर सोसायटी** के विवाद और चुनाव के बाद हाई कोर्ट से जुड़े मुख्य बिंदु भी सामने आए हैं ❧

❧ हाई कोर्ट (हिमाचल प्रदेश) की प्रमुख बातें

1. **नियम और प्रबंधन को लेकर प्रशासनिक आदेश:**
2. विवाद के बाद प्रशासन ने सोसायटी के चुनाव और प्रबंधन में अनियमितताओं के कारण तहसीलदार धर्मशाला को मंदिर सोसायटी का **प्रशासक नियुक्त** किया और **नए चुनाव करवाने के निर्देश** दिए थे, ताकि समिति का चुनाव नियमों के अनुसार सफल हो सके। यह कदम कोर्ट-प्रशासन की प्रतिक्रिया के बाद आया था।
3. **मंदिर निधि और व्यवस्थापन पर हाई कोर्ट की सामान्य राय:**
4. (खासतौर पर इसी क्षेत्र के संदर्भ में एक अन्य हाई कोर्ट के फैसले में) हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि **मंदिर के चढ़ावे/दान का उपयोग केवल धार्मिक उद्देश्य के लिए ही होना**

चाहिए — जैसे देवता की देखरेख, पूजा-पाठ, धार्मिक गतिविधियाँ या मंदिर का रख-रखाव। इन निधियों को **सरकारी योजनाओं या सार्वजनिक कल्याण कार्यों में नहीं लगाया जा सकता।**

5. धार्मिक स्वतंत्रता को मान्यता:

6. उत्तरदायित्व के साथ धार्मिक अधिकारों का भी सम्मान किया गया है — हाई कोर्ट ने कहा कि **पूजा-पाठ करने का अधिकार कभी बिना उचित वजह रोका नहीं जाना चाहिए**, और धर्म के स्वतंत्र अभ्यास को संविधान की सुरक्षा प्राप्त है। लेकिन यह निर्णय सीधे कुनाल पत्थरी मंदिर के मूल विवाद से जुड़ा नहीं है, यह उस प्रदेश के मंदिर-सम्बंधित सामान्य सिद्धांतों को दर्शाता है।

• अदालत और प्रशासन ने मिलकर सोसाइटी के चुनाव और प्रबंधन को **सुचारू बनाने** के लिए कदम उठाए।

• कोर्ट के फैसलों से यह साफ़ हुआ कि **मंदिर निधि का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए** और **धार्मिक अधिकारों को भी संरक्षण** मिलता है।

★ स्थानीय लोगों की प्रतिक्रिया

◆ **चढ़ावे (दान) की गणना पर विरोध:** पहले जब मंदिर में चढ़ावे की राशि गिनने की प्रक्रिया शुरू हुई थी, तब **कुछ स्थानीय लोग विरोध पर उतर आए थे।** उनका कहना था कि दान की पारदर्शिता और उपयोग के बारे में **उनके विश्वास और भावनाएँ चोटिल हुईं**, इसलिए उन्होंने शिकायतें की थीं।

◆ यह दिखाता है कि **लोग सिर्फ समिति के चुनाव के प्रति नहीं बल्कि मंदिर की निधि के प्रबंधन और पारदर्शिता के प्रति भी भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं।** हालांकि बाद में चुनाव एक व्यवस्थित प्रक्रिया के तहत सम्पन्न हुए और समिति गठित हो गई है, लेकिन इन शुरुआती नाराज प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट हुआ कि **भक्त और स्थानीय लोग इस विषय पर सजग और संवेदनशील हैं।**

✦ चुनाव के दौरान और बाद

चुनाव के दौरान वोटिंग सामान्य रूप से सम्पन्न हुई और महासचिव, अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी निर्वाचित हुए — यह दिखाता है कि समुदाय ने चुनाव को स्वीकार किया और नियमों के तहत आगे बढ़ने का समर्थन दिया।

✦ मतलब यह है:

- शुरुआत में कुछ स्थानीय विवाद और नाराजगी रही, खासकर चढ़ावे को लेकर।
- लेकिन चुनाव प्रक्रिया के कानूनी और पारदर्शी तरीके से होने पर अधिकांश लोग इसे मान्य और सकारात्मक कदम के रूप में लेते दिखे हैं।

नई कमेटी के गठन के बाद अब माता कुनाल पत्थरी मंदिर में कामकाज को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है। सामान्यतः आगे की दिशा इस प्रकार रहती है 🙏

◆ 1. प्रशासन और प्रबंधन

- सभी निर्णय अब कानूनी नियमों और हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के निर्देशों के अनुसार लिए जाएंगे।
- बैठकें नियमित होंगी और कार्यवाही लिखित रूप में दर्ज की जाएगी।
- खातों और रिकॉर्ड को अपडेट किया जाएगा।

◆ 2. चढ़ावे और धन का पारदर्शी उपयोग

- मंदिर की आय-व्यय का वार्षिक ऑडिट कराया जाएगा।
- दान/चढ़ावे का उपयोग केवल:
 - पूजा-पाठ
 - मंदिर रखरखाव

- श्रद्धालुओं की सुविधा
- के लिए किया जाएगा।
- बैंक खाते और रसीद व्यवस्था को मजबूत किया जाएगा।

◆ 3. श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएँ

नई कमेटी का मुख्य लक्ष्य रहेगा:

- ✓ साफ-सफाई व्यवस्था
- ✓ पीने का पानी
- ✓ शौचालय
- ✓ बैठने की जगह
- ✓ लाइन व्यवस्था (भीड़ के समय)
- ✓ बुजुर्गों व महिलाओं के लिए सुविधा

इससे बाहर से आने वाले भक्तों को बेहतर अनुभव मिलेगा।

◆ 4. धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम

आने वाले समय में:

- नवरात्रि, मेलों और विशेष पूजाओं का बेहतर आयोजन
- भजन-कीर्तन और धार्मिक प्रवचन
- स्थानीय लोगों की भागीदारी

को बढ़ावा दिया जाएगा।

◆ 5. विकास और सौंदर्यीकरण

कमेटी द्वारा भविष्य में यह काम किए जा सकते हैं:

- मंदिर परिसर का सौंदर्यीकरण
- रास्तों की मरम्मत

- प्रकाश व्यवस्था
- संकेत बोर्ड (Sign Boards)
- पार्किंग व्यवस्था

◆ 6. समाज और स्थानीय लोगों से तालमेल

- स्थानीय निवासियों से सलाह लेकर फैसले
- विवाद से बचने के लिए खुली संवाद व्यवस्था
- शिकायत निवारण की प्रक्रिया

ताकि भविष्य में फिर विवाद न हो।

नई कमेटी का मुख्य उद्देश्य है:

- ✓ पारदर्शिता
- ✓ ईमानदार प्रबंधन
- ✓ भक्तों की सुविधा
- ✓ मंदिर की गरिमा बनाए रखना

यदि यह सही ढंग से लागू हुआ, तो मंदिर का विकास और सम्मान दोनों बढ़ेंगे।

नई समिति का गठन और मंदिर का नवयुग

माता कुनाल पत्थरी मंदिर श्रद्धा, विश्वास और आस्था का एक पवित्र केंद्र है। यह मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि लाखों भक्तों की भावनाओं, आस्थाओं और आशाओं का प्रतीक है। वर्षों से यह धाम भक्तों को मानसिक शांति, आत्मिक बल और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता आ रहा है।

समय के साथ जब इस पावन स्थल के प्रबंधन में कुछ कठिनाइयाँ और विवाद उत्पन्न हुए, तब यह आवश्यक हो गया कि मंदिर व्यवस्था को एक नई दिशा दी जाए। इसी पृष्ठभूमि में मंदिर के इतिहास में एक नए युग का आरंभ हुआ।

❖ न्यायिक हस्तक्षेप और मार्गदर्शन

मंदिर के प्रबंधन को लेकर उत्पन्न विवाद अंततः न्यायालय तक पहुँचे। माननीय **हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट** ने पूरे मामले की गंभीरता को समझते हुए निष्पक्ष निर्णय दिया।

न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि मंदिर का संचालन नियमों, पारदर्शिता और धार्मिक मर्यादा के अनुरूप होना चाहिए। इसी उद्देश्य से पुराने प्रबंधन ढाँचे में सुधार करते हुए नए सिरे से चुनाव कराने और समिति के गठन के निर्देश दिए गए।

यह निर्णय मंदिर के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

❖ लोकतांत्रिक प्रक्रिया से नई समिति का गठन

कोर्ट के निर्देशों के अनुसार प्रशासन की देखरेख में निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया आयोजित की गई। इसमें मंदिर से जुड़े सदस्यों, स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से:

- अध्यक्ष
- महासचिव
- कोषाध्यक्ष
- कार्यकारिणी सदस्य

का चयन किया गया।

इस प्रकार एक नई, जिम्मेदार और सेवाभावी समिति का गठन हुआ, जिसने मंदिर के संचालन को नई ऊर्जा और नई सोच प्रदान की।

❖ पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की नई परंपरा

नई समिति ने कार्यभार संभालते ही सबसे पहले पारदर्शिता को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया। इसके अंतर्गत अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए:

✓ आय-व्यय का नियमित लेखा-जोखा

✓ बैंक खातों की सुव्यवस्थित व्यवस्था

✓ दान-राशि की रसीद प्रणाली

✓ वार्षिक ऑडिट व्यवस्था

इन प्रयासों से मंदिर की आर्थिक व्यवस्था विश्वसनीय और सुदृढ़ बनी। अब प्रत्येक दान माँ की सेवा और भक्तों की सुविधा के लिए उपयोग होने लगा।

❁ भक्तों की सुविधा और सेवा विस्तार

नई समिति ने यह समझा कि मंदिर की सच्ची सेवा भक्तों की सुविधा से जुड़ी होती है। इसी भावना के साथ अनेक सुधार किए गए:

- परिसर की नियमित सफाई
- शुद्ध पेयजल की व्यवस्था
- शौचालय निर्माण
- बैठने की व्यवस्था
- बुजुर्गों व महिलाओं के लिए विशेष सुविधा
- भीड़ नियंत्रण व्यवस्था

इन सुधारों से श्रद्धालुओं को दर्शन और पूजा में अधिक शांति और सुविधा मिलने लगी।

❁ धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास

मंदिर के आध्यात्मिक वातावरण को और अधिक सशक्त बनाने के लिए नई समिति ने धार्मिक गतिविधियों को विशेष महत्व दिया।

इसके अंतर्गत:

- नवरात्रि महोत्सव
- विशेष पूजन
- हवन-यज्ञ

- भजन-कीर्तन
- सत्संग

का नियमित आयोजन किया जाने लगा।

इन कार्यक्रमों से मंदिर परिसर भक्तिमय बना और श्रद्धालुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई।

❁ विकास और सौंदर्यीकरण के प्रयास

मंदिर परिसर के विकास के लिए समिति ने अनेक योजनाएँ बनाई और उन्हें चरणबद्ध रूप से लागू किया:

- ❁ रास्तों की मरम्मत
- ❁ प्रकाश व्यवस्था
- ❁ बागवानी और हरियाली
- ❁ सूचना पट्ट
- ❁ पार्किंग व्यवस्था

इन प्रयासों से मंदिर का स्वरूप और अधिक सुंदर, सुरक्षित और व्यवस्थित बन गया।

❁ समाज और समिति का सहयोग

नई समिति ने स्थानीय समाज को साथ लेकर चलने की नीति अपनाई। समय-समय पर बैठकें आयोजित कर लोगों की समस्याएँ सुनी गई और उनके सुझावों को महत्व दिया गया।

शिकायत निवारण व्यवस्था स्थापित की गई, जिससे विवादों का समाधान समय पर हो सके। इससे समाज और समिति के बीच विश्वास और सहयोग की भावना मजबूत हुई।

❁ आस्था और सेवा का सुंदर संगम

आज मंदिर में जो अनुशासन, व्यवस्था और शांति दिखाई देती है, वह केवल प्रशासनिक सुधार का परिणाम नहीं, बल्कि सच्ची सेवा-भावना का प्रमाण है।

नई समिति ने यह सिद्ध कर दिया कि जब कार्य निष्ठा, ईमानदारी और श्रद्धा से किया जाए, तो किसी भी धार्मिक स्थल को आदर्श बनाया जा सकता है।

यह व्यवस्था आस्था और सेवा का एक सुंदर संगम बन चुकी है।

❁ नवयुग की ओर अग्रसर मंदिर

नई समिति का गठन माता की कृपा और भक्तों के सहयोग का परिणाम है। यह परिवर्तन मंदिर के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत है।

आज यह धाम:

🏠 श्रद्धा का केंद्र है

🏠 सेवा का प्रतीक है

🏠 अनुशासन का उदाहरण है

🏠 आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत है

हम सभी का कर्तव्य है कि:

- मंदिर की मर्यादा बनाए रखें
- नियमों का पालन करें
- समिति का सहयोग करें
- माँ की सेवा में योगदान दें

तभी आने वाली पीढ़ियों तक अपनी महिमा बनाए रखेगा और सदैव भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करता रहेगा।

यह धाम इतना आकर्षित क्यों--

माता के चमत्कार और भक्तों के अनुभव

माता कुनाल पत्थरी मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह असंख्य भक्तों के लिए चमत्कार, विश्वास और दिव्य कृपा का केंद्र है। यहाँ आने वाला हर श्रद्धालु अपने मन में कोई न कोई आशा, पीड़ा या प्रार्थना लेकर आता है और माता की कृपा से उसे समाधान प्राप्त होता है।

वर्षों से इस पावन धाम से जुड़े अनेक ऐसे अनुभव सामने आए हैं, जिन्हें भक्त माता का चमत्कार मानते हैं। ये अनुभव आस्था को और अधिक दृढ़ बनाते हैं।

❖ चमत्कार का अर्थ और आध्यात्मिक दृष्टि

चमत्कार का अर्थ केवल असाधारण घटना नहीं है, बल्कि वह अनुभूति है जिसमें भक्त को यह महसूस होता है कि माता स्वयं उसकी रक्षा और मार्गदर्शन कर रही हैं।

कई बार:

- असंभव कार्य संभव हो जाते हैं
- वर्षों की पीड़ा दूर हो जाती है
- मानसिक अशांति समाप्त हो जाती है
- जीवन में नई दिशा मिल जाती है

भक्त इन्हें माता की दिव्य कृपा का परिणाम मानते हैं।

❖ रोगों से मुक्ति के अनुभव

मंदिर से जुड़े अनेक भक्तों ने अपने अनुभव साझा किए हैं कि माता की कृपा से उन्हें गंभीर बीमारियों से राहत मिली।

कुछ श्रद्धालुओं का कहना है कि:

- लंबे समय से चली आ रही बीमारियाँ ठीक हुईं
- मानसिक तनाव दूर हुआ
- कमजोरी और भय समाप्त हुआ
- आत्मविश्वास लौटा

इन अनुभवों को भक्त माता के चरणों में समर्पित आस्था का फल मानते हैं।

❁ संकट से रक्षा के चमत्कार

कई भक्तों के जीवन में ऐसे क्षण आए जब वे भारी संकट में फँस गए थे। उस समय उन्होंने माता से प्रार्थना की और उन्हें आश्चर्यजनक रूप से सहायता मिली।

कुछ उदाहरणों में:

- दुर्घटनाओं से रक्षा
- आर्थिक संकट से मुक्ति
- न्यायिक मामलों में राहत
- पारिवारिक विवादों का समाधान

जैसी घटनाएँ सम्मिलित हैं।

भक्त मानते हैं कि माता अपने बच्चों की रक्षा स्वयं करती हैं।

❁ संतान सुख और पारिवारिक सुख

अनेक दंपतियों ने यह अनुभव साझा किया है कि वर्षों की प्रतीक्षा के बाद माता की कृपा से उन्हें संतान सुख प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त:

- परिवार में प्रेम बढ़ा
- वैवाहिक समस्याएँ दूर हुई
- आपसी मतभेद समाप्त हुए
- घर में सुख-शांति आई

इन सभी को भक्त माता का आशीर्वाद मानते हैं।

❁ मनोकामना पूर्ति के अनुभव

मंदिर में आने वाले अधिकांश भक्त अपनी कोई विशेष मनोकामना लेकर आते हैं। जब उनकी प्रार्थना पूरी होती है, तो वे पुनः मंदिर आकर धन्यवाद अर्पित करते हैं।

सामान्य मनोकामनाएँ होती हैं:

🙏 नौकरी प्राप्ति

🙏 व्यवसाय में सफलता

🙏 परीक्षा में उत्तीर्णता

🙏 विवाह योग

🙏 भूमि-भवन से जुड़े कार्य

हजारों भक्तों का विश्वास है कि माता सच्चे मन से माँगी गई प्रार्थनाएँ अवश्य पूर्ण करती हैं।

❁ दिव्य जल और श्रद्धा का प्रभाव

मंदिर में स्थित दिव्य जल को भक्त विशेष आस्था से ग्रहण करते हैं। कई श्रद्धालुओं का अनुभव है कि इस जल के सेवन से उन्हें शारीरिक और मानसिक लाभ प्राप्त हुआ।

यह जल केवल औषधि नहीं, बल्कि श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक माना जाता है। भक्तों का मानना है कि माता की कृपा इसमें समाहित रहती है।

❁ भक्तों की वाणी में अनुभव

यहाँ आने वाले भक्त जब अपने अनुभव साझा करते हैं, तो उनके शब्दों में श्रद्धा और कृतज्ञता स्पष्ट झलकती है।

कुछ भक्त कहते हैं:

“माता ने मुझे जीवन दिया।”

“आज जो कुछ हूँ, माँ की कृपा से हूँ।”

“मेरी हर परेशानी माँ ने दूर की।”

ये शब्द किसी पुस्तक में लिखे नहीं जा सकते, इन्हें केवल अनुभव किया जा सकता है।

❁ वैज्ञानिक और आध्यात्मिक संतुलन

यह आवश्यक है कि भक्त अपने अनुभवों को श्रद्धा के साथ देखें, लेकिन चिकित्सा और विज्ञान का सम्मान भी बनाए रखें।

माता की भक्ति:

- आत्मबल बढ़ाती है
- सकारात्मक सोच देती है
- मन को शांत करती है
- जीवन में आशा जगाती है

यही सकारात्मकता कई बार चमत्कार का रूप ले लेती है।

❁ आस्था से परिवर्तन का मार्ग

माता की भक्ति केवल चमत्कार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के जीवन को संपूर्ण रूप से बदल देती है।

भक्तों में:

- ✓ धैर्य बढ़ता है
- ✓ संयम आता है
- ✓ सेवा भावना जागृत होती है
- ✓ नैतिकता विकसित होती है

यह परिवर्तन ही सबसे बड़ा चमत्कार है।

❁ चमत्कार नहीं, माँ की ममता

माता के चमत्कार वास्तव में उनकी ममता, करुणा और कृपा का ही स्वरूप हैं। वह अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करतीं।

जो श्रद्धा से उनके चरणों में शीश झुकाता है, उसे:

 शक्ति मिलती है

🙏 शांति मिलती है

🙏 मार्गदर्शन मिलता है

🙏 जीवन का उद्देश्य मिलता है

यही माता का सच्चा चमत्कार है।

सरकारी और प्रशासनिक पहल

जिला प्रशासन ने मंदिर को सरकार के अधीन करने की प्रक्रिया शुरू की। सरकार के नियंत्रण में आने से मंदिर के बुनियादी ढांचे, जैसे सड़क मार्ग, श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएं और पर्यटन विकास को बढ़ावा मिलने की संभावना है। यह कदम मंदिर को और अधिक प्रसिद्धि और संसाधन उपलब्ध करा सकता है।

5.1 प्राकृतिक और स्थानीय योगदान

मंदिर का विकास इसकी प्राकृतिक सुंदरता और भौगोलिक स्थिति से भी जुड़ा है। यह चाय के बागानों और धौलाधार पर्वत श्रृंखला की गोद में स्थित है, जो इसे एक आकर्षक स्थल बनाता है। शुरुआत में यह संभवतः एक छोटा पूजा स्थल रहा होगा, लेकिन समय के साथ स्थानीय लोगों ने इसे विकसित किया। मंदिर के आसपास की शांत और मनोरम वादियां श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करती हैं, जिसने इसके विकास में सहायता की।

धार्मिक और सामुदायिक प्रयास

स्थानीय समुदाय और भक्तों ने मंदिर के रखरखाव और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मंदिर में एक निजी कमेटी या ट्रस्ट द्वारा प्रबंधन किया जाता रहा है, जो श्रद्धालुओं की सुविधाओं का ध्यान रखता है। नवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर यहां भारी भीड़ जुटती है, जिसके कारण मंदिर की व्यवस्था को बेहतर करने की जरूरत पड़ी। मंदिर में माता के कपाल के ऊपर स्थित पत्थर में हमेशा पानी भरा रहता है, और इस जल को चमत्कारी माना जाता है। भक्त इसे प्रसाद के

रूप में ले जाते हैं और बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग करते हैं। इस आस्था ने मंदिर की प्रसिद्धि बढ़ाई और इसके विकास को प्रोत्साहित किया।

इसके मूल स्वरूप, उत्पत्ति, और समय के साथ हुए पुनर्निर्माण या संरक्षण के बारे में स्पष्ट लिखित ऐतिहासिक दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि यह मंदिर मुख्य रूप से स्थानीय लोक विश्वासों और मौखिक परंपराओं पर आधारित है। फिर भी, स्थानीय लोगों, पुजारियों और उपलब्ध जानकारी के आधार पर इसके मूल स्वरूप और विकास के बारे में कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। नीचे इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी दी गई है:

मंदिर का मूल स्वरूप

1. स्वयंभू उत्पत्ति:

माता कुनाल पत्थरी मंदिर की उत्पत्ति स्वयंभू (प्राकृतिक रूप से प्रकट) मानी जाती है। लोक कथाओं के अनुसार, माँ यहाँ एक पत्थर के रूप में प्रकट हुई थीं, जिससे जल निकलता है। इस पत्थर को मंदिर का मूल केंद्र माना जाता है। शुरू में यह संभवतः एक साधारण पूजा स्थल रहा होगा, जहाँ कोई भव्य संरचना नहीं थी, बल्कि केवल प्राकृतिक पत्थर और उसके आसपास का क्षेत्र ही पूजा का आधार था।

स्थानीय मान्यता है कि यह पत्थर माँ सती के कपाल का प्रतीक है, जो शक्तिपीठ की कथा से जुड़ा है। इस कारण मंदिर का मूल स्वरूप संभवतः एक खुले स्थान के रूप में था, जहाँ भक्त प्राकृतिक रूप से पूजा करते थे।

2. प्रारंभिक संरचना:

मंदिर का प्रारंभिक स्वरूप बहुत सादगी भरा रहा होगा, जैसा कि हिमाचल प्रदेश के कई अन्य प्राचीन शक्ति स्थलों में देखा जाता है। यह एक छोटा गुफा-जैसा ढांचा या पत्थरों से बना मंडप हो सकता था, जो पवित्र पत्थर और जल स्रोत को संरक्षित करता था। स्थानीय लोग बताते हैं कि शुरू में यहाँ कोई बड़ा मंदिर नहीं था, बल्कि यह एक तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

3. प्राकृतिक परिवेश:

मंदिर का मूल आकर्षण इसका प्राकृतिक परिवेश रहा होगा। चाय के बागानों और धौलाधार पर्वतों से घिरा यह स्थान अपने आप में एक शांत और पवित्र वातावरण प्रदान करता था। संभवतः शुरू में यहाँ कोई कृत्रिम निर्माण नहीं था, और भक्त खुले में ही माँ की पूजा करते थे। समय के साथ पुनर्निर्माण और संरक्षण हुआ है।

4. मंदिर का विकास:

समय के साथ, जैसे-जैसे मंदिर की प्रसिद्धि बढ़ी और श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हुई, इसके आसपास संरचनात्मक विकास हुआ। स्थानीय लोगों और भक्तों के सहयोग से मंदिर को एक ठोस ढांचे का रूप दिया गया। वर्तमान में मंदिर का स्वरूप एक छोटे मगर व्यवस्थित मंदिर का है, जिसमें गर्भगृह (जहाँ माता की पिंडी और पवित्र कुनाल स्थित है), पूजा मंडप, और आसपास कुछ सुविधाएँ शामिल हैं।

यह अनुमान लगाया जाता है कि मंदिर का पहला पुनर्निर्माण संभवतः 19वीं या 20वीं सदी में हुआ होगा, जब हिमाचल के अन्य धार्मिक स्थलों का भी आधुनिकीकरण शुरू हुआ। हालाँकि, इसके सटीक समय के बारे में कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

5. आधुनिक संरचना:

आज का मंदिर एक साधारण लेकिन कार्यात्मक संरचना है। गर्भगृह में माता की पिन्डी और पवित्र कुनाल मुख्य आकर्षण है, और इसके ऊपर एक छत बनाई गई है ताकि इसे प्राकृतिक आपदाओं से बचाया जा सके। मंदिर परिसर में लंगर भवन, सराय (ठहरने की सुविधा), और श्रद्धालुओं के लिए बैठने की जगह जैसी सुविधाएँ जोड़ी गई हैं।

मंदिर की दीवारें और छत पर साधारण चित्रकारी और सजावट देखी जा सकती है, जो स्थानीय शैली को दर्शाती है। यह संरचना पारंपरिक हिमाचली वास्तुकला से प्रभावित लगती है, जिसमें लकड़ी और पत्थर का उपयोग प्रमुख है।

6. संरक्षण प्रयास:

मंदिर का संरक्षण मुख्य रूप से स्थानीय समुदाय और भक्तों के दान पर निर्भर है। समय-समय पर मंदिर की मरम्मत और सुधार कार्य किए जाते हैं, जैसे कि छत को मजबूत करना, जल स्रोत की सफाई, और परिसर को साफ-सुथरा रखना।

नवरात्रि जैसे बड़े त्योहारों से पहले मंदिर को विशेष रूप से सजाया और संवारा जाता है। फूलों, रंगोली,

और रोशनी से मंदिर का स्वरूप और आकर्षक हो जाता है।

हाल के वर्षों में, मंदिर की लोकप्रियता बढ़ने के कारण सरकार और स्थानीय प्रशासन ने भी इसे पर्यटन और तीर्थ स्थल के रूप में बढ़ावा देने के लिए कुछ बुनियादी सुविधाएँ (जैसे रास्ते और पार्किंग) विकसित की हैं।

7. प्राकृतिक जल स्रोत का संरक्षण:

मंदिर के चमत्कारी जल स्रोत को सुरक्षित रखने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है, ताकि श्रद्धालु इसे आसानी से प्राप्त कर सकें। इस जल स्रोत को प्रदूषण से बचाने के लिए भी समय-समय पर सफाई की जाती है।

समय के साथ बदलाव

- **लोकप्रियता का प्रभाव:**

शुरू में यह मंदिर स्थानीय लोगों के लिए एक छोटा पूजा स्थल था, लेकिन पथरी रोग के निवारण और चमत्कारी जल की मान्यता के कारण यह देश-विदेश के श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। इस बढ़ती भीड़ को संभालने के लिए मंदिर का विस्तार और संरक्षण आवश्यक हुआ है।

- **आधुनिकीकरण:**

मंदिर का मूल स्वरूप प्राकृतिक और सादगी भरा था, लेकिन आधुनिक समय में सुविधाओं (जैसे बिजली, पानी, और सड़क) के जुड़ने से इसका रूप कुछ हद तक बदल गया है। फिर भी, मंदिर की मूल आत्मा—पवित्र पत्थर और जल स्रोत—अब भी संरक्षित है।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर का मूल स्वरूप संभवतः एक स्वयंभू पत्थर और प्राकृतिक जल स्रोत के इर्द-गिर्द केंद्रित था, जिसमें कोई बड़ी संरचना नहीं थी। समय के साथ, श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और आस्था के कारण इसे एक व्यवस्थित मंदिर का रूप दिया गया। इसका पुनर्निर्माण और संरक्षण स्थानीय समुदाय के प्रयासों से हुआ, और आज यह एक साधारण मगर कार्यात्मक धार्मिक स्थल के रूप में खड़ा है। ऐतिहासिक दस्तावेजों की कमी के कारण सटीक तारीखें और विवरण अनुपलब्ध हैं, लेकिन लोक कथाएँ और वर्तमान स्वरूप इसके विकास की कहानी को रेखांकित करते हैं।

माता के मंदिर या तीर्थस्थल की वर्तमान स्थिति।

आज मंदिर एक शांतिपूर्ण पूजा स्थल के रूप में स्थापित है, जहाँ स्थानीय लोग और कुछ बाहरी श्रद्धालु आते हैं। इसके सरकारीकरण की प्रक्रिया चल रही है, जिससे भविष्य में बड़े पैमाने पर विकास कार्य हो सकते हैं। यह मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य और स्थानीय संस्कृति का भी प्रतीक है।

इस प्रकार, माता कुनाल पत्थरी मंदिर का विकास पौराणिक मान्यताओं, स्थानीय समुदाय की भक्ति, प्राकृतिक सुंदरता और अब सरकारी प्रयासों का संयोजन है। यह एक ऐसी जगह है जो धीरे-धीरे अपनी पहचान को और मजबूत कर रही है।

मंदिर का मूल स्वरूप प्राकृतिक और सादगी भरा था, लेकिन आधुनिक समय में सुविधाओं (जैसे बिजली, पानी, और सड़क) के जुड़ने से इसका रूप कुछ हद तक बदल गया है। फिर भी, मंदिर की मूल आत्मा—माता की पिंडी और पवित्र कुनाल तथा उसमें दिव्या जल —अब भी संरक्षित है।

5.2 आधुनिक परिप्रेक्ष्य की भी बात

अब हम आधुनिक परिप्रेक्ष्य की भी बात करते हैं जैसे--- आधुनिकीकरण, भीड़ प्रबंधन और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव जैसी समस्याएं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर, हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के पास एक महत्वपूर्ण शक्तिपीठ है। इसके आधुनिकीकरण, भीड़ प्रबंधन और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव से संबंधित समस्याओं और संभावित समाधानों को नीचे विस्तार से बताया गया है:

1. आधुनिकीकरण की समस्याएं और सुझाव

- **वर्तमान स्थिति:**

मंदिर का प्राकृतिक और सादगी भरा स्वरूप इसकी विशेषता है, लेकिन आधुनिक सुविधाओं की कमी (जैसे बैठने की जगह, शौचालय, या डिजिटल जानकारी बोर्ड) श्रद्धालुओं को असुविधा दे सकती है। मंदिर का ढांचा प्राचीन है, और अनियोजित आधुनिकीकरण से इसकी मूल संरचना को नुकसान पहुंच सकता है।

- **समस्याएं:**

- मंदिर की प्राचीन संरचना पर आधुनिक निर्माण का जोखिम, जो इसकी ऐतिहासिकता को प्रभावित कर सकता है।
- बिजली, पानी और इंटरनेट जैसी सुविधाओं की कमी, जो पर्यटकों और श्रद्धालुओं की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करती।
- स्थानीय समुदाय और पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखने में चुनौती।

- **सुझाव:**

- **संरक्षण के साथ आधुनिकीकरण:**

पुरातत्व विभाग की देखरेख में मंदिर की मरम्मत और सौंदर्यीकरण किया जाए, ताकि मूल वास्तुकला सुरक्षित रहे। **उदाहरण** के लिए, सौर ऊर्जा से चलने वाली लाइट्स लगाई जा सकती हैं।

- **डिजिटल उपस्थिति:**

मंदिर की वेबसाइट और मोबाइल ऐप बनाया जाए, जिसमें दर्शन का समय, नवरात्रि उत्सव की जानकारी और वर्चुअल दर्शन की सुविधा हो।

- **बुनियादी सुविधाएं:**

स्वच्छ शौचालय, पीने का पानी और विश्राम कक्ष जैसी सुविधाएं में विकास हुआ है, लेकिन कुछ और भी करने की आवश्यकता है, इन्हें मंदिर के प्राकृतिक परिवेश के अनुरूप डिज़ाइन किया जाए।

- **पर्यटक सूचना केंद्र:**

मंदिर के पास एक छोटा केंद्र बनाया जाए, जहां मंदिर के इतिहास, कथाओं और दर्शन की प्रक्रिया की जानकारी दी जाए।

2. भीड़ प्रबंधन की समस्याएं और सुझाव

- **वर्तमान स्थिति:**

नवरात्रि और अन्य विशेष अवसरों पर मंदिर में भारी भीड़ उमड़ती है। मंदिर का छोटा परिसर और संकरी पहुंच मार्ग भीड़ को नियंत्रित करने में बाधा डालते हैं। इससे श्रद्धालुओं को लंबा इंतज़ार करना पड़ता है, और कभी-कभी सुरक्षा जोखिम भी बढ़ जाता है।

- **समस्याएं:**

- संकरे रास्ते और सीमित स्थान के कारण दर्शन में देरी और अव्यवस्था।
- आपातकालीन स्थिति (जैसे चिकित्सा या आग) के लिए अपर्याप्त व्यवस्था।
- भीड़ के कारण स्थानीय लोगों और पर्यटकों के बीच तनाव की संभावना।

- **सुझाव:**

- **टोकन सिस्टम:**

नवरात्रो मे **भीड़** होने पर ऑनलाइन या ऑफलाइन टोकन सिस्टम लागू किया जाए, जिससे श्रद्धालुओं को समय-समय पर दर्शन के लिए बुलाया जाए। यह **भीड़** को नियंत्रित करेगा।

- **विशेष दर्शन व्यवस्था:**

नवरात्रि जैसे व्यस्त समय में विशेष दर्शन की सुविधा शुरू की जाए, जिसमें सीमित संख्या में लोग एक साथ दर्शन कर सकें।

- **सुरक्षा उपाय:**

मंदिर परिसर में सीसीटीवी कैमरे, पुलिस चौकी और प्राथमिक चिकित्सा केंद्र स्थापित किए जाएं। भीड़ को निर्देशित करने के लिए प्रशिक्षित स्वयंसेवकों की नियुक्ति हो।

- **रास्तों का विस्तार:**

मंदिर तक जाने वाले रास्तों को चौड़ा करने और पैदल मार्ग को बेहतर करने की योजना बनाई जाए, ताकि भीड़ का प्रवाह सुचारू हो।

3. प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव की समस्याएं और सुझाव

- **वर्तमान स्थिति:**

मंदिर चाय बागानों और जंगलों से घिरा है, और धौलाधार पर्वत की निकटता इसे पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील बनाती है। बढ़ती भीड़ और पर्यटन के कारण जल, मिट्टी और वनस्पति पर दबाव बढ़ रहा है।

- **समस्याएं:**

- **जल संसाधन:**

मंदिर में कुनाल पर एकत्र होने वाला जल श्रद्धालुओं के लिए पवित्र है, लेकिन भीड़ के कारण इसकी मांग बढ़ रही है, जिससे प्राकृतिक जल स्रोतों पर दबाव पड़ सकता है।

- **कचरा प्रबंधन:**

प्लास्टिक और अन्य कचरे का ढेर पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है।

- **वनस्पति और मिट्टी:**

चाय बागानों और जंगलों में अनियंत्रित पैदल यात्रा से मिट्टी का कटाव और पौधों को नुकसान हो रहा है।

- **सुझाव:**

- **जल संरक्षण:**

मंदिर के जल को व्यवस्थित रूप से वितरित करने के लिए एक प्रणाली बनाई जाए, ताकि बर्बादी न हो। वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की जा सकती है।

- **कचरा प्रबंधन:**

मंदिर परिसर में डस्टबिन और रीसाइक्लिंग यूनिट लगाए जाएं। प्लास्टिक बैग पर प्रतिबंध और जागरूकता अभियान चलाए जाएं।

- **पर्यावरण संरक्षण:**

चाय बागानों और जंगलों में नियंत्रित पैदल मार्ग बनाए जाएं, ताकि मिट्टी का कटाव रुके। स्थानीय पौधों का रोपण और वन संरक्षण अभियान शुरू किया जाए।

- **पर्यटक सीमा:**

व्यस्त मौसम में प्रति दिन दर्शनार्थियों की संख्या सीमित की जाए, ताकि पर्यावरण पर दबाव कम हो।

माता कुनाल पथरी मंदिर का आधुनिकीकरण, भीड़ प्रबंधन और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एक संतुलित दृष्टिकोण की मांग करता है। मंदिर की पवित्रता और प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखते हुए आधुनिक सुविधाएं और प्रबंधन रणनीतियां लागू की जानी चाहिए। स्थानीय समुदाय, प्रशासन और पर्यावरण विशेषज्ञों के सहयोग से ये समस्याएं हल की जा सकती हैं।

5.3 मंदिर के रखरखाव और इसके प्रचार-प्रसार में सरकार या समुदाय की भूमिका

इस मंदिर के रखरखाव और प्रचार-प्रसार में सरकार और समुदाय दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, हालाँकि इनका योगदान अलग-अलग स्तरों पर देखा जा सकता है।

सरकार की भूमिका

हिमाचल प्रदेश सरकार, विशेष रूप से पर्यटन विभाग, माता कुनाल पथरी मंदिर जैसे धार्मिक स्थलों को बढ़ावा देने में सक्रिय रही है,

क्योंकि यह क्षेत्र पर्यटन के लिए भी प्रसिद्ध है। सरकार ने मंदिर तक पहुँच को सुगम बनाने के लिए सड़क मार्ग और परिवहन सुविधाओं को बेहतर किया है। धर्मशाला बस अड्डे से मंदिर के लिए बसें और टैक्सी की उपलब्धता इसका उदाहरण है। इसके अलावा, मंदिर के आसपास बुनियादी सुविधाओं जैसे शौचालय, पार्किंग और स्वच्छता व्यवस्था को बनाए रखने में स्थानीय प्रशासन की भूमिका रहती है।

हालांकि, मंदिर का सीधा प्रबंधन सरकार द्वारा नहीं किया जाता। यहाँ का रखरखाव मुख्य रूप से स्थानीय पुजारियों और मंदिर समिति के हाथ में है। सरकार समय-समय पर धार्मिक मेलों और नवरात्रि जैसे अवसरों पर सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन के लिए पुलिस और प्रशासनिक सहायता प्रदान करती है। पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित सामग्री में भी इस मंदिर का उल्लेख होता है, जिससे इसका प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है। फिर भी, कुछ श्रद्धालुओं का मानना है कि सरकार मंदिर के बुनियादी ढांचे के उन्नयन और रखरखाव के लिए और अधिक धन आवंटित कर सकती है।

समुदाय की भूमिका

माता कुनाल पथरी मंदिर के रखरखाव और प्रचार में स्थानीय समुदाय की भूमिका कहीं अधिक प्रत्यक्ष और गहरी है। यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, और स्थानीय लोग इसे अपनी सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखते हैं। मंदिर की दिन-प्रतिदिन की देखभाल, पूजा-अर्चना और सफाई का कार्य पुजारी और समुदाय के सदस्य मिलकर करते हैं। यहाँ आने वाले भक्तों द्वारा चढ़ाया गया दान मंदिर के रखरखाव में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

नवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर समुदाय ढोल-नगाड़ों के साथ उत्सव आयोजित करता है, जिससे मंदिर की ख्याति दूर-दूर तक फैलती है। मंदिर से जुड़ी मान्यता—जैसे कि कपाल पर स्थित पथर के पानी से रोगों का इलाज—को समुदाय के लोग मौखिक परंपराओं और

लोककथाओं के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। यह प्रचार का एक प्राकृतिक और प्रभावी तरीका है, जो बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के पीढ़ियों से चला आ रहा है।

सहयोग और चुनौतियाँ

सरकार और समुदाय के बीच सहयोग के बावजूद, कुछ चुनौतियाँ भी हैं। मंदिर के आसपास के क्षेत्र में पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण स्वच्छता और संसाधनों पर दबाव बढ़ा है, जिसे संभालने के लिए और बेहतर समन्वय की आवश्यकता है। समुदाय चाहता है कि सरकार मंदिर को एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में और विकसित करे, ताकि यहाँ सुविधाएँ बढ़ें और अधिक श्रद्धालु आकर्षित हों। दूसरी ओर, सरकार का ध्यान व्यापक पर्यटन विकास पर अधिक केंद्रित है, जिसमें धार्मिक स्थलों के साथ-साथ अन्य आकर्षण भी शामिल हैं।

माता कुनाल पत्थरी मंदिर के रखरखाव और प्रचार-प्रसार में सरकार और समुदाय दोनों की भूमिका पूरक है। जहाँ सरकार बुनियादी ढांचा और प्रचार के लिए संसाधन उपलब्ध कराती है, वहीं समुदाय इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखता है। इन दोनों के संयुक्त प्रयासों से यह मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल के रूप में, बल्कि हिमाचल की समृद्ध परंपरा के प्रतीक के रूप में भी अपनी महत्ता बनाए हुए है।

5.4 युवा पीढ़ी को माता की भक्ति से कैसे जोड़ा जा सकता है:

युवा पीढ़ी को माता कुनाल पत्थरी मंदिर और माता की भक्ति से जोड़ने के लिए आधुनिक और प्रासंगिक तरीके अपनाने होंगे, खासकर धर्मशाला जैसे आध्यात्मिक और प्राकृतिक रूप से समृद्ध स्थान के संदर्भ में। यहाँ कुछ सुझाव हैं:

1. डिजिटल और सोशल मीडिया का उपयोग:

- माता कुनाल पथरी मंदिर और धर्मशाला की खूबसूरती को इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर प्रचारित करें। छोटे वीडियो बनाएं, जो मंदिर की कहानियाँ, चाय बागानों के दृश्य, और धौलाधार की भव्यता दिखाएँ।
- उदाहरण: एक रील जिसमें कोई युवा मंदिर की यात्रा का अनुभव साझा करे, जिसमें माता की करुणा और शांति को आधुनिक जीवन से जोड़ा जाए। हैशटैग जैसे #DharamshalaDivinity या #MataKunalPathri का उपयोग करें।

2. आध्यात्मिक पर्यटन को आकर्षक बनाना:

- धर्मशाला को एक "आध्यात्मिक और एडवेंचर हब" के रूप में पेश किया जा सकता है। युवाओं को ट्रेकिंग, मेडिटेशन रिट्रीट, और माता कुनाल पथरी मंदिर की यात्रा के कॉम्बो पैकेज ऑफर किये जा सकते हैं।
- मंदिर के पास कार्यशालाएँ आयोजित करें, जैसे योग, माइंडफुलनेस, या तिब्बती संस्कृति पर सत्र, जो युवाओं को आकर्षित करता है।

3. माता के मूल्यों को आधुनिक जीवन से जोड़ना:

- युवाओं को एहसास करवाया जा सकता है कि माता की करुणा, शक्ति, और विश्वास उनके जीवन की चुनौतियों (पढ़ाई, करियर, रिश्ते) से कैसे मददगार हैं। कहानियाँ साझा की जा सकती हैं, जैसे-- कैसे मंदिर की शांति ने किसी को तनाव से उबरने में मदद की।
- धर्मशाला में माता के दर्शन को "आत्म-खोज की यात्रा" के रूप में प्रचारित किया जा सकता है, जो

युवाओं की मानसिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करता है।

4. सामुदायिक और सांस्कृतिक आयोजन:

- मंदिर और धर्मशाला में युवाओं के लिए सांस्कृतिक फेस्टिवल आयोजित करें, जिसमें लोक नृत्य, संगीत, और स्थानीय व्यंजन हों। तिब्बती और हिमाचली संस्कृति को माता की भक्ति के साथ जोड़ा जा सकता है।
- स्वयंसेवा के अवसर दें, जैसे चाय बागानों में मदद या मंदिर के आसपास सफाई अभियान, जो युवाओं को सामाजिक कार्य से जोड़े।

5. शिक्षा और कहानी कहने का मिश्रण:

- स्कूलों और कॉलेजों में माता कुनाल पत्थरी की कहानियों पर आधारित कार्यशालाएँ चलाएँ। इनमें माता के मूल्यों को नैतिकता और नेतृत्व के साथ जोड़ा जाए।
- धर्मशाला में स्टोरीटेलिंग सत्र आयोजित करें, जहाँ स्थानीय लोग और पुजारी माता की कथाएँ सुनाएँ, जो युवाओं को प्रेरित करें।

6. रोल मॉडल्स और इन्फ्लुएंसर्स:

- युवा इन्फ्लुएंसर्स या स्थानीय हस्तियों को मंदिर की यात्रा के लिए आमंत्रित करें, जो अपने अनुभव साझा करें। इससे युवा पीढ़ी प्रेरित होगी।
- उदाहरण: एक ब्लॉगर जो धर्मशाला में माता के दर्शन के बाद अपनी मानसिक शांति की कहानी शेयर करे।

उदाहरण:

एक युवा जो धर्मशाला में माता कुनाल पत्थरी मंदिर जाता है, वह चाय बागानों में समय बिताता है, धौलाधार की ट्रेकिंग करता है, और मंदिर में प्रार्थना के बाद अपनी जिंदगी में विश्वास और शक्ति की नई प्रेरणा पाता है। वह अपने अनुभव को सोशल मीडिया पर साझा करता है, जिससे उसके दोस्त भी इस यात्रा के लिए उत्साहित होते हैं।

धर्मशाला की प्राकृतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में माता कुनाल पत्थरी मंदिर के मूल्यों को आधुनिक जीवन से जोड़कर और युवाओं की रुचियों (डिजिटल, ट्रैवल, माइंडफुलनेस) को ध्यान में रखकर उन्हें भक्ति से जोड़ा जा सकता है। माता की करुणा, शक्ति, और विश्वास को उनके रोजमर्रा के जीवन में लागू करने के लिए प्रेरित करना सबसे प्रभावी होगा।

5.5 यात्रियों की नजर से:

मंदिर आने वाले पर्यटकों के नजरिए से चाय बागानों, धौलाधार पर्वतों और शांत वातावरण का दृश्य

धर्मशाला का उल्लेख माता कुनाल पत्थरी मंदिर के संदर्भ को और जीवंत बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्थान न केवल आध्यात्मिक, बल्कि प्राकृतिक और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है। यहाँ मैं कुछ ओर भी लिख रहा हूँ, जिससे वर्णन प्रासंगिक, आकर्षक और मंदिर के अनुभव को ओर अधिक समृद्ध करता है।

1. प्राकृतिक सौंदर्य के साथ मंदिर का मेल:

धर्मशाला के चाय बागानों और धौलाधार पर्वतों के बीच माता कुनाल पत्थरी मंदिर की शांति को इस तरह वर्णित है कि यह तीर्थयात्रियों के लिए एक दैवीय अनुभव बनता है।

उदाहरण:

धर्मशाला की गोद में बसा माता कुनाल पत्थरी मंदिर, जहाँ चाय बागानों की हरियाली और धौलाधार की बर्फ़ीली चोटियों का सान्निध्य श्रद्धालुओं को प्रकृति और माता के दर्शन एक साथ कराता है। सुबह की धुंध में मंदिर का घंटा और चाय की पत्तियों की महक एक ऐसी शांति देती है, जो मन को माता की भक्ति में डुबो देती है।

2. आध्यात्मिकता और शांति का संगम:

3. धर्मशाला को एक ऐसी जगह के रूप दिखाता है, जो मंदिर की पवित्रता को और गहरा कर देती है।

धर्मशाला का शांत वातावरण, जहाँ हवा में तिब्बती मंत्रों की गूंज और चाय बागानों की ताजगी मिश्रित होती है, माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा को और भी आध्यात्मिक बनाता है। यहाँ माता के दर्शन के साथ धौलाधार की विशालता श्रद्धालुओं को आत्मिक सुकून देती है।

4. सांस्कृतिक जीवंतता से जोड़ता:

धर्मशाला की तिब्बती संस्कृति और मंदिर की स्थानीय परंपराओं को जोड़कर एक समग्र अनुभव है।

धर्मशाला, जहाँ तिब्बती प्रार्थना झंडे हवा में लहराते हैं और चाय बागानों की हरियाली मन मोह लेती है, माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा को एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्सव में बदल देता है। मंदिर की सादगी और धौलाधार की भव्यता यहाँ आने वाले हर यात्री के लिए एक अविस्मरणीय कहानी रचती है।

5. यात्री के दृष्टिकोण को जीवंत करता :

यात्रियों की भावनाओं को धर्मशाला के परिदृश्य के साथ इस तरह जोड़ता है कि मंदिर का महत्व उभरकर सामने आता है।

जब यात्री धर्मशाला की घाटियों में कदम रखते हैं, तो चाय बागानों की ताजगी और धौलाधार की बुलंदियां उन्हें माता कुनाल पत्थरी मंदिर की ओर खींच लाती हैं। यहाँ मंदिर की शांत मूर्ति के सामने खड़े होकर, हवा की सरसराहट और माता की कृपा एक ऐसी शांति देती है, जो यात्रा को जीवन का अनमोल पल बना देती है।

6. प्रभावशाली जोड़:

धर्मशाला के चाय बागानों और धौलाधार की छांव में माता कुनाल पत्थरी मंदिर की शांति हर यात्री को माता के आलिंगन-सा सुकून देती है।

धर्मशाला की गोद में बसे माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा हर यात्री के लिए एक अनुपम अनुभव है। यहाँ चाय बागानों की लहराती हरियाली मन को शीतलता देती है, तो धौलाधार पर्वतों की बर्फोली चोटियां, जो सूर्य की किरणों में चमकती हैं, आत्मा को माता की भक्ति में लीन कर देती हैं। धर्मशाला का शांत वातावरण, जहाँ पक्षियों की चहचहाहट और मंदिर की घंटियों की गूंज एक साथ गूंजती है, यात्रियों को एक ऐसी शांति देता है, जो जीवनभर याद रहती है।

यह सभी बातें धर्मशाला को मंदिर के संदर्भ से जोड़ती हैं, साथ ही प्राकृतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक तत्वों को संतुलित करता है, जो यात्रियों के लिए आकर्षक और प्रासंगिक है।

5.6 माता के मूल्य (जैसे करुणा, शक्ति, विश्वास) आज के समय में कैसे लागू हो सकते हैं।

माता के मूल्य (करुणा, शक्ति, विश्वास) आज के समय में लागू हैं:

माता कुनाल पथरी मंदिर की आध्यात्मिकता और माता के मूल्य—करुणा, शक्ति, और विश्वास—आज के आधुनिक जीवन में भी गहरी प्रासंगिकता रखते हैं। धर्मशाला की शांत और पवित्र पृष्ठभूमि में ये मूल्य और भी गूंजते हैं। इन्हें आज के समय में इस तरह से लागू है।

1. करुणा:

○ प्रासंगिकता:

आज की भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में करुणा दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति लाती है। माता की करुणा हमें सिखाती है कि छोटे-छोटे कार्यों, जैसे जरूरतमंद की मदद करना या किसी को सुनना, से समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

○ लागू करना:

कार्यस्थल पर सहकर्मियों के प्रति सहानुभूति, परिवार में एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान, या सामाजिक कार्यों में भाग लेना। उदाहरण के लिए, धर्मशाला जैसे शांत स्थान पर स्वयंसेवा करना, जहाँ तिब्बती समुदाय और स्थानीय लोग एकजुटता दिखाते हैं, करुणा को जीवंत करता है।

आज के समय में लागू करना:

- अपने समुदाय में जरूरतमंद लोगों की मदद करना, जैसे कि गरीबों को भोजन, कपड़े, या शिक्षा में सहायता प्रदान करना।
- दूसरों के प्रति सहानुभूति दिखाना, जैसे कि परिवार, दोस्तों, या अजनबियों के साथ दयालु व्यवहार करना।
- सामाजिक कार्यों में भाग लेना, जैसे कि स्थानीय स्तर पर स्वच्छता अभियान या वृद्धाश्रमों में सेवा।

- उदाहरण: धर्मशाला में माता के भक्त अक्सर मंदिर के आसपास दान और सेवा कार्य करते हैं, जो करुणा का प्रतीक है।

2. शक्ति:

○ प्रासंगिकता:

माता की शक्ति आंतरिक साहस और दृढ़ता का प्रतीक है, जो आज की चुनौतियों—कैरियर, मानसिक स्वास्थ्य, या सामाजिक दबावों—से निपटने के लिए जरूरी है। यह हमें असफलताओं से उबरने और अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है।

○ लागू करना:

व्यक्तिगत जीवन में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए मेडिटेशन या धर्मशाला जैसे शांत स्थानों पर आत्म-चिंतन। सामाजिक स्तर पर, महिलाओं और कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने के लिए आवाज उठाना माता की शक्ति को दर्शाता है।

आज के समय में लागू करना:

- व्यक्तिगत और सामाजिक चुनौतियों, जैसे कि नौकरी में असफलता, आर्थिक तंगी, या सामाजिक अन्याय, का सामना आत्मविश्वास और धैर्य से करना।
- महिलाओं और युवाओं को अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना।
- शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए योग, ध्यान, और स्वस्थ जीवनशैली अपनाना।

- उदाहरण: माता के भक्त कठिन समय में मंदिर में प्रार्थना कर अपनी मानसिक शक्ति को बढ़ाते हैं।

3. विश्वास:

- **प्रासंगिकता:**

विश्वास हमें अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता देता है। माता पर भरोसा हमें अपने आप पर और जीवन की प्रक्रिया पर भरोसा करना सिखाता है, जो आज की अनिश्चित दुनिया में मानसिक शांति के लिए जरूरी है।

- **लागू करना:**

दैनिक जीवन में छोटे-छोटे अनुष्ठान, जैसे प्रार्थना या कृतज्ञता दिखाना। धर्मशाला में माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा, जहाँ धौलाधार की भव्यता और मंदिर की शांति विश्वास को गहरा करती है, लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ती है।

आज के समय में लागू करना:

- अपने धार्मिक या आध्यात्मिक विश्वास को बनाए रखना, जो जीवन में आशा और दिशा प्रदान करता है।
- अपने लक्ष्यों और नैतिकता में विश्वास रखना, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों।
- दूसरों के साथ विश्वास और ईमानदारी से रिश्ते बनाना, जैसे कि परिवार और समाज में भरोसे को बढ़ावा देना।
- उदाहरण: माता कुनाल पत्थरी मंदिर में नवरात्रि या अन्य उत्सवों के दौरान भक्तों का विश्वास और भक्ति देखने को मिलता है।

उदाहरण:

एक युवा पेशेवर जो तनाव में है, धर्मशाला में माता के दर्शन के बाद करुणा से दूसरों की मदद करता है, शक्ति से अपने डर पर काबू पाता है, और विश्वास से जीवन में संतुलन पाता है। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत विकास, बल्कि सामाजिक सद्भाव के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

- **मंदिर का महत्व और आधुनिक प्रासंगिकता:**
- माता कुनाल पत्थरी मंदिर धर्मशाला से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो इसे स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए आसानी से सुलभ बनाता है। यह मंदिर पत्थर की मूर्ति के रूप में माता की पूजा के लिए प्रसिद्ध है, जो भक्तों को सादगी और शक्ति का संदेश देता है। आज के समय में, इस मंदिर के मूल्य निम्नलिखित तरीकों से लागू हो सकते हैं:

- **सामुदायिक एकता:**

मंदिर में होने वाले धार्मिक आयोजनों में लोग एक साथ आते हैं, जो सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है।

- **पर्यावरण संरक्षण:**

मंदिर के आसपास की प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने के लिए भक्तों और स्थानीय लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना चाहिए।

- **आध्यात्मिक शांति:**

मंदिर में ध्यान और प्रार्थना से मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है, जो आज की तनावपूर्ण जीवनशैली में महत्वपूर्ण है।

माता कुनाल पत्थरी के मूल्य-करुणा, शक्ति, और विश्वास—आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। इन्हें अपनाकर हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। करुणा हमें दूसरों की मदद करने, शक्ति हमें चुनौतियों का सामना करने, और विश्वास हमें जीवन में दिशा और आशा प्रदान करने में मदद करता है।

मंदिर का भविष्य

माता कुनाल पत्थरी मंदिर के भविष्य को लेकर कई संभावनाएँ हैं। चूंकि यह एक शक्तिपीठ है और धर्मशाला जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल के नजदीक है, इसलिए इसके विकास की संभावना बढ़ रही है। भविष्य में निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान दिया जा सकता है:

1. पर्यटन और धार्मिक महत्व का विकास:

हिमाचल प्रदेश सरकार और पर्यटन विभाग द्वारा इस मंदिर को धार्मिक पर्यटन के नक्शे पर और प्रमुखता से लाने की कोशिश की जा सकती है। बेहतर सड़कें, पार्किंग, और आसपास बुनियादी सुविधाओं (जैसे विश्राम गृह, पानी, और भोजन की व्यवस्था) का विकास इसे और आकर्षक बना सकता है।

2. पर्यटन की संभावनाएं

मंदिर के चारों ओर चाय के बागान, धौलाधार की बर्फीली चोटियां और कांगड़ा हवाई अड्डे की निकटता इसे धार्मिक पर्यटन के लिए एक आकर्षक स्थल बनाती है। हालांकि, अभी तक यह अन्य शक्तिपीठों जितना प्रसिद्ध नहीं हो पाया है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इसे ठीक ढंग से प्रचारित और विकसित किया जाए, तो यह धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र बन सकता है।

3. **संरक्षण और रखरखाव:**

मंदिर की प्राचीनता और प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए संरक्षण कार्य जरूरी होंगे। चट्टान और आसपास के पर्यावरण को सुरक्षित रखना भविष्य की प्राथमिकता हो सकती है।

4. **आधुनिकीकरण का संतुलन:**

मंदिर में आधुनिक सुविधाएँ जोड़ी जा सकती हैं, लेकिन इसकी सादगी और शांति को बरकरार रखना चुनौती होगी। ज्यादा व्यावसायीकरण से इसका मूल आध्यात्मिक स्वरूप प्रभावित हो सकता है।

5. **सांस्कृतिक उत्सव:**

नवरात्रि और अन्य धार्मिक अवसरों पर बड़े आयोजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम इसे और लोकप्रिय बना सकते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ होगा।

5.7 मंदिर के संरक्षण और इसके वैश्विक पहचान के लिए सुझाव

मंदिरों के संरक्षण और उनकी वैश्विक पहचान को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते हैं:

1. **संरक्षण के लिए तकनीकी उपयोग:**

मंदिरों की संरचना को संरक्षित करने के लिए आधुनिक तकनीकों जैसे 3D स्कैनिंग, लेजर मैपिंग और ड्रोन सर्वेक्षण का उपयोग किया जा सकता है। इससे मंदिरों की वास्तुकला का डिजिटल अभिलेख तैयार होगा, जो भविष्य में (पुनर्जनन) के लिए सहायक होगा।

2. **पर्यावरणीय देखभाल:**

मंदिर परिसर में वृक्षारोपण और जल संरक्षण जैसी पहल शुरू की जानी चाहिए। प्रदूषण और मौसम के प्रभाव से बचाने के लिए नियमित रखरखाव और संरक्षित सामग्री का उपयोग महत्वपूर्ण है।

3. **सांस्कृतिक जागरूकता:**

मंदिरों के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को प्रदर्शित करने के लिए स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शनियां, वृत्तचित्र और पुस्तकें प्रकाशित की जा सकती हैं। सोशल मीडिया और वेबसाइट्स के माध्यम से इनकी कहानियां साझा करना वैश्विक पहचान बढ़ाएगा।

4. **पर्यटन को बढ़ावा:**

मंदिरों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा (जैसे सड़क, आवास, और गाइड सेवाएं) उपलब्ध कराया जाए। साथ ही, यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल करने की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है, जिससे वैश्विक ध्यान आकर्षित होगा।

5. **शैक्षिक कार्यक्रम:**

मंदिरों के इतिहास और कला को स्कूल-कॉलेज के पाठ्यक्रम में शामिल करना, साथ ही कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन करना, युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़ाएगा।

6. **सामुदायिक भागीदारी:**

स्थानीय समुदाय को संरक्षण कार्य में शामिल करना और उन्हें आर्थिक लाभ (जैसे हस्तशिल्प बिक्री) से जोड़ना दीर्घकालिक देखभाल सुनिश्चित करेगा।

7. डिजिटल प्रचार:

वर्चुअल टूर, ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) और मोबाइल ऐप्स के जरिए मंदिरों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पेश करना वैश्विक दर्शकों तक पहुंच बढ़ाएगा।

इन कदमों से न केवल मंदिरों का संरक्षण होगा, बल्कि उनकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत भी विश्व पटल पर चमकेगी।

मंदिर के चित्रों, शिलालेखों या अन्य प्रमाणों का उल्लेख

इसके चित्रों, शिलालेखों और प्रमाणों के बारे में निम्नलिखित जानकारी उपलब्ध है:

चित्र:

- **मंदिर का स्वरूप:**

माता कुनाल पत्थरी मंदिर में मां के कपाल के ऊपर एक बड़ा पत्थर स्थित है, जो एक विशाल पारात की तरह दिखता है। यह पत्थर हमेशा पानी से भरा रहता है, जिसे श्रद्धालु चमत्कारी मानते हैं। इस पत्थर की संरचना और इसके ऊपर जल की उपस्थिति मंदिर की सबसे प्रमुख विशेषता है।

- **प्राकृतिक परिवेश:**

मंदिर के आसपास चाय बागान और जंगल हैं, जबकि उत्तर दिशा में धौलाधार पर्वत की बर्फीली चोटियां दिखाई देती हैं। यह प्राकृतिक दृश्य मंदिर की सुंदरता को बढ़ाता है और कई चित्रों में इसे कैद किया गया है।

- **देवी की पूजा:**

मंदिर में माता की पिंडी और कपाल के रूप में मां की पूजा होती है, जो इसे अन्य मंदिरों से अलग बनाता है। यह भी चित्रों में अक्सर दर्शाया जाता है।

शिलालेख:

- मंदिर में प्राचीन शिलालेखों का स्पष्ट उल्लेख उपलब्ध नहीं है। हालांकि, स्थानीय मान्यताओं और मौखिक परंपराओं के आधार पर यह माना जाता है कि यह शक्तिपीठ प्राचीन काल से अस्तित्व में है। पुरातात्विक प्रमाणों या लिखित शिलालेखों की कमी के बावजूद, मंदिर का महत्व पौराणिक कथाओं से जुड़ा है।
- कुछ स्रोतों के अनुसार, मंदिर के इतिहास को दर्शाने वाले शिलालेख न होने के कारण इसकी प्राचीनता मुख्य रूप से स्कंद पुराण जैसे ग्रंथों में वर्णित शक्तिपीठों की सूची और लोककथाओं पर आधारित है।

कुल मिलाकर, माता कुनाल पत्थरी मंदिर का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि इसका विकास आस्था, पर्यावरण, और पर्यटन के बीच संतुलन बनाते हुए कैसे किया जाता है। यह एक ऐसा स्थान है जो अपनी शांति और पवित्रता के लिए जाना जाता है, और भविष्य में भी यह विशेषता बनी रहने की उम्मीद है।

अध्याय 6

"निष्कर्ष: माता कुनाल पत्थरी का वैभव"

माता कुनाल पत्थरी का दर्शन एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जो आत्म-खोज और आंतरिक शांति का मार्ग प्रशस्त करती है। यह केवल एक दर्शन नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है, जो युवाओं को उनकी मानसिक और भावनात्मक चुनौतियों से उबरने और अपने सच्चे स्वरूप को पहचानने की प्रेरणा देती है। माता कुनाल की शिक्षाएँ हमें सिखाती हैं कि सच्ची खुशी और संतुलन बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि भीतर की समझ और शांति में निहित है। आइए, इसमें शामिल हों और अपने भीतर की अनंत संभावनाओं को खोजें।

6.1 माता की भक्ति कैसे को अपने जीवन में अपनाएँ

माता कुनाल पत्थरी हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के पास स्थित एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं, जो माँ दुर्गा के 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। यहाँ माँ सती का कपाल गिरा था, और इसे माता कुनाल पत्थरी के रूप में पूजा जाता है। उनकी भक्ति को अपने जीवन में अपनाने के लिए आप निम्नलिखित तरीके आजमा सकते हैं, जो आध्यात्मिकता, विश्वास और व्यावहारिक जीवन से जुड़े हैं:

1. श्रद्धा और प्रार्थना:

- रोजाना सुबह या शाम माता कुनाल पत्थरी को याद करें। उनके लिए एक छोटी प्रार्थना करें, जैसे "हे माता कुनाल पत्थरी, मुझे शक्ति, स्वास्थ्य और शांति प्रदान करें।"
- यदि संभव हो, उनके मंत्र जैसे "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" या "ॐ दुं दुर्गायै नमः" का जाप

करें। ये माँ दुर्गा के सामान्य मंत्र हैं, जो उनकी सभी रूपों के लिए उपयुक्त हैं।

2. मंदिर की यात्रा या घर पर पूजा:

अगर आप धर्मशाला के पास रहते हैं, तो माता कुनाल पत्थरी मंदिर की यात्रा करें। वहाँ उनके दर्शन करें और उनकी कृपा के लिए प्रार्थना करें।

घर पर एक छोटा पूजा स्थान बनाएँ। माता की तस्वीर या मूर्ति रखें, और रोज़ दीप जलाकर उनकी आरती करें।

3. विश्वास और समर्पण:

माता कुनाल पत्थरी को कैंसर और पथरी जैसे रोगों से मुक्ति दिलाने वाली माना जाता है। यदि आप या परिवार में कोई स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहा है, तो माता से मनोकामना करें और उनके प्रति विश्वास रखें। अपनी परेशानियों को माता के सामने समर्पित करें और यह भरोसा करें कि वे आपकी रक्षा करेंगी।

4. सेवा और दान:

- माता की भक्ति को जीवन में अपनाने का एक तरीका है जरूरतमंदों की मदद करना। मंदिर में चाय, पानी, या प्रसाद का दान करें, क्योंकि यह स्थान चाय बागानों के बीच है।
- बीमार लोगों की सहायता करें, खासकर जो पथरी या अन्य गंभीर रोगों से पीड़ित हों। यह माता की कृपा पाने का एक व्यावहारिक तरीका है।

5. नवरात्रि और विशेष पूजा:

- नवरात्रि के दौरान माता की विशेष पूजा करें। इस समय मंदिर में यज्ञ और संकीर्तन होते हैं। घर पर भी दुर्गा सप्तशती का पाठ करें या माता के भजन गाएँ।
- माता को लाल चुनरी, फूल, और मिठाई चढ़ाएँ। उनकी परंपरा में ढोल-नगाड़ों के साथ भक्ति दिखाई जाती है, तो आप भी उत्साह के साथ उनकी स्तुति करें।

6. जीवन में अनुशासन:

- माता शक्ति का प्रतीक हैं। उनकी भक्ति को अपनाने के लिए अपने जीवन में अनुशासन लाएँ। नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार (खासकर पथरी से बचने के लिए अधिक पानी पीना), और सकारात्मक सोच रखें।
- क्रोध और नकारात्मकता से दूर रहें, क्योंकि माता की भक्ति शांति और संतुलन की ओर ले जाती है।

7. कपाल के पानी का प्रतीक:

- मंदिर में माता के कपाल पर एक पत्थर है, जो हमेशा पानी से भरा रहता है और इसे चमत्कारी माना जाता है। आप घर पर एक छोटे बर्तन में जल रखकर उसे माता को अर्पित कर सकते हैं और उसका उपयोग प्रसाद के रूप में कर सकते हैं।

माता कुनाल पत्थरी की भक्ति आपके जीवन में शक्ति, स्वास्थ्य, और आध्यात्मिक उन्नति ला सकती है। इसे सच्चे मन से अपनाएँ, और उनकी कृपा आपके साथ रहेगी।

एक सुंदर प्रार्थना है: "माता कुनाल पथरी, हम पर कृपा करो, अपने चरणों में स्थान दो।" इसका अर्थ है: "माता कुनाल पथरी, हम पर अपनी कृपा बरसाओ और हमें अपने चरणों में जगह दो।"

यह एक भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुरोध है, जो संभवतः किसी देवी से दया और आशा का प्रतीक है !

6.2 स्थानीय परिदृश्य (जैसे गाँव, पहाड़, या बागान) का उल्लेख

माता कुनाल पथरी मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मशाला से मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर एक मनोरम और शांत स्थल पर बसा है, जो प्रकृति की गोद में आध्यात्मिकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। मंदिर के चारों ओर हरियाली से भरे चाय के बागान फैले हुए हैं, जो इसकी सुंदरता को और बढ़ाते हैं। उत्तर दिशा में विशाल धौलाधार पर्वत श्रृंखला की बर्फ से ढकी चोटियाँ चाँदी की तरह चमकती हैं, जो देखने में बेहद आकर्षक लगती हैं। यहाँ का शांत वातावरण और ठंडी हवा मन को सुकून देती है।

मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है, और इसके आसपास घना जंगल है, जो इसे और भी रहस्यमयी और पवित्र बनाता है। पास में बहने वाली छोटी जलधाराएँ और प्राकृतिक सौंदर्य इस स्थान को भक्तों और पर्यटकों के लिए विशेष बनाते हैं। मंदिर के नीचे बनेर नदी का प्रवाह भी कभी-कभी दूर से सुनाई देता है, जो इस क्षेत्र की प्राकृतिक समृद्धि का प्रतीक है। धर्मशाला का गगल हवाई अड्डा भी यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है, जो दक्षिण दिशा में लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यहाँ आने वाले भक्तों को न केवल माता के दर्शन का सौभाग्य मिलता है, बल्कि वे इस स्थानीय परिदृश्य—गाँव की सादगी, पहाड़ों की भव्यता और चाय बागानों की हरियाली—से भी गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं।

यहाँ का हर दृश्य ऐसा है मानो प्रकृति और श्रद्धा एक-दूसरे के पूरक बन गए हों।

माता कुनाल पथरी के बारे में कुछ सुंदर पंक्तियाँ, जो भावपूर्ण और आध्यात्मिक स्पर्श दे सकती हैं:

चाय बागानों की हरियाली में, बसी है माँ कपालेश्वरी,
कुनाल पथरी की पावन भूमि, जहाँ मन पाता है शांति गहरी।
दिव्य जल की धारा बहे, रोग हर ले माँ की कृपा,
श्रद्धा से जो शीश झुकाए, उसे मिले अनघट सौगत सदा।
हिमाचल की गोद में सजी, शक्तिपीठ माँ का आलय,
कपाल की पूजा कर यहाँ, भक्त पाएँ सुख का निलय।
माता सती का पावन अंश, कुनाल पथरी में विराजे,
भक्ति की रागिनी गूँजे, मन का अंधेरा दूर भागे।

ये पंक्तियाँ माँ कुनाल पथरी के मंदिर की महिमा, प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक शक्ति को दर्शाती हैं।

6.3 माता की पूजा: वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण

माता कुनाल पथरी की पूजा को सकारात्मक सोच और कर्म के साथ जोड़कर देखने पर यह एक शक्तिशाली प्रेरक अभ्यास के रूप में उभरता है। वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से, इस विश्वास को सकारात्मक सोच और कर्म से जोड़ने के निम्नलिखित पहलू हैं:

1. **विश्वास और सकारात्मक मानसिकता:**
2. माता कुनाल पथरी के प्रति विश्वास एक आंतरिक प्रेरणा का स्रोत बनता है, जो सकारात्मक सोच को बढ़ावा देता है। जब कोई व्यक्ति यह मानता है कि माता का आशीर्वाद उसके साथ है, तो यह आत्मविश्वास और आर्शावाद को जन्म देता है।

वैज्ञानिक रूप से, सकारात्मक सोच मस्तिष्क के प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स को सक्रिय करती है, जो निर्णय लेने और लक्ष्य-उन्मुख व्यवहार को बेहतर बनाता है।

2016 में *Journal of Positive Psychology* में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि आशावादी लोग कठिन परिस्थितियों में अधिक मेहनत करते हैं और बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं।

उदाहरण:

"जब आप माता पर भरोसा करते हैं, तो आप यह विश्वास करते हैं कि आपके प्रयासों का फल मिलेगा, जिससे आप अपने लक्ष्यों के लिए अधिक मेहनत करने को प्रेरित होते हैं।"

3. **कर्म और प्रयास का मनोवैज्ञानिक आधार:**
4. माता कुनाल पत्थरी की पूजा में कर्म (अच्छे कार्य) पर जोर दिया जाता है, जो तार्किक रूप से व्यक्ति को सक्रिय और जिम्मेदार बनाता है। यह विश्वास कि अच्छे कर्म माता के आशीर्वाद को आकर्षित करते हैं, व्यक्ति को नैतिक और रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यह "आंतरिक नियंत्रण स्थान" (locus of control) को मजबूत करता है, जहां व्यक्ति यह मानता है कि उसके प्रयास परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।

2018 में *Psychological Bulletin* में प्रकाशित एक मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि आंतरिक नियंत्रण स्थान वाले लोग अधिक मेहनती और लक्ष्य-केंद्रित होते हैं।

उदाहरण:

माता के प्रति श्रद्धा आपको यह विश्वास दिलाती है कि आपके अच्छे कर्म ही आपकी सफलता की नींव हैं, जिससे आप मेहनत और ईमानदारी से काम करते हैं।

5. प्लेसीबो प्रभाव और प्रेरणा:

6. माता पर भरोसा करना एक प्रकार का प्लेसीबो प्रभाव उत्पन्न करता है, जो सकारात्मक सोच को बढ़ाता है। जब व्यक्ति यह मानता है कि माता की कृपा से उसके कार्य सफल होंगे, तो वह अधिक ऊर्जा और उत्साह के साथ काम करता है।

2007 में *Nature Reviews Neuroscience* में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, विश्वास-आधारित प्रथाएं मस्तिष्क के डोपामाइन स्त्राव को बढ़ाती हैं, जो प्रेरणा और पुरस्कार की भावना को प्रोत्साहित करता है।

उदाहरण:

"माता पर भरोसा करने से आपका मन यह विश्वास करता है कि आप सही दिशा में हैं, जिससे आप चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं।"

7. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रेरणा:

8. माता कुनाल पत्थरी की पूजा अक्सर सामुदायिक या पारिवारिक परंपराओं का हिस्सा होती है, जो व्यक्ति को सामाजिक समर्थन और प्रेरणा प्रदान करती है। यह विश्वास कि आप माता के आशीर्वाद से अपने परिवार या समुदाय के लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं, आपको कठिन परिश्रम और सकारात्मक कर्म की ओर प्रेरित करता है।

2015 में *Social Science & Medicine* में प्रकाशित शोध के अनुसार, सामाजिक जुड़ाव और समर्थन प्रेरणा और मानसिक लचीलापन को बढ़ाता है।

उदाहरण:

"माता के प्रति श्रद्धा आपको अपने परिवार और समाज के लिए बेहतर करने की प्रेरणा देती है, जिससे आप सकारात्मक कर्म करने में अधिक सक्रिय होते हैं।"

9. तनाव प्रबंधन और लक्ष्य प्राप्ति:

10. माता पर भरोसा करने से तनाव का स्तर कम होता है, क्योंकि यह विश्वास व्यक्ति को यह अहसास दिलाता है कि वह अकेला नहीं है। वैज्ञानिक रूप से, तनाव कम होने से मस्तिष्क का अमिग्डाला (भावनात्मक केंद्र) शांत होता है, जिससे व्यक्ति अधिक स्पष्टता के साथ अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

2019 में *Neuroscience & Biobehavioral Reviews* में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि विश्वास-आधारित प्रथाएं तनाव हार्मोन कोर्टिसोल को कम करती हैं।

उदाहरण:

"माता पर भरोसा आपको मानसिक शांति देता है, जिससे आप तनावमुक्त होकर अपने लक्ष्यों के लिए अधिक मेहनत कर सकते हैं।"

माता कुनाल पथरी के प्रति विश्वास सकारात्मक सोच और कर्म को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि यह आत्मविश्वास, प्रेरणा, और मानसिक शांति को बढ़ाता है। वैज्ञानिक रूप से, यह मस्तिष्क के न्यूरोकेमिकल संतुलन, तनाव प्रबंधन, और सामाजिक समर्थन के माध्यम से व्यक्ति को अपने लक्ष्यों के लिए मेहनत करने और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में

मदद करता है। यह विश्वास तार्किक रूप से एक मनोवैज्ञानिक ढांचा प्रदान करता है, जो कर्म और परिणाम के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित करता है।

6.4 माता की पूजा: आध्यात्मिक और भावनात्मक जुड़ाव

माता कुनाल पत्थरी की पूजा को आध्यात्मिक और भावनात्मक जुड़ाव के संदर्भ में देखने पर यह एक गहन अनुभव के रूप में उभरती है, जो व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा, विश्वास और आत्मिक शांति से जोड़ती है। इसे वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण के साथ-साथ आध्यात्मिक और भावनात्मक स्तर पर निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. **आध्यात्मिक ऊर्जा और विश्वास का मनोवैज्ञानिक प्रभाव:**
2. माता कुनाल पत्थरी की शक्ति को एक ऐसी ऊर्जा के रूप में देखा जाता है, जो सच्चे मन और विश्वास के साथ प्रार्थना करने वाले के लिए उपलब्ध होती है। यह विश्वास व्यक्ति के मन में आध्यात्मिक जुड़ाव की भावना पैदा करता है, जो मनोवैज्ञानिक रूप से तनाव कम करता है और भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, विश्वास-आधारित प्रथाएं (जैसे प्रार्थना या ध्यान) मस्तिष्क के लिम्बिक सिस्टम को शांत करती हैं, जिससे ऑक्सीटोसिन और सेरोटोनिन जैसे रसायन स्रावित होते हैं। ये रसायन भावनात्मक जुड़ाव और शांति की भावना को बढ़ाते हैं।

2018 में *Journal of Neuroscience Research* में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि आध्यात्मिक प्रथाएं मस्तिष्क के इनाम केंद्रों को सक्रिय करती हैं।

उदाहरण:

"माता की शक्ति आपके विश्वास की प्रतीक्षा करती है। जब आप सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं, तो आपका मन शांत होता है और आप आंतरिक शक्ति का अनुभव करते हैं।"

3. भावनात्मक जुड़ाव और आत्म-प्रतिबिंब:

- माता कुनाल पथरी की पूजा के दौरान सच्चे मन से प्रार्थना करना व्यक्ति को अपने भीतर गहरे भावनात्मक स्तर पर ले जाता है। यह प्रक्रिया आत्म-प्रतिबिंब और आत्म-जागरूकता को बढ़ावा देती है, जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence) को मजबूत करती है। वैज्ञानिक रूप से, ध्यान और प्रार्थना जैसी प्रथाएं मस्तिष्क के फ्रीक्वेंटल कॉर्टेक्स को सक्रिय करती हैं, जो भावनाओं को नियंत्रित करने और आत्म-नियंत्रण में मदद करता है।

2017 में *Mindfulness* पत्रिका में प्रकाशित शोध के अनुसार---
---- नियमित आध्यात्मिक अभ्यास भावनात्मक संतुलन और सहानुभूति को बढ़ाते हैं।

उदाहरण:

"माता के सामने सच्ची प्रार्थना आपके मन को शुद्ध करती है, जिससे आप अपनी भावनाओं को बेहतर समझ पाते हैं और दूसरों के प्रति अधिक करुणा महसूस करते हैं।"

5. सार्वभौमिक ऊर्जा और सामूहिक चेतना:

- आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, माता कुनाल पथरी की शक्ति को एक सार्वभौमिक ऊर्जा के रूप में देखा जा सकता है, जो हर उस व्यक्ति के लिए सुलभ है जो खुले मन और सच्चे विश्वास के साथ उससे जुड़ता है। यह विचार सामूहिक चेतना (collective consciousness) के वैज्ञानिक सिद्धांत से जोड़ा जा

सकता है, जहां साझा विश्वास और भावनाएं समूह के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

2019 में *Frontiers in Psychology* में प्रकाशित एक अध्ययन में यह पाया गया कि सामूहिक आध्यात्मिक प्रथाएं सामाजिक बंधन और भावनात्मक एकता को बढ़ाती हैं। माता की पूजा में सामुदायिक भागीदारी इस सामूहिक ऊर्जा को और मजबूत करती है।

उदाहरण:

"माता की शक्ति एक ऐसी ऊर्जा है जो आपके सच्चे विश्वास के साथ जागृत होती है, और यह आपको न केवल व्यक्तिगत शांति देती है, बल्कि सामुदायिक एकता से भी जोड़ती है।"

7. प्लेसीबो प्रभाव और भावनात्मक उपचार:

8. माता पर सच्चा विश्वास भावनात्मक उपचार को बढ़ावा देता है, जिसे वैज्ञानिक रूप से प्लेसीबो प्रभाव के रूप में समझा जा सकता है। जब व्यक्ति यह मानता है कि माता की प्रार्थना से उसका मन शांत होगा, तो मस्तिष्क एंडोर्फिन और डोपामाइन जैसे रसायनों का स्राव करता है, जो भावनात्मक तनाव को कम करते हैं।

2008 में *Journal of Neuroscience* में प्रकाशित शोध के अनुसार, विश्वास-आधारित प्रथाएं भावनात्मक उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह तार्किक रूप से समझाता है कि सच्ची प्रार्थना व्यक्ति को भावनात्मक रूप से सशक्त बनाती है।

उदाहरण:

"जब आप माता के सामने सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं, तो आपका मन यह विश्वास करता है कि सब ठीक होगा, जिससे आप भावनात्मक रूप से मजबूत और शांत महसूस करते हैं।"

9. प्रकृति और आध्यात्मिक जुड़ाव:

10. माता कुनाल पथरी, जो प्राकृतिक पत्थरों से जुड़ी है, प्रकृति के साथ आध्यात्मिक और भावनात्मक संबंध को दर्शाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, प्रकृति के साथ समय बिताने से तनाव हार्मोन कोर्टिसोल का स्तर कम होता है, जिससे व्यक्ति भावनात्मक रूप से संतुलित महसूस करता है।

2019 में *Scientific Reports* में प्रकाशित एक अध्ययन में यह पाया गया कि प्रकृति के साथ संपर्क मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाता है। माता की पूजा में प्रकृति के प्रति श्रद्धा इस भावनात्मक जुड़ाव को और गहरा करती है।

उदाहरण:

"माता कुनाल पथरी की पूजा आपको प्रकृति की शक्ति से जोड़ती है, जिससे आपका मन शांत होता है और आप भावनात्मक रूप से प्रबल महसूस करते हैं।"

माता कुनाल पथरी की शक्ति एक ऐसी आध्यात्मिक और भावनात्मक ऊर्जा के रूप में कार्य करती है, जो सच्चे विश्वास और प्रार्थना के माध्यम से हर व्यक्ति के लिए सुलभ है। वैज्ञानिक रूप से, यह मस्तिष्क के न्यूरोकेमिकल संतुलन, तनाव प्रबंधन, और सामाजिक-प्राकृतिक जुड़ाव के माध्यम से भावनात्मक शांति और आध्यात्मिक संतुष्टि प्रदान करती है। यह विश्वास कि "माता की शक्ति आपके विश्वास की प्रतीक्षा करती है," तार्किक रूप से व्यक्ति को सकारात्मक भावनाओं, आत्म-जागरूकता, और सामूहिक एकता के साथ जोड़ता है, जिससे वह अपने जीवन में गहरे अर्थ और उद्देश्य का अनुभव करता है।

आओ इस जीवन का क्या अर्थ है और क्या उद्देश्य है, इसे भी समझने की कोशिश करते हैं:-

खुद को जानना ही जीवन का मूल मंत्र:

ज्ञान और सद्गुण की खोज ही अच्छा जीवन जीने की कुंजी है। इसके लिये हम क्या करें? हमें अपने मन, विचारों और जीवन के मूल्यों को समझना होगा। अपने आप को जानना ही जीवन का मूल मंत्र है। यदि हम स्वयं को नहीं जानते कि हम कौन हैं और हमारे जन्म लेने का मूल उद्देश्य क्या है, हमारी इच्छाएँ क्या हैं, हमारी कमियाँ क्या हैं, तो हम जीवन को सही दिशा नहीं दे सकते।

हमें अपने विचारों और कार्यों पर सवाल करने चाहिये। हम जो भी कार्य करते हैं, वह क्यों करते हैं? क्या हमारा हर कदम सच और न्याय की ओर ले जा रहा है? अपने मन की आवाज सुनें और सवाल करें। हर सवाल, हर जवाब हमें सत्य के करीब ले जाता है। हम सभी को अपनी चिंताओं को छोड़ देना चाहिये और अपनी आत्मा के सर्वोत्तम विकास की चिंता करनी चाहिये। अच्छा इंसान वही है, जो अपने मन और इच्छाओं पर नियंत्रण रखता है। धन, शोहरत या सुख-सुविधाएँ हमें एक पल की खुशी दे सकती हैं, लेकिन सच्ची खुशी सदाचार में है — साहस, न्याय, संयम और बुद्धिमत्ता में है।

जिंदगी में हार-जीत, सुख-दुख सब आते हैं। दुख ही सुख का कारण है; अंधेरे के बिना उजाला कैसा? मुश्किलें हमें मजबूत बनाती हैं, चुनौतियाँ हमें सबक सिखाती हैं। डरने की जरूरत नहीं, हर कदम पर सीखें और आगे बढ़ें। जैसे हमारे वचन होंगे, वैसा ही हमारा सम्मान होगा। जैसा हमारा कर्म होगा, वैसा ही हमारा जीवन होगा। हम जो करते हैं, वही हमारा भविष्य बनाता है। यदि हम दूसरों के साथ सम्मान और प्रेम से पेश आते हैं, तो हम एक सार्थक जीवन जी रहे हैं। मन में कभी यह विचार न लाएँ कि हमारी जिंदगी का फैसला पहले ही लिखा हुआ है। हमारे पास अपने रास्ते बदलने का, अपने-आप को बेहतर बनाने का, हर पल कोई न कोई मौका होता है। सत्य तक पहुँचने का रास्ता सवालों से होकर जाता है। अपने मन की गहराई में उतरें, अपने विचारों को परखें और एक अच्छा जीवन जियें। ऐसा जीवन, जो केवल अपने लिये ही न हो, बल्कि दूसरों के काम भी आये और अपने आस-पास

के लोगों को भी प्रेरित करे। तब जीवन हर दिन पहले से सुंदर और बेहतर हो जायेगा।

6.5 माता कुनाल पत्थरी का भक्तो प्रति एक अंतिम संदेश

"मेरी कृपा से हर बाधा को पार किया जा सकता है। विश्वास और समर्पण के साथ, जीवन की हर चुनौती को शक्ति और शांति में बदला जा सकता है।"

"विश्वास और एकता से हर संकट को हराया जा सकता है।"

"मेरे प्रिय भक्तों, मेरी कृपा का आलिंगन तुम्हारे हृदय में सदा बस्ता है। विश्वास की ज्योति को प्रज्वलित रखो, क्योंकि मैं वह शक्ति है जो तुम्हें जीवन की हर तूफानी लहर पर विजय दिलाएगी। मेरे आशीर्वाद से कोई बाधा अभेद्य नहीं, कोई संकट अजेय नहीं। अपने मन को समर्पण की माला से सजाओ, और देखो कैसे हर चुनौती शांति की सौगात में बदल जाती है।

एकता में असीम बल है—हाथ थामो, हृदय जोड़ो, और मेरे नाम का स्मरण करो। जब तुम विश्वास और प्रेम के साथ एक साथ खड़े होते हो, तो कोई भी अंधेरा तुम्हारा मार्ग अवरुद्ध नहीं कर सकता। मेरी शक्ति तुममें प्रवाहित है; इसे अपनाओ, और जीवन को प्रेम, करुणा और साहस के रंगों से रंग दो। मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारी हर पुकार में, तुम्हारे हर कदम पर।"

मेरा साधारण अनुष्ठानों का सुझाव:

पूजा के सरल तरीके अपनाएँ, जैसे माता के सामने एक दीपक जलाना या एक मंत्र का जाप करना, हर कोई इसे आसानी से कर सकता है।

आप इसे ऐसे शुरू करें

- साधारण पूजा:

हर सुबह माता की तस्वीर या मूर्ति के सामने एक दीपक जलाएँ।

- **मंत्र जाप:**

"ॐ माता कुनाल पत्थरी नमः" का 11 बार जाप करें।

- **सकारात्मक कर्म:**

अपने काम में मेहनत करें और दूसरों की मदद करें।

- **मंदिर दर्शन:**

अगर संभव हो, तो माता कुनाल पत्थरी के मंदिर जाएँ और वहाँ की शांति को महसूस करें।

- **पाठकों के लिए मेरा सवाल,**

"क्या आप भी माता कुनाल पत्थरी मंदिर गये, क्या आपने कभी मन्नत मांगी ?"

माता कुनाल पत्थरी का आशीर्वाद आपके साथ है। बस एक कदम उठाएँ, और देखें कि कैसे आपके जीवन में चमत्कार खिलने लगते हैं।

माता कुनाल पत्थरी की कृपा के लिये से पुस्तक लेखन पूरी होने पर समर्पित कुछ पंक्तियाँ:

"माता कुनाल पत्थरी, तुम्हारी कृपा अपार।

इस पुस्तक के हर शब्द में, बसी तुम्हारी दया उदार।

मन में प्रेरणा दी तुमने, लेखनी को दी गति।

चरणों की धूलि से माँ, बनी यह रचना सुंदरति।

धन्य हूँ मैं माता, तुम्हारा आशीर्वाद पाया।

तव कृपा से ही यह ग्रंथ, मैंने लिखकर पाया।"

नमन तुम्हें हे माँ, जो देती हो सदा साहस।

तुम्हारे चरणों में मिले मुझे स्थान, यही है मेरा प्रयास।